राष्ट्रीय संस्करण

जॉनसन ने कहा, अभी और कठिन समय के लिए तैयार रहें

>> 11

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 292

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, सोमवार, 30 मार्च 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 14

कोरोना मीटर

(स्रोत : वर्ल्डोमीटर्स डॉट इंफो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय)

	विश्व	अमेरिका	इटली	भारत	(23 मार्च)	दिल्ली
कुल केस	6,84,641	1,24,356	92,472	1024	380	72
मौतें	32,180	2,236	10,023	27	7	2
स्वस्थ हुए	1,46,400	3,238	12,384	96	24	5

भारत के प्रमुख राज्य

राज्य	केस	मौतें
महाराष्ट्र	186	6
केरल	182	1
कर्नाटक	76	3
तेलंगाना	66	1
गुजरात	58	5
तमिलनाडु	49	1
राजस्थान	55	0
उत्तर प्रदेश	65	0
अन्य	238	8

समय : रात 11 : 45 बजे तक

अन्य प्रमुख देश

देश	केस	मौतें
चीन	81,439	3,300
स्पेन	78,797	6,528
जर्मनी	58,247	455
ईरान	38,309	2,640

निश्चिंत रहें, पूरी तरह सुरक्षित है आपका अखबार

आप सब इससे अवगत ही होंगे कि प्रख्यात डॉक्टर, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ आदि बार-बार यह कह रहे हैं कि अखबारों से कोरोना वायरस के संक्रमण फैलने का कोई खतरा नहीं है। आप पूरी तरह निश्चिंत होने के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करके खुद देख सकते हैं कि आपका प्रिय दैनिक जागरण समाचार पत्र कितने सुरक्षित तरीके से छपकर आपके हाथों में पहुंचता है। सतर्कता और सजगता की यह प्रक्रिया हम हर दिन-हर क्षण अपनाते हैं, क्योंकि आपकी तरह हम भी कोरोना को परास्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रतिबद्धता को और प्रबल करने के लिए यह आवश्यक है कि आप समाचारों के सबसे विश्वसनीय स्रोत से जुड़े रहें। आपकी तरह हमें भी यह भरोसा है कि हम यह जंग जीतेंगे।

लॉकडाउन ही था एकमात्र रास्ता, कष्ट के लिए क्षमा करें : मोदी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना संक्रमण की आशंकाओं के बीच हजारों की संख्या में पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने गांव पहुंचने को बेकरार प्रवासी मजदूरों, कामगारों, छात्रों एवं अन्य लोगों की परेशानियों को समझते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कष्ट के लिए उनसे माफी मांगी है। साथ ही आगाह भी किया कि वैश्विक संकट बनकर उभरा कोरोना जिस तरह फैल रहा है उससे लगता है कि यह मानवजाति को समाप्त करने की जिद कर बैठा है। ऐसे में इससे लड़ाई के लिए लॉकडाउन ही एकमात्र रास्ता था और सरकार को यह फैसला करना पड़ा। इसका पालन करना दूसरों की मदद से पहले खुद की मदद है।

रविवार को प्रधानमंत्री ने मन की बात में फिर से कोरोना को लेकर ही लोगों को सचेत किया। उन्होंने इससे लड़ रहे डॉक्टरों, कोरोना के संक्रमण से जूझकर ठीक हो चुके कुछ लोगों से भी बात की। मोदी ने मन की बात की शुरुआत उस समस्या से की जो पिछले दो-तीन दिनों में चिंता का सबब बन गई है। दरअसल, लॉकडाउन के एलान के बाद से दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरों से बड़ी संख्या में लोग अपने गांव-घर की ओर रवाना होने लगे हैं। लॉकडाउन के कारण परिवहन व्यवस्था ठप है तो लोग पैदल ही हुजूम बनाकर चल पड़े हैं। इससे कोरोना के प्रसार का खतरा भी बढ़ गया है। इनमें से कई लोग जहां काम बंद होने के कारण आर्थिक दिक्कतों के चलते शहर छोड़ रहे हैं, तो बड़ी संख्या में ऐसे छात्र व प्रवासी भी हैं, जो इस आसन्न संकट में किसी भी हाल में अपने गांव-घर पहुंच जाना चाहते हैं। वैसे भी यह साल का वह दौर है जब बड़ी संख्या में अन्य राज्यों में रह रहे उत्तर प्रदेश, बिहार के लोग अपने घरों की ओर जाते हैं। प्रधानमंत्री ने दो दिन पहले उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्रियों से बात की थी। बताते हैं कि उन्होंने शनिवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री से भी बात की और गरीबों की समस्या को दूर करने की बात कही। रविवार को मोदी ने खुद भी माफी मांगी और कहा, 'आपको लगता होगा कि यह कैसा प्रधानमंत्री है जिसने हमें मुसीबत में डाल दिया। लेकिन मेरी आत्मा कहती है कि आप मुझे क्षमा कर देंगे। किसी को भी पूर्ण लॉकडाउन जैसे कदम उठाने का मन नहीं करता है लेकिन दुनिया की हालत देखने के बाद लगता है कि यही एक रास्ता बचा था।'

समय का सदुपयोग करें पेज>>4

पीएम की बड़ी बातें

- घर में बंद रहकर दूसरों से पहले खुद की मदद कर रहे हैं
- पूरी मानवजाति को समाप्त करने की जिद किए बैठा है कोरोना वायरस, इससे लड़ने के लिए सबको एकजुट होना ही होगा
- जानता हूं कि तकलीफ हो रही है, लेकिन 130 करोड़ की आबादी वाले देश के सामने कोरोना से लड़ने का दूसरा रास्ता नहीं है
- दुनिया में कई लोगों को लग रहा था कि उन्हें खतरा नहीं है, लेकिन आज उन्हें अपनी भूल की कीमत चुकानी पड़ रही है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का फाइल फोटो। प्रेट्र

संदिग्धों से बुरे बर्ताव से चिंतित

स्वास्थ्य को अहम बताते हुए मोदी ने होम क्वारंटाइन का निर्देश पाए संदिग्ध लोगों से बुरा बर्ताव किए जाने पर चिंता भी जताई। उन्होंने कहा, सभी संदिग्ध संक्रमित नहीं होते हैं। वैसे भी इस कठिन घड़ी में शारीरिक रूप से दूरी बनानी है, मानवीय व भावनात्मक रूप से तो हमें एक-दूसरे के नजदीक रहना है।

यह आपके लिए है

मोदी ने कहा कि कुछ लोग समझ रहे हैं कि वह नियमों का पालन कर दूसरों का भला कर रहे हैं। ऐसा नहीं है। यह लॉकडाउन आपके अपने भले के लिए है। आपको अपनी और परिवार ही हिफाजत करनी चाहिए। धैर्य रखिए। जो लोग कानून तोड़ रहे हैं, उन्हें परिस्थिति की गंभीरता का अंदाजा नहीं है। दुनिया के और हिस्सों में भी कुछ लोग ऐसा ही सोच रहे थे और आज उन्हें कीमत चुकानी पड़ रही है। ध्यान रखिए कि स्वास्थ्य ही हर सुख का मूल है।

हेल्पलाइन नंबर

कोरोना से जुड़ी सही जानकारी देने के लिए भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वाट्सएप हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इन नंबरों को मोबाइल में सुरक्षित करके कोई भी प्रामाणिक सूचना पाई जा सकती है। कृपया नंबर दर्ज करके वाट्सएप पर सिर्फ नमस्कार का संदेश भेजें। तुरंत एक मेन्यू आएगा, जिसके अनुसार वांछित जानकारी ली जा सकती है।

who:+41 798931892

mygov : +919013151515

कोरोना को हराना है

कोरोना से युद्ध में पीएम राहत कोष में हर कोई कर रहा योगदान • पेज 3

प्रदेश में जो भी आ गए, उन सबकी जिम्मेदारी हमारी : योगी • पेज 5

सात्विक व अहिंसक जीवन पद्धति से ऊर्जा ले रहे बाबा रामदेव • पेज 7

सरोकार

हौसले से जीत रहे कोरोना के खिलाफ जंग

भोपाल : कोरोना से लड़ने व जीतने के लिए इलाज के साथ हौसला भी जरूरी है। यहां एम्स में आइसोलेशन में रह रहे मध्य प्रदेश के भोपाल निवासी तीन मरीज इसी हौसले के बूते कोरोना से जंग जीतने की राह पर हैं। (पेज-7)

जागरण विशेष

संकट में पड़ा जीवन तो खिलने लगे मुरझाए रिश्ते

चंदौसी : कोरोना से सामाजिक दूरी जरूर बढ़ी है, लेकिन दिलों की दूरियां घट रही हैं। बरसों से जिनसे बात नहीं हुई, उन दोस्तों, रिश्तेदारों की कॉल आ रही है। नाराज रिश्तेदारों को कोरोना के खतरे ने फिर से जोड़ दिया। (पेज-13)

जो जहां हैं वहीं होंगे क्वारंटाइन

बड़ा कदम ▶ घर लौट रहे लोगों को देखते हुए गृह मंत्रालय ने जारी किए निर्देश

रास्ते में फंसे लोगों को आस-पास के शेल्टर में रखा जाए

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन के बीच बड़ी संख्या में प्रवासी लोगों के अपने घरों को लौटने और उसके कारण कोरोना वायरस के प्रसार की बढ़ती आशंका को देखते हुए केंद्र सरकार ने राज्यों के लिए स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं। राज्यों से कहा गया है कि जो जहां है उन्हें वहीं के आस-पास के शेल्टर में अगले 14 दिन रखा जाए। जरूरत के हिसाब से उन्हें हर मदद दी जाए। इसके अलावा प्रवासी मजदूरों, कामगारों व कर्मचारियों को उनके स्थान पर ही रोकने के लिए उद्यमियों और व्यापारियों को कर्मचारियों को पूरा वेतन देने और मकान मालिकों को ऐसे लोगों से एक महीने का किराया नहीं लेने का निर्देश दिया गया है। इन निर्देशों का उल्लंघन करने पर सख्त कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है। सरकार के निर्देशों को देखते हुए पुलिस ने सतर्कता बढ़ा दी है और राज्यों व जिलों की सीमाएं सील कर दी गई हैं।

पिछले दो-तीन दिनों में दिल्ली से बड़ी संख्या में लोग अपने घरों को लौट रहे हैं। इनमें दिहाड़ी मजदूर, कामगार, कर्मचारी, छात्र से लेकर ऐसे आम परिवार शामिल हैं जिन्हें अपने घर जाना था, लेकिन रेल और बस सेवा बंद होने के चलते नहीं जा सके थे। इन लोगों में बड़ी संख्या में ऐसे लोग भी हैं जो आमतौर पर हर साल फसलों की कटाई के समय अपने घरों को लौटते हैं। इन लोगों की भीड़ तब और बढ़ गई थी जब उन्हें लगा कि मुफ्त बस सेवा के जरिए वह घर तक पहुंच सकते हैं, लेकिन केंद्र सरकार अब इस हालात से सख्ती से निपटना चाहती है। सरकार ने साफ कर दिया है कि किसी को भी फिलहाल उनके गांव या घर तक नहीं पहुंचने दिया जाएगा। जो लोग अपने घरों तक पहुंच भी गए हैं, उन्हें भी सघन निगरानी में रखा जाएगा। जो लोग रास्ते में हैं उन्हें आस-पास के शेल्टरों में कम से कम दो हफ्ते तक क्वारंटाइन में रखा जाएगा। वायरस के प्रसार को रोकने के लिए जरूरी चेकअप भी किए जाएंगे।

दरअसल, जिस तरह से लोगों के लौटने का सिलसिला शुरू हुआ था, उससे कोरोना वायरस के गांव-गांव तक पहुंचने की आशंका बढ़ गई थी। अगर कोरोना ने गांव तक पांव पसार लिए तो फिर स्थिति संभालना बहुत मुश्किल हो जाएगा। लिहाजा सरकार ने सभी राज्यों से लॉकडाउन को सख्ती से लागू करने को कहा है। दिल्ली में इसका असर भी दिखा है। दिल्ली पुलिस उत्तर प्रदेश की सीमा की ओर से जा रही सड़कों पर चुस्त हो गई है।

केंद्र ने भविष्य की तैयारियां भी शुरू कर दी हैं। आपदा प्रबंधन में जुटे गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों को डीएम, डिप्टी कमिश्नर, एसपी को जिम्मेदारी सौंपने का निर्देश दिया है। अफसरों से यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि घरों में बंद गरीबों, प्रवासी मजदूरों, कामगारों व छोटी कंपनियों में काम करने वाले कर्मचारियों को खाने की कमी न हो। अगर किसी के पास रहने की जगह नहीं है तो उसका इंतजाम किया जाए। अगर किसी कर्मचारी से वेतन आदि न मिलने की शिकायत आती है तो उसका भी ध्यान रखने का निर्देश दिया गया है। बता दें कि प्रधानमंत्री ने देश के नाम अपने पहले संबोधन में ही उद्योग-व्यापार चला रहे लोगों से आग्रह किया था कि मानवता का ध्यान रखते हुए वे कर्मचारियों का वेतन न काटें, लेकिन वेतन काटे जाने की शिकायतें आ रही हैं और लोगों के घर लौटने का यह भी एक प्रमुख कारण है।

- उद्यमी कर्मचारी का वेतन न काटें, मकान मालिक एक महीने का किराया न मांगें
- निर्देशों का उल्लंघन करने पर सख्त कानूनी कार्रवाई की चेतावनी
- लॉकडाउन के उल्लंघन पर डीएम और एसपी की सीधी जवाबदेही

लॉकडाउन को लेकर सरकार की सख्ती के बावजूद रविवार को भी लोगों के जाने का सिलसिला जारी रहा। नई दिल्ली में जरूरी सामान लेकर अपने गांव जाने के लिए निकली महिलाएं। एएनआइ

अमित शाह खुद कर रहे सभी स्थितियों की समीक्षा

गृहमंत्री अमित शाह जहां खुद सभी स्थिति की समीक्षा कर रहे हैं, वहीं कैबिनेट सचिव और गृह मंत्रालय सभी राज्यों के मुख्य सचिव और डीजीपी से लगातार संपर्क में है। लॉकडाउन के उल्लंघन पर डीएम और एसपी को सीधे तौर पर जिम्मेवार बनाया गया है। लोगों को मदद पहुंचाने के लिए राज्यों को राज्य आपदा राहत कोष (एसडीआरएफ) फंड के उपयोग की अनुमति भी दे दी गई है।

केंद्रीय विद्यालय 30 अप्रैल के बाद लेंगे पहली तिमाही की फीस

नई दिल्ली : कोरोना के चलते देश भर में 21 दिनों के लंबे लॉकडाउन को देखते हुए केंद्रीय विद्यालय संगठन ने नए शैक्षणिक सत्र की पहली तिमाही की फीस जमा करने की तारीख बढ़ा दी है। अब यह 30 अप्रैल के बाद जमा होगी। इस पर अंतिम निर्णय 30 अप्रैल को स्थिति को देखने के बाद किया जाएगा। जरूरत हुई तो तिथि और आगे बढ़ सकती है। (पेज-3)

सब पहले जैसा करने के लिए 10 कमेटियों का गठन

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना से लड़ने की दिशा में सरकार कोई कसर छोड़ने को तैयार नहीं है। अब सरकार ने लॉकडाउन के आगे की स्थिति से निपटने की दिशा में भी सोचना शुरू कर दिया है। इस दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए रविवार को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने 10 अलग-अलग कमेटियों का गठन किया। ये कमेटियां लॉकडाउन से विभिन्न सेक्टर पर पड़ने वाले असर का आकलन करेंगी और सब कुछ जल्द से जल्द सामान्य करने के लिए जरूरी कदमों का सुझाव देंगी। सूत्रों के मुताबिक, सभी कमेटियां पीएम के प्रधान सचिव पीके मिश्रा की निगरानी में काम करेंगी। इनमें से 'इकोनॉमी एंड वेलफेयर' कमेटी आर्थिक मामलों के सचिव अतनु चक्रवर्ती की अध्यक्षता में गठित की गई है, जो कोरोना वायरस और लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था के औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों सेग्मेंट के सामने आई मुश्किलों पर विचार करेगी। कमेटी जल्द से जल्द अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए राहत के विभिन्न कदमों का सुझाव देगी। लॉकडाउन के कारण सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएं कमेटी की प्राथमिकताओं में रहेंगी। नीति आयोग के सदस्य वीके पॉल और पर्यावरण सचिव सीके मिश्रा की अगुआई में भी दो कमेटियों का गठन किया गया है। ये कमेटियां मेडिकल इमरजेंसी, दवाओं व मेडिकल उपकरणों की निर्बाध आपूर्ति और अस्पतालों की उपलब्धता पर काम करेंगी। एक अन्य कमेटी कोरोना के कारण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय पर बढ़े दबाव को कम करेगी और अन्य जरूरी संभावनाओं पर विचार करेगी। इसी तरह सभी कमेटियों को अलग-अलग जिम्मेदारी दी गई है। हर कमेटी में छह सदस्य होंगे, जिनमें पीएमओ एवं कैबिनेट सचिवालय से एक अधिकारी होंगे, इससे सुझावों एवं उनके क्रियान्वयन में देरी नहीं होगी। सूत्रों के मुताबिक, विभिन्न विभागों के करीब 20 सचिव एवं 40 अन्य अधिकारी पहले से ही विभिन्न मुद्दों पर काम शुरू कर चुके हैं। नई गठित सभी कमेटियों को अपने संबंधित सेक्टर को लेकर हफ्तेभर में सुझाव देने को कहा गया है।

लॉकडाउन के दौरान कोताही बरतने पर चार अफसरों पर कार्रवाई

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए लागू किए गए लॉकडाउन के दौरान ड्यूटी निभाने में विफल रहे दिल्ली सरकार के चार अधिकारियों के खिलाफ केंद्र सरकार ने कड़ा कदम उठाया है। गृह मंत्रालय ने रविवार को अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए दो अधिकारियों को निलंबित कर दिया जबकि दो को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। निलंबित किए जाने वालों में अतिरिक्त मुख्य सचिव (परिवहन) रेनू शर्मा और प्रधान सचिव (वित्त) और मंडलायुक्त राजीव वर्मा शामिल हैं। आरोप हैं कि ये अधिकारी एनसीआर क्षेत्र में अपना काम सही ढंग से करने में विफल रहे।

गृह मंत्रालय की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि कोरोना वायरस पर नियंत्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों को ठीक से लागू कराने में विफल रहने पर इन अफसरों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई है। ये अधिकारी कोविद-19 के बाबत आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के तहत गठित राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के अध्यक्ष द्वारा जारी निर्देशों का कड़ाई से पालन कराने के लिए जिम्मेदार थे। आरोप है कि ये अधिकारी लॉकडाउन प्रतिबंध के दौरान सार्वजनिक स्वास्थ्य व सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रहे हैं। इसी के साथ अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह और भूमि भवन) सत्य गोपाल और सीलमपुर के एसडीएम अजय अरोड़ा को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

अखबारों की सप्लाई चेन के सभी सामान की ढुलाई पर छूट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- प्रिंट मीडिया वितरण से जुड़ीं सभी चेन यानी इंक, प्लेट्स, न्यूजप्रिंट को अनुमति
- लॉकडाउन से बाधित वस्तुओं की ढुलाई पर रोक हटी, कर्मयोगी तक को छूट

लॉकडाउन के कारण बाधित वस्तुओं की ढुलाई पर अब रोक हट गई है। अब तक सिर्फ आवश्यक वस्तुओं की ढुलाई को अनुमति दी गई थी। सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को लिए जारी किए गए पत्र में केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने कहा कि प्रिंट मीडिया वितरण व प्रसारण से जुड़े सभी चेन इसमें आते हैं। यानी इंक, प्लेट्स, न्यूजप्रिंट से लेकर कर्मयोगी तक इसकी श्रेणी में आएंगे।

पिछले दिनों में यूं तो कई आवश्यक वस्तुओं की ढुलाई का निर्देश था। प्रिंट मीडिया भी आवश्यक सेवा मे शामिल है लेकिन इससे जुड़ी कई सामग्रियों की ढुलाई में मुश्किलें आ रही थी। यहां तक कि हाकर्स को अनुमति मिलने में परेशानी होने के कारण वितरण में मुश्किलें थी। जबकि सरकार के साथ विशेषज्ञों की ओर से बार-बार कहा जा रहा है कि अखबार सुरक्षित हैं। इससे संक्रमण का खतरा नहीं है। बहरहाल, रविवार को मुख्य सचिवों को जारी पत्र में गृह सचिव ने साफ-साफ कहा कि प्रिंट मीडिया के सप्लाई चेन में जुड़ी सभी चीजों की ढुलाई पर कोई रोक नहीं है। एक सवाल के जवाब में सूत्रों का कहना है कि चूंकि कर्मयोगी प्रिंट मीडिया की वितरण की चेन में शामिल हैं अतः उन्हें भी अनुमति मिलेगी। ध्यान रहे कि दिल्ली के पुलिस कमिश्नर ने एक दिन पहले ही इस आशय का निर्देश जारी किया है।

पत्र में यह भी कहा गया कि किराना में हैंड वाश, साबुन, ओरल केयर, सैनिटरी पैड्स, बॉडी वाश, शैंपू, डिटरजेंट, मिल्कफूड व उससे जुड़ी पैकेजिंग सामग्री शामिल हैं। रेड क्रास सोसायटी को भी इस सूची में शामिल किया गया है। माना जा रहा है कि सभी सामग्री की ढुलाई पर छूट के बावजूद प्रिंट मीडिया समेत दूसरी चीजों पर इसलिए विवरण दिया गया है कि ताकि जरूरत होने पर अगर फिर से रोक लगी तो ये चीजें आवश्यक वस्तुओं की श्रेणी में आ जाएंगी।

नया संकट

महामारी के बीच परदेस में फंसे लोग अपने घर पहुंचकर होना चाह रहे निश्चिंत, इस स्थिति में केंद्र और राज्य सरकारों के लिए सभी को संभालना बड़ी चुनौती है

अपनी फिक्र, घर की चिंता और सड़कों पर जिंदगी

जेएनएन, नई दिल्ली

- लाखों की संख्या में सड़क पर उतर आई भीड़ से लॉकडाउन का लक्ष्य भी मुश्किल में
- सरकारों के लिए लोगों को संभालना और जहां हैं वहीं रोक कर रखना बड़ी चुनौती

सड़कों और हाईवे पर लोगों की कतारें सरकारों को परेशान कर रही हैं। कोविड-19 को थामने के उद्देश्य से पूरे देश में 14 अप्रैल तक लॉकडाउन के एलान के बाद पिछले दो दिनों से देश के अलग-अलग हिस्सों में एक नया संकट उभरा है। जत्थों में लोग अपने घरों के लिए निकल पड़े हैं - कुछ परिस्थितिजन्य हालात के कारण, तो कुछ अपने शहर और गांवों तक पहुंचकर निश्चिंत होना चाहते हैं। इस स्थिति में सरकारों के लिए इन सभी को संभालना और जहां हैं, वहीं रोक कर रखना भी बड़ी चुनौती है।

इस घटनाक्रम को मजदूरों का पलायन बताया जा रहा है, लेकिन न तो यह पलायन है, न ही इसमें केवल मजदूर शामिल हैं और न ही यह केवल दिल्ली-एनसीआर से उत्तर प्रदेश और बिहार लौटने की कोशिश कर रहे लोगों का प्रसंग है। यह उससे कहीं ज्यादा है। देश के लगभग सभी महानगरों से लोग अपने गांव की ओर वापसी करने की कोशिश में लगे हैं। इनमें कामगारों के अलावा छात्र व अन्य रोजगार से जुड़े लोग भी शामिल हैं। यह शहर में काम बंद होने से परेशान लोगों की अकुलाहट तो है ही, साथ ही महामारी के बीच परदेस में फंसे लोगों की बेचैनी भी है। इस बीच, कुछ अफवाहों ने भी इनकी बेचैनी बढ़ाने और इन्हें सड़कों पर जुटने के लिए मजबूर कर दिया।

धन ही नहीं, मन भी है कारण : हजारों की तादाद में लोगों का सड़कों पर आना और पैदल ही अपने गांव-घर की ओर से चल पड़ना अपने आप में कई वजह छिपाए है। काम बंद होने के चलते आर्थिक रूप से आई परेशानी तो इसका कारण है ही, कई भावनात्मक वजहें भी इसके पीछे हैं। इस महामारी और संकट के बीच कहीं ना कहीं लोग गांव-घर पहुंचकर खुद को सुरक्षित अनुभव करना चाहते हैं। हालांकि यह भी सच है कि खुद को सुरक्षित अनुभव करने की इस भावना के चलते लोगों की उमड़ी यह भीड़ कहीं ना कहीं महामारी के विरुद्ध युद्ध में देश को कमजोर भी कर रही है।

सड़कों पर डर के साथ उम्मीद का सैलाब पेज>>5

पूर्व निर्धारित योजनाएं भी हैं वजह

साल के इस दौर में अक्सर विभिन्न राज्यों में रह रहे प्रवासी अपने गांव की ओर जाते हैं। स्कूलों की छुट्टियों से लेकर पारिवारिक कार्यक्रम जैसे कई कारण इस दौरान लोगों को अपने गांव बुलाते हैं। ऐसे में सभी बस, ट्रेन रद होने के कारण भी ऐसे लोग बड़ी संख्या में किसी भी तरह से अपने घर पहुंच जाना चाहते हैं। फसलों की कटाई का मौसम होने के कारण भी बहुत से लोग इन दिनों अपने गांव पहुंचते हैं। इनमें से बहुत से लोगों के लिए यह गांव में रोजगार का भी मौका होता है।

दिल्ली में 23, नोएडा में छह गाजियाबाद में दो नए मामले

जेएनएन, नई दिल्ली

- नोएडा में इंग्लैंड से आए ऑडिटर ने 19 लोगों को संक्रमित किया

देश की राजधानी दिल्ली में रविवार को 23 मामले सामने आए। यह एक दिन में अब तक सामने आए सर्वाधिक मामले हैं। दिल्ली में कुल संक्रमितों की संख्या 72 हो गई है। इनमें 32 मामले पिछले दो दिन में सामने आए हैं। वहीं, नोएडा में छह जबकि गाजियाबाद में दो लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई। नोएडा में कुल मरीजों की संख्या 32 जबकि गाजियाबाद में सात हो चुकी है।

दिल्ली में एक दिन में 23 नए मामले आने के बाद स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मच गया है। विभाग का कहना है कि मरीजों की जांच रिपोर्ट देर शाम को आई है। इन लोगों को संक्रमण कैसे हुआ और उनके संपर्क में आए लोगों का पता लगाया जा रहा है। इनमें से कई लोग विदेश से लौटे हैं। दिल्ली के 72 मरीजों में से 16 दिल्ली के बाहर के हैं। वहीं, 64 मरीज विभिन्न अस्पतालों में भर्ती हैं। इनके अलावा 369 संदिग्ध विभिन्न अस्पतालों में भर्ती हैं और उनके सैंपल की जांच रिपोर्ट का इंतजार है। उधर, नोएडा की सीजफायर कंपनी के कर्मचारियों, स्वजनों व रिश्तेदारों में कोरोना वायरस तेजी से फैलता जा रहा है। अब तक 12 कर्मचारियों समेत 19 लोगों में इंग्लैंड से आया ऑडिटर संक्रमण का स्रोत बन चुका है। रविवार को चार कर्मचारियों समेत छह में कोरोना की पुष्टि हुई। गाजियाबाद में मोहननगर की एक सोसायटी में रहने वाले दंपती की रिपोर्ट पॉजिटिव आई। जांच में पता चला कि दंपती का बीते दिनों करीब 93 लोगों से संपर्क हुआ है। इनमें से 21 में कोरोना के लक्षण पाए गए हैं।

मांग घटने से सस्ते क्रूड ऑयल का भी नहीं कोई खरीदार

नई दिल्ली : कोरोना वायरस ने जिस तरह से दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का चक्का जाम किया है उससे पेट्रोलियम उत्पादों की खपत में भारी कमी होती दिख रही है। यही वजह है कि पिछले पांच हफ्तों में क्रूड की कीमत 65 डॉलर से घटकर 26 डॉलर प्रति बैरल आ जाने के बावजूद इसके खरीददार नहीं मिल रहे। भारत में पेट्रोल व डीजल की खपत में 50 फीसद से ज्यादा की कमी आ चुकी है। (पेज-10)

जुलाई 2021 में हो सकते हैं ओलंपिक गेम्स

टोक्यो : टोक्यो ओलंपिक के आयोजनकर्ता 23 जुलाई 2021 से ओलंपिक कराने की तैयारी कर रहे हैं। आयोजन समिति के अध्यक्ष योशिरो मोरी ने कहा है कि ओलंपिक में ज्यादा बदलाव होने की संभावना नहीं है। गेम्स गर्मियों में हो सकते हैं। मोरी ने कहा कि हम जून से लेकर सितबर के बीच आयोजन के बारे में विचार कर रहे हैं। (पेज-12)

21 लाख रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष में देगा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड। यह जानकारी बोर्ड के सचिव अनुराग त्रिपाठी ने दी।

www.jagran.com
राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 30 मार्च 2020

षष्ठम्

कात्यायनी

देवी आराधना के पर्व वासंतिक नवरात्र के छठें दिन देवी के षष्ठम स्वरूप मां कात्यायनी के दर्शन-पूजन का विधान है। देवी कात्यायनी के ध्यान-पूजन से सांसारिक कष्टों और भय से मुक्ति मिलती है। सूर्यास्त के समय पूर्वाभिमुख होकर 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाय विच्चै' मंत्र से देवी का ध्यान करते हुए स्तवन, वंदन का विधान है। सूर्योदय से पहले 'हुं हुं हुं हुंकाररूपिण्यै, जं जं जं जम्भनादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भावन्यै ते नमो नमः' मंत्र के जाप से भगवती का ध्यान शुभफलदायक माना जाता है। देवी एकाग्रता प्रदान करने वाली हैं।

गौरी दर्शन यात्रा : गौरी दर्शन यात्रा के क्रम में वासंतिक नवरात्र के छठे दिन ललिता गौरी का दर्शन व आराधना करनी चाहिए।

आज का संदेश : मां का दिव्य स्वरूप लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए मन को एकाग्रचित्त रखने का संदेश देता है।

-पं. ऋषि द्विवेदी

मजदूरों का किराया भरेगी सरकार

बड़ी घोषणा ▶ दिल्ली से दूसरे राज्यों को जा रहे लोगों को रोकने के लिए उठाए जा रहे कदम

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन के बाद दिल्ली से दूसरे राज्यों के लोगों का बाहर जाने का क्रम रोकने के लिए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार शाम को बड़ा एलान किया है। डिजिटल पत्रकार वार्ता कर उन्होंने घर छोड़ कर जा रहे लोगों से कहा कि अब दिल्ली सरकार आपके घरों का किराया भी भरेगी, बस आप घरों में ही रहिये। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन को सफल बनाएं। यही हम सब की जिम्मेदारी है।

केजरीवाल ने कहा कि देशभर में लोग शहरों से गांवों की ओर रुख कर रहे हैं। ये बेहद खतरनाक है। इससे तो कोरोना बड़ी तेजी से पूरे देश में फैल जाएगा। अगर हमें कोरोना वायरस को रोकना है, तो इसे सख्ती के साथ लागू करना होगा। दिल्ली से जा रहे लोगों से केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में लोगों के रहने का इंतजाम किया जा रहा है। दिल्ली के हर नागरिक के लिए सम्मानजनक व्यवस्था देना सरकार की जिम्मेदारी है। केजरीवाल ने कहा कि केरल, जम्मू, ओड़िशा, उत्तराखंड, हरियाणा व उत्तर प्रदेश के लोग शहर छोड़ कर अपने-अपने गांव जा रहे हैं। मैं उन सब से हाथ जोड़कर अपील करता हूं। प्रधानमंत्री ने भी लोगों से अपील की है कि जो जहां है वहीं रहें। कल देखा की कितने लोग भीड़ में इकट्ठे हो गए थे।

...तो संभालना मुश्किल हो जाएगा

केजरीवाल ने दिल्ली से जा रहे लोगों से कहा कि अगर यह बीमारी दो-चार लोगों को भी हो गई तो सभी का नुकसान हो जाएगा। अगर कोरोना हमारे देश में तेजी से फैला तो संभाल पाना बहुत मुश्किल हो जाएगा। कई स्कूल और स्टेडियम भी खाली करा दिए गए हैं। सभी को ठीक से रखेंगे और खाना खिलाएंगे। जिनके पास पैसा नहीं हैं, उन्हें भी परेशानी नहीं होगी। किसी को भी भूखा नहीं रहने दिया जाएगा।

कोरोना से बचाव को लेकर संदेश देते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। सौ. दिल्ली सरकार

मकान मालिकों से अपील, पुण्य का काम करें

मुख्यमंत्री ने मकान मालिकों से कहा है कि किसी किरायेदार को परेशान न करें। अगर कोई किरायेदार पैसा नहीं दे पाएगा तो सरकार पैसा देगी। साथ ही कहा कि अगर फिर भी आप किरायेदारों को परेशान करेंगे तो ना चाहते हुए सरकार को एक्शन लेना होगा। मकान मालिकों को संकट की इस घड़ी में पुण्य का काम करना चाहिए। इस समय एक ही मकसद है कि देश को बचाना है। केजरीवाल ने अपनी पार्टी के लोगों से अपील की है कि यह समय राजनीति का नहीं है।

लॉकडाउन के बचे दिनों में गीता के 18 अध्याय पढ़ें

केजरीवाल ने कहा कि इस समय अपने घर पर रहना ही देशभक्ति है। अभी लॉकडाउन के जो भी दिन बचे हैं, उनमें अगर आपको अच्छा लगे तो आप वो कर सकते हो जो मेरे परिवार ने शुरू किया है। गीता के 18 अध्याय हैं, रोज एक पढ़िए। सिर्फ आधा घंटा लगता है।

एक लाख लोगों को भोजन उपलब्ध कराएगी डीएसजीपीसी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (डीएसजीपीसी) लॉकडाउन की वजह से परेशान गरीब लोगों को भोजन करा रही है। ज्यादा से ज्यादा लोगों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए कमेटी ने लोगों से सहयोग करने की अपील की है। कमेटी का कहना है कि लॉकडाउन की वजह से लाखों लोगों के पास आजीविका का साधन नहीं रह गया है। डीएसजीपीसी के अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा ने बताया कि इस समय दिल्ली के गुरुद्वारों से रोजाना 50 हजार लोगों को उनके घर तक लंगर पहुंचाया जा रहा है। अब एक लाख लोगों को लंगर उपलब्ध कराने का फैसला किया गया है। उन्होंने बताया कि झुग्गी बस्तियों में परिवार के साथ रहने वालों को राशन दिया जाएगा। उन्होंने औद्योगिक घरानों, सामाजिक संस्थाओं व सक्षम लोगों से दिल्ली के गुरुद्वारों में राशन, फल व सब्जियां आदि दान देने की अपील की है। कमेटी के बैंक खाते में लोग धन भी जमा करा सकते हैं।

भूखा न रहे कोई, आज से शुरू होगी कांग्रेस की रसोई

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

कुछ दिनों के लिए ही सही, लेकिन कोरोना से जंग में सस्ती राजनीति पर भी विराम लगता नजर आ रहा है। शायद इसीलिए विरोधी दल तक संकट की इस घड़ी में अपना यथासंभव योगदान देने में लगे हैं। इसी कड़ी में कांग्रेस दिल्ली में जरूरतमंदों की मदद के लिए रसोई शुरू करने जा रही है। प्रदेश कांग्रेस के नवनियुक्त अध्यक्ष अनिल चौधरी के निर्देश पर अब पार्टी ने भूखों को खाना खिलाने की योजना भी बनाई गई है। इसके तहत दिल्ली के सभी 14 जिलों में सोमवार से रसोई शुरू हो जाएगी। संबंधित जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में यह रसोई उस जिले के किसी एक प्रमुख स्थान पर बनेगी।

> कोरोना से संकट की इस घड़ी में कांग्रेस भी सरकार के साथ है। राशन बांटने के अलावा अब पार्टी जरूरतमंदों को भोजन भी कराएगी।
> -अनिल चौधरी, अध्यक्ष, दिल्ली कांग्रेस

नियंत्रण कक्ष स्थापित, हेल्पलाइन नंबर जारी : सोशल मीडिया टीम के प्रदेश अध्यक्ष राहुल शर्मा ने बताया कि प्रदेश कार्यालय में एक नियंत्रण कक्ष भी स्थापित किया गया है। दो हेल्पलाइन नंबर 011-43534325 और वाटसएप नंबर 9625777907 भी जारी कर दिए गए हैं। राशन एवं भोजन को लेकर इन नंबरों पर फोन करके भी सहायता प्राप्त की जा सकती है।

निजी अस्पतालों में कोरोना की जांच मुफ्त करने की मांग

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अनिल चौधरी ने दिल्ली सरकार से मांग की है कि राहत पैकेज में अगले एक-दो माह के लिए बिजली-पानी का बिल, गृह कर एवं स्कूल फीस भी शामिल कर जनता को राहत दी जाए। इसके अलावा निजी अस्पतालों में भी कोरोना वायरस की जांच मुफ्त कर दी जाए। रविवार अपराह्न प्रदेश पार्टी कार्यालय में डिजिटल पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए चौधरी ने कहा कि बहुत से लोग तो आशंकित होने के बावजूद कोरोना की जांच इसलिए नहीं करा पा रहे क्योंकि सरकारी अस्पतालों में इसकी सुविधा अत्यंत सीमित है और निजी अस्पतालों में 4500 रुपये देने पड़ रहे हैं। उन्होंने सरकार से यह भी मांग की कि गरीबों को खाना मुहैया कराने के लिए नगर निगम स्कूलों की मिड-डे मील किचन और आंगनबाड़ी केंद्रों की रसोई का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

न्यूज गैलरी

राधा स्वामी सत्संग व्यास ने राहत कोष में दिए एक करोड़

नई दिल्ली : राधा स्वामी सत्संग व्यास ने मुख्यमंत्री राहत कोष में एक करोड़ रुपये दिए हैं। व्यास के जोनल सेक्रेटरी सरदार गुरविंदर सिंह ने अपने प्रमुख संत के आदेश पर दिल्ली के मुख्यमंत्री राहत कोष में यह राशि दी। इस राशि का चेक रविवार को उन्होंने आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सदस्य सुशील गुप्ता को उनके निवास स्थान पर आकर भेंट किया। उन्होंने बताया कि आज की तारीख में हम डेढ़ लाख खाने के पैकेट भी दिल्ली सरकार को कोरोना वायरस की आपात स्थिति से निपटने के लिए दे रहे हैं तथा आज से प्रतिदिन इतने पैकेट देंगे। इसके अलावा आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सदस्य एनडी गुप्ता और सुशील गुप्ता ने भी कुछ दिन पहले मुख्यमंत्री राहत कोष में अपनी सांसद निधि से दो-दो करोड़ और संजय सिंह ने एक करोड़ रुपये दिए हैं। सुशील गुप्ता ने बताया कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अपील पर वे प्रतिदिन अपने परिवार के साथ एक हजार लोगों को खाना खिला रहे हैं। छह हजार लोगों को उनकी सहयोगी संस्थाएं सड़कों पर जाकर जरूरतमंद लोगों को खाना खिला रही है। (राब्यू)

दिल्ली में फंसे लोगों को बस से भेजा पंजाब

नई दिल्ली : राजधानी में फंसे पंजाब के लोगों को मदद करने के लिए दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (डीएसजीपीसी) ने पहल की है। इन लोगों को उनके घर पहुंचाने के लिए गुरुद्वारा मजनू का टीला से दो बसें रवाना हुईं। कमेटी के अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा व महासचिव हरमीत सिंह कालका ने बताया कि पंजाब से कई लोग दिल्ली स्थित गुरुद्वारों के दर्शन करने के लिए आए थे। कर्फ्यू व लॉकडाउन की वजह से वे सभी यहां फंस गए थे। उन्हें सुरक्षित घर तक पहुंचाने के लिए दो बसें रवाना की गई हैं। जरूरत पड़ने पर और बसों की व्यवस्था की जाएगी। इसके लिए लोगों को गुरुद्वारा मजनू का टीला में आकर नाम दर्ज कराना होगा जिससे कि उनके लिए उचित व्यवस्था की जा सके। पंजाब जाने से पहले सभी लोगों ने गुरुद्वारा नाना प्याऊ में मत्था टेका। उन्होंने कहा कि इन बसों में पंजाब में फंसे हुए दिल्ली के लोग वापस लाए जाएंगे। इसी तरीके की मुहिम शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भी शुरू की है। इस मौके पर डीएसजीपीसी के संयुक्त सचिव हरविंदर सिंह केपी, मीडिया सलाहकार सुदीप सिंह आदि भी मौजूद रहे। (राब्यू)

घर जाने को निकले दूसरे राज्यों के लोगों को पुलिस ने रोका

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली में रहने वाले दूसरे राज्यों के जो लोग घर जाना चाहते थे उन्हें रविवार को दिल्ली में ही जगह-जगह रोक दिया गया। उन्हें वापस उनके दिल्ली के पते पर भेजने की व्यवस्था की गई है, जबकि दूसरे राज्यों से दिल्ली पहुंचे ऐसे लोग, जो दिल्ली के बाहर जाना चाहते हैं, उनके लिए अस्थायी शेल्टर की व्यवस्था की जा रही है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि दिल्ली के बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। शनिवार को जो लोग भेजे गए थे, उनके अलावा अब किसी को नहीं भेजा जाएगा। उनके लिए रहने और खाने की पर्याप्त व्यवस्था की जा रही है। दिल्ली पुलिस और दिल्ली सरकार मिलकर ऐसे लोगों के लिए अस्थायी शेल्टर बनाकर उनके रुकने और खाने की व्यवस्था कर रही है।

दिल्ली पुलिस के प्रवक्ता ने बताया कि ऐसे लोग जो दूसरे राज्यों में स्थित अपने घर जाने के लिए निकले हैं और सड़कों पर हैं, ऐसे लोगों में जो दिल्ली में रहते हैं, उन्हें बसों के जरिये दिल्ली में उनके पते पर पहुंचाया जा रहा है। जिन लोगों के पास कोई ठिकाना नहीं है या दूसरे राज्यों में जाने के लिए दिल्ली पहुंचे हैं, उनके लिए अस्थायी शेल्टर की व्यवस्था की जा रही है। जिससे व्यवस्था बनी रहे। लॉकडाउन का पूरा पालन हो और कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के उद्देश्य से जो कदम उठाए जा रहे हैं, उन उद्देश्यों की भी पूर्ति हो।

तीन बसें जब्त, चालक व मालिक गिरफ्तार

जासं, नई दिल्ली : लॉकडाउन का उल्लंघन करके बसों में सवारियां भरकर ले जा रही तीन बसों को दिल्ली पुलिस ने जब्त कर दिया गया। चाणक्यपुरी थाना पुलिस ने तीनों बसों के चालकों व मालिक को भी गिरफ्तार किया है। आरोपित चालकों की पहचान पालम कॉलोनी निवासी अशोक कुमार, हरिनगर निवासी सुभाष चंद और नांगलोई के निलोठी निवासी राम शंकर के रूप में हुई है। बस का मालिक अशोक नगर निवासी ओम प्रकाश है। पुलिस के मुताबिक रविवार को धौला कुआं फ्लाईओवर पर पिकेट चेकिंग के दौरान पुलिसकर्मियों ने तीन बसों को रोका। बस नंबर डीएल-1-पीडी-2389, डीएल-1पीसी-2402 और डीएल-1-पीडी-3138 की जांच करने पर पता लगा कि लॉकडाउन का उल्लंघन करते हुए यात्रियों को ले जाया जा रहा था।

घंटों पैदल चले बच्चे, मुख्य सचिव को नोटिस

राज्य ब्यूरो,नई दिल्ली : कोरोना वायरस देखते हुए देश में किए गए लॉकडाउन के दौरान दिल्ली से अपने गांव जा रहे लोगों के साथ छोटे-छोटे बच्चों को लेकर द नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट (एनसीपीसीआर) की चेयरपर्सन प्रियंका कानूनगो ने मुख्य सचिव को नोटिस भेजा है।

मुख्य सचिव विजय देव को भेजे नोटिस में कहा गया है कि मीडिया में यह कहा गया है कि लॉकडाउन के दौरान दिल्ली से तमाम लोग अपने गांव की ओर चल पड़े। इनके खाने-पीने की व्यवस्था नहीं हो पाई जिस कारण बड़ी संख्या में लोगों को दिल्ली छोड़कर जाना पड़ा। ऐसे में उनके साथ बच्चे भी थे इन बच्चों के अधिकारों की रक्षा नहीं हो पाई। इस मामलों को गंभीरता से लेते हुए मुख्य सचिव से पूछा गया है कि ऐसा क्यों हुआ।

एनसीपीसीआर ने इस संबंध में मुख्य सचिव विजय देव को एक सप्ताह में जवाब देने का निर्देश दिया है। एनसीपीसीआर का कहना है कि बच्चों का शोषण नहीं होना चाहिए, जिस तरह से लोग दिल्ली छोड़ने के लिए विवश हुए उसके बाद बच्चे परेशान हुए हैं। हजारों की संख्या में छोटे-छोटे मासूम बच्चे सड़कों पर घंटों चलते हुए दिखाई दिए। इससे उन्हें परेशानी उठानी पड़ी। यह उनके अधिकारों का हनन है, ऐसा नहीं होना चाहिए।

बदलती फिजा बन सकती है जंग का हथियार

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

दिल्ली-एनसीआर सहित देश की बदलती फिजा भी आने वाले दिनों में कोरोना से जंग का हथियार बन सकती है। पश्चिमी विक्षोभ का दौर खत्म हो चुका है। ऐसे में अब तापमान बढ़ने के साथ गर्मी भी बढ़ेगी। लॉकडाउन अवधि में ही तापमान 37 से 38 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाएगा। संभावना जताई जा रही है कि तेज गर्मी पड़ने पर कोरोना का फैलाव अपेक्षाकृत कम हो सकता है। इसकी बड़ी वजह यह भी बताई जा रही है कि दुनिया के जितने भी देशों में कोरोना का कहर सबसे ज्यादा देखने में आया है, उन सभी जगहों का तापमान भारत के मुकाबले आधे से भी कम है।

प्रामाणिक तौर पर कोरोना कोविड-19 और मौसम के बीच कोई संबंध सामने नहीं आया है, लेकिन कोई इस संभावना से इन्कार भी नहीं कर रहा कि तापमान में इजाफे के साथ कोरोना वायरस के संक्रमण का फैलाव थोड़ा-बहुत नियंत्रित अवश्य हो सकता है। इस संभावना के पीछे बड़ा आधार यही है कि चीन, इटली, अमेरिका, स्पेन, ईरान और जर्मनी इत्यादि जिन देशों में कोरोना पीड़ितों की संख्या कहीं ज्यादा पहुंच चुकी है, उन सभी देशों का तापमान भारत के न्यूनतम तापमान से भी काफी कम है।

कोराना प्रभावित कुछ देशों का तापमान और पीड़ितों की संख्या

देश	तापमान	कोरोना पीडित
अमेरिका	09	1,23,828
इटली	10	85,386
चीन	13	81,218
स्पेन	16	78,650
जर्मनी	07	58,500
ईरान	12	38,301
भारत	30	979

नोट : तापमान डिग्री सेल्सियस में पीड़ितों की संख्या लगभग में

मौसम विभाग के अनुसार, अब तक जो पश्चिमी विक्षोभ आ रहे थे, वे हिमालयी क्षेत्र में विकसित हो रहे थे। जो नए पश्चिमी विक्षोभ आएंगे, वह मुख्य तौर पर उत्तर दिशा की ओर प्रभाव दिखाएंगे। नतीजा, मौसम खुल गया है और आसमान भी साफ हो गया है। इससे गर्मी एवं तापमान दोनों में ही इजाफा होगा।

स्काईमेट वेदर के मुख्य मौसम विज्ञानी महेश पलावत के अनुसार, कोरोना से जंग में लॉकडाउन की अवधि 14 अप्रैल तक है। इस अवधि तक दिल्ली-एनसीआर में अधिकतम तापमान 37 से 38 डिग्री पहुंच जाएगा। राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात व मध्य प्रदेश इत्यादि राज्यों में तापमान 40 डिग्री तक छू लेगा। 20 अप्रैल तक दिल्ली में भी अधिकतम तापमान 40 डिग्री तक जा पहुंचेगा। तेज गर्मी के बीच संभव है कि कोरोना का ग्राफ भी नीचे गिरने लगे।

> ऐसा माना जा रहा है कि तापमान बढ़ने के साथ कोरोना वायरस का फैलाव थमेगा। संभव है कि इस पर काबू भी पा लिया जाए। तापमान बढ़ने के साथ-साथ नमी बढ़ेगी, वह भी वायरस के लिए अनुकूल नहीं कही जा सकती। गर्मी बढ़ने के इंतजार में ही तीन सप्ताह का लॉकडाउन किया गया है ताकि बारिशों का मौजूदा दौर खत्म हो जाए। इसमें भी संदेह नहीं कि अप्रैल-मई का मौसम कोरोना से जंग में काफी अहम माना जा रहा है।
> -डॉ. केके अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन

> माना जाता है कि सर्दी, खांसी, जुकाम इत्यादि कोई भी फ्लू तापमान बढ़ने के साथ खत्म हो जाते हैं। लेकिन कोरोना को लेकर अभी कुछ निश्चित नहीं है। हालांकि उम्मीद है कि तेज गर्मी और उच्च तापमान के बीच स्थिति में कुछ सुधार अवश्य होने लगे।
> -कुलदीप श्रीवास्तव, प्रमुख, प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र, दिल्ली

बीमा कंपनी को मुआवजा अदा करने का आदेश

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▶ 20 हजार रुपये मानसिक परेशानी के एवज में अदा करने को भी कहा

उपभोक्ता फोरम ने ओरिएंटल बीमा कंपनी को कारखाने में हुई चोरी का मुआवजा अदा करने का आदेश दिया है। इसके साथ ही 20 हजार रुपये मानसिक परेशानी के एवज में उपभोक्ता को अदा करने को भी कहा गया है। व्यापारी अंशु अग्रवाल ने ओरिएंटल बीमा कंपनी के खिलाफ उपभोक्ता फोरम में शिकायत दायर की थी।

फोरम में दायर शिकायत में कहा था कि उन्होंने अपनी फैक्ट्री का बीमा करा रखा था, जिसमें चोरी सहित कई तरह की आपदाओं के बदले मुआवजा मिलने का प्रावधान था। बीमा अवधि के दौरान नवंबर 2012 में फैक्ट्री में चोरी हो गई और इसके बाद पुलिस ने केस भी दर्ज किया। इस चोरी में करीब 11 लाख रुपये का नुकसान हुआ था।

बीमा कंपनी की तरफ से सर्वे कराया गया तो उसमें चोरी का आकलन तीन लाख 26 हजार रुपये किया गया। शिकायत में कहा गया कि कंपनी ने मुआवजा देने से इन्कार कर दिया और तीन साल गुजरने के बाद भी कोई राहत नहीं मिली। उपभोक्ता फोरम के नोटिस पर बीमा कंपनी ने जवाब दिया कि बीमा में सेंधमारी में हुए नुकसान का मुआवजा देने का प्रावधान है। चूंकि यह मामला चोरी का है, इसलिए मुआवजा नहीं दे सकते। हालांकि फोरम ने इस दलील को नहीं माना और आदेश दिया कि सर्वे में जो तीन लाख 26 हजार रुपये के नुकसान का आकलन किया गया, वह उपभोक्ता को अदा किया जाए। यह मुआवजा 2014 से नौ फीसद वार्षिक ब्याज के साथ अदा करना होगा। इस अवधि के दौरान उपभोक्ता को जो मानसिक प्रताड़ना हुई, उसके एवज में 20 हजार रुपये मुआवजा देना होगा।

153 लोगों पर दर्ज हुई एफआइआर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

लॉकडाउन के बावजूद घरों से बाहर निकलने वाले लोगों के खिलाफ पुलिस कड़ी कार्रवाई कर रही है। रविवार को 153 लोगों के खिलाफ एफआइआर दर्ज की गई। दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त जनसंपर्क अधिकारी एसीपी अनिल मित्तल के मुताबिक इस दौरान 3,811 लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। इनमें बिना किसी जरूरी काम के घर से निकले 381 लोगों के वाहनों को जब्त कर लिया गया। इसके अलावा पुलिस ने सख्ती बढ़ाते हुए अब कॉलोनियों व सोसायटियों के प्रवेश द्वारों पर भी बैरिकेड लगाकर चेकिंग शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि बहुत जरूरी काम हो, तभी लोग घरों से बाहर निकलें। जांच में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को पूरा सहयोग करें। इस बीच आवश्यक वस्तुओं के दुकानें खुली रहीं, लेकिन उन्हें मास्क और दस्ताने पहनकर ही सामान देने की इजाजत दी गई है।

तिलक ब्रिज के पास वाहनों की जांच करती पुलिस। जागरण

उधर, पास बनवाने वालों की भीड़ को देखते हुए अब ऑनलाइन पास की व्यवस्था के गई है। दिल्ली पुलिस ने रविवार को आवश्यक सेवा से जुड़े 1,868 जरूरतमंद लोगों को मूवमेंट पास जारी किए। शनिवार को 2,920 लोगों को पास जारी किए गए थे। पुलिस प्रयास कर रही है कि लोगों को परेशानी न हो।

बाइक से स्टंट करता दिखा युवक

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : लॉकडाउन में लोगों को घरों में रहने की सलाह दी जा रही है। वहीं इन परिस्थितियों में एक युवक का बाइक से स्टंट करते हुए वीडियो दिल्ली पुलिस के पास ट्विटर के जरिये पहुंचाया गया है। वीडियो बाइक के पीछे से किसी दूसरे वाहन से बनाया गया है। पुलिस को वीडियो उपलब्ध कराने वाले ने स्टंट करने की लोकेशन भी बताई गई है। पुलिस बताई गई लोकेशन के आसपास के सीसीटीवी कैमरों की मदद से उसकी पहचान करने का प्रयास कर रही है।

स्टंट करने वाला युवक सफेद रंग की यामाहा आर-15 बाइक पर सवार है। बाइक पर पीछे की नंबर प्लेट गायब है। युवक ने हैलमेट भी नहीं पहना है। उसने अपना दायां पैर क्लस्टर बस के दरवाजे पर रखा हुआ है, जबकि उसका बायां पैर बाइक के साइड में है। स्टंट करते समय युवक बाइक और बस के बीच में खड़ा हुआ है। जिस बस के दरवाजे पर स्टंट करने वाले युवक ने रखा है वह 721 रूट नंबर की है और उसका नंबर डीएल 1 पीडी 0793 है।

राहत के प्रयास

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हिमाचल, राजस्थान समेत अन्य राज्यों में फंसे अपने देश के नागरिकों को पहाड़गंज पहुंचा रहे दूतावास, यहां के होटलों में अभी भी होम स्टे कर रहे 500 से अधिक विदेशी पर्यटक

विदेशियों के लिए रेस्क्यू प्वाइंट बना पहाड़गंज

नेमिष हेमंत, नई दिल्ली

लॉकडाउन के दौरान विदेश में फंसे नागरिकों को निकलवाने के मामले में भारत सरकार की सराहना वैश्विक स्तर पर हो रही है। इस बीच भारत में फंसे अपने देश के नागरिकों को निकलवाने को लेकर विभिन्न देशों के दूतावास भी सक्रिय हैं। इन देशों के दूतावास केंद्र सरकार व स्थानीय प्रशासन की मदद से अपने नागरिकों को निकाल पहाड़गंज ला रहे हैं, जिनकी विशेष विमान से वतन वापसी करवाई जाएगी। ऐसे में नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने स्थित पहाड़गंज बड़ा 'रेस्क्यू प्वाइंट' बन गया है।

होटलगंज के नाम से मशहूर पहाड़गंज में 2000 से अधिक बजट होटल व गेस्टहाउस हैं, जो पहले से ही विदेशी पर्यटकों के लिए पसंदीदा ठिकाना बने हुए हैं। अब लॉकडाउन में फंसे इन पर्यटकों के लिए यह 'होम स्टे' की तरह हो गया है। मौजूदा समय में भी विभिन्न देशों के 500 से अधिक नागरिक 200 से अधिक होटलों में होम स्टे कर रहे हैं और वतन वापसी का इंतजार कर रहे हैं।

राष्ट्रीय राजधानी में मौजूद विभिन्न देशों के दूतावास के अधिकारी विभिन्न राज्यों में फंसे अपने देश के नागरिकों को यहां बुलाकर इकट्ठा कर रहे हैं। फिर विशेष विमान से इनको अपने देश भेजने का इंतजाम किया जा रहा है। इनमें कई विदेशी पर्यटक ऐसे भी हैं, जो दिल्ली घूमने आए थे और लॉकडाउन की वजह से फंस गए हैं।

26 मार्च को ही इजराइल ने अपने 500 से अधिक नागरिकों को यहां इकट्ठा कर इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा पहुंचाया। फिर विशेष विमान से उन्हें अपने देश ले जाया गया। वहीं, अपने नागरिकों को ले जाने के लिए 31 मार्च को फ्रांस भी दिल्ली में विशेष विमान भेजने की तैयारी में है। पहाड़गंज में फ्रांस के 10 से अधिक नागरिक वतन वापसी के इंतजार में हैं। दो दिन पहले ही ऋषिकेश में फंसे अपने देश के 14 नागरिकों को जापान दूतावास के प्रयासों से पहाड़गंज लाया गया। 500 से अधिक विदेशी नागरिकों में फ्रांस, उज्बेकिस्तान, ग्रीस, यूक्रेन, रूस, बांग्लादेश, जार्डन, चिली व जापान समेत अन्य देशों के नागरिक हैं।

होटल संचालकों के मुताबिक लॉकडाउन की वजह से अधिकांश रेस्तरां बंद हैं। ऐसे में इनके खाने-पीने के लिए उनके स्तर पर अलग से व्यवस्था की गई है। इसमें दिल्ली पुलिस और जिला प्रशासन से भी मदद मिल रही है। वहीं, इनके देशों के राजनयिक भी बराबर उन लोगों के संपर्क में हैं। इस बारे में इंडियन टूरिस्ट एसोसिएशन के वरिष्ठ सदस्य व सुशांत ट्रेवेल्स के मालिक विजय तिवारी ने कहा है कि यह इन लोगों के साथ हम लोगों के लिए भी परीक्षा की घड़ी है। इनका पूरा ख्याल रखने का प्रयास हो रहा है। खास बात यह है कि पर्यटक और राजनयिक भी इसमें बखूबी साथ दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि यहां रह लोगों को किसी भी तरह की परेशानी नहीं होने दी जाएगी। हर तरह से उनका ध्यान रखा जा रहा है।

पहाड़गंज से इजराइल के नागरिकों को इजराइल एंबेसी भेजा गया। इस दौरान वह इस दौरान एक दूसरे के पास बिना मास्क लगाए बैठे। फाइल फोटो

राष्ट्रीय बैंक से धोखाधड़ी में सजा को नहीं कर सकते निलंबित

विनीत त्रिपाठी, नई दिल्ली

धोखाधड़ी व साजिश रचने समेत कई अन्य धाराओं में कठोर कारावास की सजा और 65 लाख रुपये का जुर्माना लगाने के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट पहुंचे दोषी गोपाल प्रसाद की याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने अहम टिप्पणी की है।

पारिवारिक स्थिति एवं उम्र का हवाला देकर सजा को निलंबित करने की मांग करने वाले 69 वर्षीय दोषी की याचिका पर न्यायमूर्ति बृजेश सेठी ने कहा कि दोषी ने सह-आरोपितों के साथ मिलकर साजिश रची, ताकि एक राष्ट्रीय बैंक को 82 लाख रुपये से अधिक की धनराशि की चपत लगाई जा सके। अपराध की गंभीरता को देखते हुए दोषी की सजा को निलंबित नहीं किया जा सकता। अभियोजन पक्ष की दलीलों और तथ्यों को देखते हुए इस स्तर पर आवेदक की सजा को कम या खत्म नहीं किया जा सकता। पीठ ने यह टिप्पणी करते हुए याचिका खारिज कर दी।

याचिका के अनुसार जेल में सजा काट रहा याचिकाकर्ता का एक बेटा उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में रहता है। उसके छोटे बेटे की वर्ष 2006 में सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। याचिकाकर्ता ने दलील दी कि उसका बड़ा बेटा अवसाद ग्रस्त है और उस पर ही उसका खर्च उठाने का बोझ है। हालांकि, केंद्रीय जांच एजेंसी (सीबीआइ) की तरफ से अभियोजन पक्ष ने याचिका का विरोध करते हुए कहा कि निचली अदालत ने मामले में सभी साक्ष्यों एवं तथ्यों की पड़ताल करने के बाद विस्तृत फैसला सुनाया है। साथ ही यह भी कहा कि याचिकाकर्ता की ओर से किया गया अपराध बहुत गंभीर है। इतना ही नहीं, याचिकाकर्ता ने अब तक निचली अदालत की ओर से लगाए गए जुर्माने की धनराशि भी अदा नहीं की है।

2909 मामले जांच के दायरे में हैं हिमाचल में। इनमें अधिकतर वे लोग हैं जो कोरोना प्रभावित देशों से आए हैं या उनके संपर्क में जो लोग आए हैं। इनके सैंपल लिए जा रहे हैं।

कोरोना से युद्ध में पीएम राहत कोष में हर कोई कर रहा योगदान

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद एक महीने का वेतन करेंगे दान
- अडानी और जिंदल स्टील ने 100-100 करोड़ और कोटक मंहिंद्रा बैंक व उसके एमडी ने 50 करोड़ दिए

नई दिल्ली, एजेंसियां : विपत्ति के समय में एकजुट होकर संकट का सामना करना हम हिंदुस्तानियों की सबसे बड़ी खासियत है। कोरोना से पैदा हुए संकट के समय भी ऐसा ही देखने को मिल रहा है। राष्ट्रपति, सरकारी संगठनों, निजी संस्थाओं, उद्यमियों व फिल्मी हस्तियों ने प्रधानमंत्री राहत कोष में बढ़-चढ़कर योगदान किया है या दान देने का एलान किया है।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने एक माह का वेतन देने की घोषणा के साथ ही अन्य लोगों से भी दान देने की अपील की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति की इस उदारता के प्रति उनका आभार जताया है। प्रधानमंत्री ने ट्वीट किया है, 'धन्यवाद राष्ट्रपति जी। देश को रास्ता दिखाने और प्रेरित करने के लिए।' रेल मंत्री पीयूष गोयल ने रविवार को ट्वीट किया, 'प्रधानमंत्री के आह्वान पर मैं, सुरेश अंगड़ी एक महीने का वेतन, रेलवे और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के 13 लाख कर्मचारी अपना एक दिन का वेतन देंगे, जो करीब 151 करोड़ रुपये है।' रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक महीने का वेतन देने की घोषणा की है। सेना, नौसेना और वायुसेना के जवानों के साथ ही रक्षा मंत्रालय के कर्मचारी भी एक दिन का वेतन दान करेंगे।

गृह मंत्री अमित शाह ने जानकारी दी है कि केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की तरफ से 116 करोड़ का योगदान दिया जाएगा। केंद्रीय जांच ब्यूरो के अफसरों ने भी एक दिन का वेतन दान करने की घोषणा की है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने भी 21 लाख रुपये देने की घोषणा की है।

अडानी ग्रुप के गौतम अडानी ने 100 करोड़ रुपये देने का एलान किया है। जिंदल स्टील वर्क्स ने 100 करोड़ रुपये दान किया है। मैनकाइंड फार्मा ने भी 51 करोड़ रुपये दिए हैं। 'कोटक महिंद्रा बैंक और उदय कोटक ने 25-25 करोड़ रुपये तत्काल प्रधानमंत्री राहत कोष में दिए हैं।' फिल्म निर्माता और टी-सीरीज कंपनी के मालिक भूषण कुमार ने पीएम राहत कोष में 11 करोड़ रुपये देने का एलान किया है।

एमडीएच के महाशय धर्मपाल देंगे पांच करोड़ : एमडीएच समूह के चेयरमैन और प्रसिद्ध मसाला कारोबारी महाशय धर्मपाल ने अपने 97वें जन्मदिन के अवसर पर कोरोना वायरस की महामारी से पीड़ित लोगों की मदद के लिए पांच करोड़ रुपये दान देने की घोषणा की है।

भाजपा के सभी सांसद देंगे एक-एक करोड़

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : भाजपा के सभी सांसद 'प्रधानमंत्री केयर्स फंड' में एक-एक करोड़ रुपये देंगे। यह राशि एमपीलैड फंड से दी जाएगी। भाजपा विधायकों से भी कहा गया है कि वह विधायक फंड से मदद करें। केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर, पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, मानव संसाधन मंत्री समेत रमेश पोखरियाल निशंक समेत कइयों ने एक-एक महीने का वेतन भी कोष में दिया है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की ओर से सभी सांसदों से आग्रह किया गया था कि वह कोरोना से जंग के लिए एमपीलैड फंड से एक-एक करोड़ रुपये दें। रविवार को राज्यसभा सभापति एम. वेंकैया नायडू ने भी सभी सांसदों से एक-एक करोड़ की मदद करने का आह्वान किया था। इस बीच, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने ओडिशा, झारखंड, केरल, हिमाचल व उत्तराखंड के प्रदेश अध्यक्षों, संगठन महामंत्रियों व पदाधिकारियों से वीडियो कांफ्रेसिंग के जरिये बात की और उन्हें निर्देश दिया कि कोरोना से लड़ाई में सरकारी आदेशों के पालन में मदद करें।

कोरोना से लड़ने को लगातार बढ़ रहे मदद को हाथ : भाजपा सांसद रूपा गांगुली ने सांसद निधि से आठ करोड़ व व्यक्तिगत आय से एक माह का वेतन दान किया है। पीएम राहत कोष में भी सांसद रूपा गांगुली ने 5 करोड़ दिए हैं। शिअद के अध्यक्ष वेंटिलेटर के लिए सांसद निधि से एक करोड़ रुपये देने की घोषणा की है।

आइसीएमआर ने चेताया, जरा सी ढील फेर सकती है पानी

कोरोना पर सतर्क

- लॉकडाउन को लागू करने में चूक हुई तो इसे फैलने से रोकना मुश्किल होगा
- कम टेस्ट होने से मरीज कम दिखने के आरोपों को किया खारिज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लॉकडाउन को लेकर अभी भी कुछ स्तरों पर दिख रही सुस्ती व लापरवाही के बीच 'इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च' (आइसीएमआर) ने चेतावनी दी है कि लॉकडाउन के कड़ाई से पालन के जरिए ही इसे रोका जा सकता है। इसमें जरा सी ढील भी सारे प्रयासों पर पानी फेर देगी। वहीं इस आरोप को भी खारिज कर दिया है कि कम जांच होने के कारण कोरोना के मरीजों की संख्या कम दिख रही है।

सरकारी संस्थान आइसीएमआर के डॉ. रमन गंगाखेड़कर के अनुसार फिलहाल यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि कोरोना का प्रभाव देश में चरम पर पहुंच गया है और अब इसमें गिरावट आना तय है। उन्होंने कहा कि यदि लॉकडाउन को कड़ाई से लागू किया गया और लोगों ने सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया, तो कोरोना के मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी अभी रुक सकती है। लेकिन इसमें चूक हुई तो इसे फैलने से रोकना मुश्किल होगा। स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने कहा कि कोरोना वायरस को पूरी तरह से हराने के लिए लॉकडाउन और सरकार के अन्य दिशा-निर्देशों का सौ फीसद पालन करना होगा। इसमें 99 फीसद से भी काम नहीं चलेगा। डॉ. गंगाखेड़कर ने इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया कि भारत में कोरोना की जांच कम होने के कारण मरीजों की संख्या कम दिख रही है। उन्होंने कहा कि आज पूरे देश में हमारी आधारभूत संचरना मौजूद है और आइसीएमआर के 113 लैब में जांच की जा रही है। इसके अलावा 45 लैब चेन को भी जांच की अनुमति जा चुकी है। लेकिन हकीकत यह है कि आइसीएमआर के 113 लैब की कुल क्षमता का 30 फीसद का उपयोग हो रहा है। वहीं देश में 1400 टेस्ट प्रतिदिन की क्षमता वाले दिल्ली और भुवनेश्वर में दो रैपिड टेस्ट मशीन तैयार तो हैं, लेकिन किट की कमी के कारण काम शुरू नहीं किया है। डॉ. गंगाखेड़कर ने कहा कि कंपनी से किट सप्लाई में थोड़ी देर हो रही है, लेकिन यह जल्द ही काम करने लगेगा।

जनवरी में संकट भांप सरकार ने देश में ही पीपीई के उत्पादन का फैसला किया : कोरोना वायरस के खतरे के मद्देनजर पीपीई (यानी-गॉगल्स, फेस शील्ड, ग्लव्स, कवर ऑल गाउन, हेड कवर, शू कवर आदि) और एन-95 मास्क की बड़े पैमाने पर जरूरत की तुलना में बहुत कम उपलब्ध होने के बारे में पूछे जाने पर लव अग्रवाल ने कहा कि हम लगातार बढ़ती जरूरतों को ध्यान में रखकर आपूर्ति पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं। दरअसल इंवेस्ट इंडिया नाम के एक सरकारी संगठन ने अनुमान लगाया है कि देश में एन-95 मास्क 91 लाख उपलब्ध हैं, जबकि जरूरत 3.8 करोड़ की है। इसी तरह 62 लाख पीपीई की जरूरत है, लेकिन उपलब्ध केवल आठ लाख ही हैं। लव अग्रवाल ने कहा कि इंवेस्ट इंडिया ने केंद्र और राज्यों में मौजूद सभी स्टॉक को शामिल नहीं किया है। इसीलिए उसके आंकड़े सही नहीं हो सकते हैं। वहीं इन सामानों की जरूरत के अनुमान लगातार बदलते रहते हैं। एक महीना पहले जितनी जरूरत थी, आज की तारीख में वह बदल चुकी है। देश में पीपीई और एन-95 मास्क के जरूरी कपड़े व अन्य सामान की आपूर्ति विदेश से होती थी। लेकिन संकट को भांपते हुए सरकार ने निजी निर्माताओं और विशेषज्ञों के साथ मिलकर पीपीई के उत्पादन का फैसला किया। 10 कंपनियों ने उत्पादन शुरू कर दिया है। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय विदेश में इनकी उपलब्धता का पता लगाकर उन्हें आयात करने की कोशिश भी कर रहा है।

मानसिक परेशानियों के लिए टोल फ्री नंबर जारी

तीन हफ्ते का लॉकडाउन देश के 130 करोड़ लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता है। घर की चारदीवारी में कैद लोगों के व्यवहार के आक्रामक होने के साथ-साथ अन्य लक्षण भी सामने आ सकते हैं। यातायात पर प्रतिबंध होने और अस्पतालों के केवल जरूरी सेवाओं के लिए चालू होने कारण लोगों के लिए लॉकडाउन के तनाव से निपटना आसान नहीं होगा। इसे देखते हुए सरकार ने निम्हांस, बेंगलुरु की मदद से एक देशव्यापी टोल फ्री नंबर (8046110007) जारी किया है। कोई भी व्यक्ति इस दौरान अपने व्यवहार में चिड़चिड़ापन, आक्रामकता या अन्य किसी तरह के बदलाव को देखते हुए इस टोल फ्री नंबर पर संपर्क कर डॉक्टरों की सलाह ले सकता है। लव अग्रवाल ने कहा कि यह टोल फ्री नंबर सातों दिन 24 घंटे चालू रहेगा।

केंद्रीय विद्यालय 30 अप्रैल के बाद लेंगे पहली तिमाही की फीस

राहत ▶ 12 सौ केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ते हैं लगभग 12 लाख विद्यार्थी

सामान्य दिनों में पहली तिमाही की फीस जमा करने का काम एक से 15 अप्रैल तक चलता है

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के चलते देश भर में 21 दिनों के लंबे लॉकडाउन को देखते हुए केंद्रीय विद्यालय संगठन ने नए शैक्षणिक सत्र की पहली तिमाही की फीस जमा करने की तारीख बढ़ा दी है। अब यह 30 अप्रैल के बाद जमा होगी। इस पर अंतिम निर्णय 30 अप्रैल को स्थिति को देखने के बाद किया जाएगा। जरूरत हुई तो तिथि और आगे बढ़ सकती है। इस संबंध में संगठन ने संबंधित बैंकों से भी अपने फीस कलेक्शन पोर्टल को अपडेट करने को कहा है।

अभी कुछ दिन पहले ही लॉकडाउन के कारण होने वाली परेशानी को देखते हुए ही रिजर्व बैंक ने लोन की मासिक किस्तों यानी ईएमआइ से तीन महीने की राहत दी थी। उसी लाइन पर केंद्रीय विद्यालय संगठन ने भी फैसला लिया है। मौजूदा समय में देश भर में करीब 12 सौ केंद्रीय विद्यालय हैं, जिनमें करीब 12 लाख बच्चे पढ़ते है। इन सभी की फीस मौजूदा समय में बैंक के जरिये ऑनलाइन जमा होती है। साथ ही कुछ लोग बैंक से चालान के जरिये भी जमा कराते है। केंद्रीय विद्यालय संगठन के मुताबिक पहली तिमाही (अप्रैल से जून तक) की फीस जमा करने काम एक अप्रैल से शुरू हो जाता है। जो 15 अप्रैल तक चलता है। इसके बाद जमा करने पर फाइन देना होता है। ऐसे में विद्यालय संगठन के इस फैसले से छात्रों और अभिभावकों को राहत मिली है।

प्रतीकात्मक फोटो

जल्द आएगी कोरोना और इसे हराने वाले योद्धाओं पर किताब

नई दिल्ली, जागरण ब्यूरो

कोरोना वायरस सहित उससे जुड़ी हर सच्ची कहानी सरकार अब आम लोगों तक पहुंचाने की तैयारी में है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देश पर नेशनल बुक ट्रस्ट ने इस पर काम शुरू कर दिया है। इस पूरी योजना के तहत इससे लड़ने वाले योद्धाओं के साथ इससे प्रभावित परिवारों, बुजुर्गों, बच्चों व इस दौरान लोगों की पूरी सेवाभाव से मदद करने वालों लोगों की भी कहानी होगी। कोरोना को लेकर जागरूक करने और इससे न डरने की भी जानकारी दी जाएगी।

कोरोना से जुड़े शोध और अध्ययन को भी इस अध्ययन श्रृंखला में जगह दी जाएगी। सरकार ने यह कदम इसलिए भी उठाया है, क्योंकि इस महामारी की रफ्तार भले की आने वाले दिनों में कम होने की संभावना है, लेकिन जल्द ही खत्म होने वाली नहीं है। ऐसे में लोगों को आने वाले दिनों में भी इसे लेकर जागरूक और सतर्क रहना होगा। हालांकि जिस स्तर पर कोरोना से जुड़ी अध्ययन सामग्री को लाने की तैयारी चल रही है, उससे साफ है कि यह सामग्री 21 दिनों के लॉकडाउन के भीतर ही लोगों को पढ़ने के लिए उपलब्ध हो जाएगी। लॉकडाउन में घर में रह रहे लोगों को इस तनाव से बचाने के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट ने इससे पहले अपनी सभी प्रमुख किताबों को मुफ्त में आनलाइन लोगों के लिए उपलब्ध कराई है।

रेलवे के अस्पतालों में होगा सभी सरकारी कर्मियों का इलाज

नई दिल्ली, आइएएनएस : कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में मदद के लिए भारतीय रेलवे ने एक और कदम उठाया है। रेलवे ने सरकारी अस्पतालों पर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए अपने अस्पतालों को सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए खोलने का एलान किया है। आमतौर पर रेलवे के अस्पतालों में उसके ही कर्मचारियों के इलाज की अनुमति रहती है।

रेलवे की ओर से जारी बयान में कहा, 'कोविड-19 के कारण बनी संकट की स्थिति में रेल मंत्रालय ने फैसला किया है कि अपना पहचान पत्र दिखाकर सभी सरकारी कर्मचारी रेलवे के अस्पतालों में इलाज करा सकेंगे।' कोरोना वायरस से लड़ाई की दिशा में रेलवे ने पहले ही 14 अप्रैल तक अपनी सभी यात्री सेवाएं रोक दी हैं। फिलहाल केवल आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मालगाड़ी के संचालन की अनुमति है। रेलवे की कई निर्माण इकाइयों में सैनिटाइजर, मेडिकल कोट और कई अन्य जरूरी मेडिकल उपकरण का उत्पादन भी किया जा रहा है। रेलवे ने सोशल डिस्टेंसिंग में मदद के लिए कई जगहों पर सब्जी बाजार लगाने के लिए अपनी जमीनें भी दी हैं। रेलवे कोच को क्वारंटाइन सेंटर बनाने पर भी काम हो रहा है। इसके अलावा आपदा से निपटने के लिए रेलवे कर्मी सरकार की मदद कर रहे हैं।

पाकिस्तानियों को अपने देश लौटने की विशेष अनुमति

मानवता

- मेडिकल वीजा पर भारत आए थे यह सभी नागरिक, इन नागरिकों के लिए अटारी बार्डर खोला गया

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस की वजह से जिस तरह से अंतरराष्ट्रीय सीमाएं बंद की गई हैं उसे देखते हुए भारत में इलाज के लिए आए पाकिस्तानियों के समक्ष बहुत ही बड़ी समस्याएं पैदा हो गई है। अब भारत ने मानवता के आधार पर इन पाकिस्तानियों को अपने देश वापस जाने की इजाजत दे दी है। रविवार को इन पाकिस्तानियों के लिए अटारी बार्डर भी खोल दिया गया ताकि वे आसानी से अपने देश जा सकें। पहले जत्थे में पांच पाकिस्तानी नागरिक सुबह ही अपने देश लौट भी गए।

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इलाज के लिए जो भी पाकिस्तानी भारत मेडिकल वीजा पर आए हैं उन्हें स्वदेश जाने की विशेष अनुमति दी जा रही है। इसके पहले पिछले हफ्ते पाकिस्तान क्रिकेट लीग में बतौर टेक्नीशियन हिस्सा लेने गए करीब तीन दर्जन अपने नागरिकों को स्वदेश लौटने के लिए भारत ने उन्हें विशेष अनुमति दी थी। अभी दोनों देशों के बीच जो नियम है, उसके मुताबिक एक दूसरे देश के नागरिकों को जिस रास्ते से आये हैं उसी रास्ते से वापस लौटने का प्रावधान है। यह टेक्नीशियन भारत से दुबई व वहां से पाकिस्तान गये थे। लेकिन कोरोना वायरस की वजह से जब अंतरराष्ट्रीय उड़ानें बंद कर दी गईं तो वे पंजाब स्थित वाघा बार्डर पहुंच गये।

पहले तो वहां के अधिकारियों ने रोक दिया लेकिन बाद में विदेश मंत्रालय ने उन्हें विशेष अनुमति दे दी। अधिकारियों ने बताया कि देश के विभिन्न अस्पतालों में दर्जनों पाकिस्तानियों का इलाज चलने की संभावना है। अगर आगे भी ये स्वदेश जाने के लिए सामने आते हैं तो उन्हें इसकी अनुमति दी जाएगी।

सनद रहे कि कोरोना से पहले दोनो देशों के रिश्तों में बढ़ती तल्खी की वजह से एक दूसरे देशों में आने जाने का सिलसिला काफी कम हो गया है। भारत ने जब से कश्मीर से अनुच्छेद-370 समाप्ति की घोषणा की है तब से पाकिस्तान ने बस व ट्रेन सेवाओं पर भी रोक लगा दी है। भारत में मेडिकल वीजा के लिए आने वाले पाकिस्तानियों की संख्या भी सैकड़ों से घट कर दर्जनों में रह गई हैं।

कोरोना से निपटने की तैयारियों की समीक्षा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश में कोरोना वायरस महामारी से निपटने की तैयारियों के साथ ताजा हालात को लेकर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय बैठक हुई। बैठक में गृह मंत्री अमित शाह, सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर, पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान सहित अन्य वरिष्ठ मंत्री शामिल हुए।

सरकारी सूत्रों के मुताबिक बैठक में यह तय किया गया कि प्रवासियों को रहने के लिए अस्थायी आश्रय प्रदान किया जाएगा। बैठक के दौरान विभिन्न मंत्रालयों और विभागों की ओर से बैठक में जानकारी रखी गई।

सूत्रों ने बताया कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के आवास पर आयोजित मंत्रिस्तरीय समूह की बैठक में मंत्रियों ने कोविड-19 से संबंधित सभी मुद्दों पर चर्चा हुई, जिसमें खाद्य, दवा, ऊर्जा उत्पादों आदि जैसे आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बनाए रखना शामिल है। समीक्षा बैठक में आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई चेन बनाए रखने पर जोर दिया गया। पेट्रोलियम उत्पादों के साथ अन्य जरूरत के सामान की उपलब्धता पर बराबर नजर रखने की बात कही गई। आने वाले दिनों में कोरोना वायरस के बढ़ने की आशंका पर भी चर्चा करते हुए उसके लिए होने वाली तैयारियां की रणनीति बनाई गई।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के आवास पर रविवार को वरिष्ठ मंत्रियों की बैठक हुई। इसमें गृहमंत्री अमित शाह, राम विलास पासवान, रमेश पोखरियाल निशंक, प्रकाश जावडेकर और धर्मेंद्र प्रधान शामिल हुए। बैठक में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुचारू रूप से जारी रखने पर चर्चा हुई। एएनआइ

नवनियुक्त डॉक्टरों को तत्काल जॉइन करने का निर्देश

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) ने हाल ही में मेडिकल ऑफिसर के रूप में जुड़े 450 से ज्यादा लोगों को तत्काल जॉइन करने का निर्देश दिया है। कोविड-19 के कारण पैदा हुई चुनौतियों को देखते हुए सीएपीएफ ने यह कदम उठाया है।

आइटीबीपी के महानिदेशक सुरजीत सिंह देसवाल ने कहा, 'सभी सशस्त्र पुलिस बलों से हाल में जुड़े 450 से ज्यादा डॉक्टरों को तुरंत ड्यूटी पर आने को कहा गया है। इससे देश में कोरोना के कारण पैदा हुई चुनौती से निपटने में स्थिति मजबूत होगी।' केंद्रीय सशस्त्र बलों ने रिटायर हो चुके मेडिकल अफसरों को भी तैयार रहने को कहा है। उन्हें अनुबंध के आधार पर नियुक्त किया जा सकता है। इन्हें देशभर के अस्पतालों व क्वारंटाइन केंद्रों पर तैनात किया जाएगा। देश में विभिन्न केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के पास विभिन्न पैरामेडिकल स्टाफ के साथ-साथ 2,000 से ज्यादा डॉक्टरों एवं विशेषज्ञों का दल है।

देश के 90 शहरों में घटा प्रदूषण

नई दिल्ली, प्रेट्र : देशभर में लॉकडाउन का असर वातावरण पर दिखने लगा है। 90 से अधिक शहरों में पिछले कुछ दिनों में न्यूनतम वायु प्रदूषण दर्ज किया गया है। पर्यावरणविदों ने इसे वेक-अप कॉल के रूप में व्यवहार करने और पर्यावरण की कीमत पर विकास के जुनून को रोकने का आग्रह किया है। कोरोना वायरस के प्रकोप को देखते हुए देश में लॉकडाउन लागू कर दिया गया है। इसके तहत सरकार ने लोगों से घरों में रहने और अनावश्यक यात्रा से बचने का आग्रह किया है। इससे देशभर में लोगों की आवाजाही में काफी कमी आई है। सरकार द्वारा संचालित सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च (सफर) के अनुसार, कोरोना वायरस प्रकोप के कारण किए गए उपायों से दिल्ली में पीएम 2.5 में 30 फीसद की गिरावट आई है। अहमदाबाद और पुणे में इसमें 15 फीसद की कमी आई है।

नाइट्रोजन ऑक्साइड (एनओएक्स) प्रदूषण का स्तर, जो श्वसन स्थितियों के जोखिम को बढ़ा सकता है, भी कम हो गया है। एनओएक्स प्रदूषण मुख्य रूप से ज्यादा वाहनों के चलने से होता है। एनओएक्स प्रदूषण में पुणे में 43 फीसद, मुंबई में 38 फीसद और अहमदाबाद में 50 फीसद की कमी आई है।

सफर के एक वैज्ञानिक गुफरान बेग ने कहा कि आम तौर पर मार्च में प्रदूषण मध्यम श्रेणी (एयर क्वालिटी इंडेक्स रेंज : 100-200) में होता है, जबकि वर्तमान में यह संतोषजनक (एक्यूआइ 50-100) या अच्छी (एक्यूआइ 0-50) श्रेणी का है। उन्होंने कहा कि यह लॉकडाउन का प्रभाव है। उद्योग, निर्माण और यातायात को बंद करने जैसे स्थानीय कारकों ने वायु की गुणवत्ता को सुधारने में योगदान दिया है।

कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन के बाद वीरान पड़ा राजपथ का इलाका। (फाइल)

याचिका खारिज

चंडीगढ़ प्रशासन के फैसले को दी गई थी हाई कोर्ट में चुनौती, कोर्ट ने कहा, प्रशासन के नीतिगत फैसले में नहीं कर सकते हस्तक्षेप

कर्फ्यू में ढील के खिलाफ हस्तक्षेप से हाई कोर्ट का इन्कार

दयानंद शर्मा, चंडीगढ़

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए लागू में कर्फ्यू में ढील देने के चंडीगढ़ प्रशासन के फैसले में दखल देने से पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने इन्कार कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि प्रशासन ने यह फैसला पीजीआइ, हेल्थ और पुलिस अधिकारियों की सलाह पर लिया है। यह नीतिगत फैसला जनहित के लिए है, ऐसे में हाई कोर्ट इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता, क्योंकि हमारे पास नीतिगत फैसले में हस्तक्षेप करने के सीमित अधिकार हैं। हाई कोर्ट ने फिजिकल डिस्टेंसिंग बनाए रखने, इसका पालन नहीं करने वालों पर कार्रवाई करने और जरूरी चीजों की सप्लाई बनाए रखने के आदेश दिए।

जस्टिस राजीव शर्मा और जस्टिस आरके जैन ने रविवार सुबह 10 बजे वीडियो कान्फ्रेंस के जरिये सुनवाई शुरू की। कोर्ट ने फैसला दोपहर बाद तक सुरक्षित कर लिया और साढ़े तीन बजे के बाद जारी किया।

जनहित याचिका की गई थी दायर

चंडीगढ़ के आदित्यजीत सिंह चड्ढा की तरफ से दायर जनहित याचिका में कहा गया था कि कोरोना कोविड-19 वायरस ने चीन, अमेरिका, इटली, ईरान और पूरे यूरोप में हजारों जानें ले ली हैं। यह वायरस भारत के कई राज्यों में बड़ी तेजी से फैलता जा रहा है। चंडीगढ़ के लोग जागरूक हैं और वह इस खतरे को समझते हैं, लेकिन प्रशासन न जाने क्यों सुबह 10 से शाम छह बजे तक दुकानें खोलने का आदेश दिया है जो खतरनाक साबित हो सकता है। इससे कर्फ्यू का उद्देश्य भी बुरी तरह प्रभावित होगा।

23 मार्च को लगाया था कर्फ्यू

प्रधानमंत्री ने 22 मार्च की शाम को तीन सप्ताह तक पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा की थी। 23 मार्च की सुबह ही चंडीगढ़ प्रशासन ने कर्फ्यू लगा दिया, लेकिन 27 मार्च को 28 मार्च से सुबह 10 बजे से शाम छह बजे तक कर्फ्यू में ढील के आदेश दिए गए। इस दौरान दुकानें खुली रखने की छूट दी गई ताकि लोग आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी कर सकें।

ट्वीट कर घिरे प्रशासक के सलाहकार

चंडीगढ़ प्रशासक के सलाहकार मनोज परिदा ने 12:10 बजे ट्वीट कर नीति को सही ठहराने के लिए हाई कोर्ट का धन्यवाद कर दिया। कोर्ट के फैसले से पहले ही उनके धन्यवाद करने पर सवाल खड़ा हो गया।

प्रशासन की दलील : सीनियर स्टैंडिंग काउंसिल पंकज जैन ने हाई कोर्ट को बताया कि लोगों के हित के लिए कर्फ्यू में सशर्त ढील दी गई है। सुबह 10 से शाम छह बजे तक सभी जरूरी सामान की दुकानें जैसे वेरका बूथ, करियाना शॉप्स, केमिस्ट, सब्जी की दुकानें खोलने की छूट दी गई है। सामान लेने के घर का कोई एक शख्स जाएगा, वह भी पैदल। वाहन लाए तो जब्त कर लिया जाएगा। इस दौरान फिजिकल डिस्टेंसिंग जरूरी है। प्रशासन ने कहा कि पहले जरूरी सामान की आपूर्ति के लिए बस लगाई गई थी, जो अपर्याप्त थीं। कर्फ्यू में ढील का मतलब कर्फ्यू खत्म करना नहीं है। लोगों को जरूरी सामान खरीदने के लिए राहत दी जा रही है।

कह के रहेंगे माधव जोशी

दैनिक जागरण
सोमवार 30 मार्च 2020
www.jagran.com

कोरोना की वैक्सीन भी होगी बहुत जुदा

कोरोना वायरस (कोविड-19) जिस तेजी से फैला उतनी ही तेजी से इसकी वैक्सीन और दवा बनाने पर पूरी दुनिया में काम शुरू हो गया। अमेरिका में एक कंपनी ने तो बकायदा इंसानों पर ड्रग ट्रायल शुरू कर दिया है। यह वायरस जितना जुदा है उतनी ही इसकी वैक्सीन भी अलग होगी। ह्यूमन ट्रायल शुरू हो चुके हैं लेकिन, 18 माह में पहली वैक्सीन का व्यावसायिक उत्पादन शुरू हो जाएगा। तब तक सतर्कता और स्वच्छता के जरिये ही कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़नी होगी। दुनियाभर में 40 शोधकेंद्रों और कंपनियों की लैबों में कोरोना वायरस की वैक्सीन और संक्रमण को खत्म करने लिए दवा पर काम चल रहा है। यूरोप में तो इसके लिए नियमों में ढील देकर शोधकर्ताओं को प्राइवेट कंपनियों के साथ मिलकर शोध करने को कहा गया है। फिर भी माना जा रहा है कि पहली वैक्सीन व्यावसायिक रूप से 18 माह में उपलब्ध हो सकेगी।

अनोखी होगी वैक्सीन

दुनियाभर के शोधकर्ता के सामने कोरोना की सेल को तोड़ने की चुनौती है। शोधकर्ता उसका जैविक खोल तोड़ना चाहते हैं, यानी की उसके खतरनाक जैविक पदार्थ के लिए इंसान को तैयार किया जाएगा। कोरोना के स्पाइक्स एस-प्रोटीन से बने हैं, इन पर शोधकर्ताओं की विशेष नजर है, चिपकने की ताकत को वे खत्म करना चाहते हैं। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता जोनाथन हैनी भी इसी प्रयास में लगे हुए हैं। उन्होंने अपनी प्राइवेट लैब में ताकतवर कंप्यूटरों की मदद से कोरोना के जैविक पदार्थ के कई डुप्लीकेट भी बना डाले हैं, हालांकि वह मानते हैं कि अभी चुनौती तगड़ी है।

अनोखा है कोरोना वायरस

कोरोना वायरस अनोखा है। इसमें सिर्फ प्रोटीन और आरएनए (राइबोन्यूक्लिक एसिड) ही है। आरएनए एक जैविक पदार्थ होता है। इसके स्पाइक इसे खास बनाते हैं, जो इसे किसी भी सतह से चिपकने में मदद करते हैं। अपने स्पाइक की वजह से ही यह सिंथेटिक चीजों पर पांच दिन तक बना रहता है।

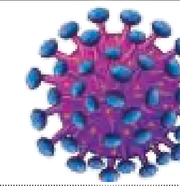

चीन ने दिखाई फुर्ती

चीन पर हुबेई प्रांत की राजधानी वुहान में फैले कोरोना वायरस संक्रमण की जानकारी समय से नहीं देने का आरोप है। इजरायल व अमेरिका का आरोप है कि उसने जैविक हथियार के रूप में कोरोना को तैयार किया। चीन के वैज्ञानिकों ने तेजी से कोरोना का आरएनए कोड तोड़ दिया और पूरी दुनिया को बता भी दिया, ताकि शोध का काम तेजी से हो सके। 30 जनवरी को चीन के शोधकर्ताओं ने डब्ल्यूएचओ को बताया कि 29,903 न्यूक्लियस बेस हैं। इनके कोड चीन ने दुनियाभर में सार्वजनिक किए। इसी कारण दुनिया में हांगकांग से लेकर अमेरिका तक में 43 वैक्सीन का निर्माण लगभग अंतिम चरण में है।

नियमों का जाल

इंसान के शरीर में जैविक वैक्सीन डालने के लिए अभी कोई स्पष्ट नियम नहीं हैं। ऐसे में विभिन्न देशों और डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) को प्रॉटोकॉल बनाना होगा। डॉ. हैनी मानते हैं कि यह बड़ी चुनौती है। भले ही इंसानों पर ट्रायल शुरू हो गया है लेकिन, व्यवसायिक प्रोडक्शन में नियमों की अस्पष्टता और लाइसेंस की शर्तें रोड़ा अटकाएंगी। इसलिए बहुत तेजी से काम करने पर भी 18 माह का वक्त कम से कम लग जाएगा।

20 साल के मुकाबले 20 माह

दुनियाभर के शोधकर्ताओं के निशाने पर खतरनाक पोलियो वैक्सीन 20वीं शताब्दी के शुरुआत में ही आ गई थी। पहली वैक्सीन 1955 में जोनास साल्क और 1960 में एल्बर्ट ब्रूस ने पोलियो की वैक्सीन विकसित कर ली। इनका बड़े स्तर पर व्यावसायिक उत्पादन नहीं हो पाता था। यह हालत 1980 तक रही। इसके बाद वैज्ञानिकों ने वैक्सीन के बड़े स्तर पर उत्पादन का तरीका खोजा। जापानी बुखार हो या टीबी, इनकी वैक्सीन के ह्यूमन ट्रायल से मास उत्पादन तक जाने में 20-20 साल से अधिक का वक्त लग जाता था। हालांकि कोरोना के खिलाफ जंग हम 18 माह में जीत लेंगे।

देश में दो और मौतें, 1100 से ज्यादा वायरस से संक्रमित

बिगड़ती स्थिति ▶ महाराष्ट्र और केरल दोनों ही राज्यों में पीड़ितों की संख्या 200 के पार

गुवाहाटी स्थित सारुसजाई स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में बेड लगाते कर्मचारी। इस कांप्लेक्स को कोरोना वायरस के मद्देनजर क्वारंटाइन केंद्र में बदला जा रहा है। रायटर

गुजरात और जम्मू-कश्मीर में एक-एक व्यक्ति ने तोड़ा दम, आंकड़ा 27 पर पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसियां : देश में कोरोना वायरस के मामले बढ़ते जा रहे हैं। पिछले चौबीस घंटे में 135 नए मामले सामने आए और संक्रमितों का आंकड़ा 11 सौ को पार कर गया है। इनमें विदेशी नागरिक और वायरस के चलते जान गंवाने वाले भी शामिल हैं। 99 लोग अब तक स्वस्थ हो चुके हैं। रविवार को गुजरात और जम्मू-कश्मीर में एक-एक व्यक्ति की जान चली गई है और मरने वालों की संख्या 27 हो गई है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्यों के स्वास्थ्य विभागों की तरफ से मिली जानकारियों के मुताबिक देश में अभी तक कोरोना वायरस के 1,123 पॉजिटिव केस पाए गए हैं। 27 लोगों की मौत हो चुकी है। इनमें महाराष्ट्र में छह, गुजरात में पांच, कर्नाटक में तीन, मध्य प्रदेश, दिल्ली और जम्मू-कश्मीर में दो-दो और केरल, तेलंगाना, तमिलनाडु, बिहार, पंजाब, बंगाल और हिमाचल प्रदेश में एक-एक व्यक्ति शामिल हैं।

महाराष्ट्र में अभी तक सबसे ज्यादा 203 लोग संक्रमित हुए हैं। रविवार को 22 नए मामले सामने आए। 34 लोग स्वस्थ हो चुके हैं। 20 नए केस के साथ केरल में संक्रमितों की संख्या 202 हो गई है। नए मामलों में कन्नूर में आठ और कासरगोड में सात केस शामिल हैं। राज्य में अब तक 20 स्वस्थ हो चुके हैं। राजस्थान में दो नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों की संख्या 56 हो गई है। 23 नए मामलों के साथ दिल्ली में 72 संक्रमित हो गए हैं। पांच नए मामलों के साथ जम्मू-कश्मीर में 38, चार नए केस के साथ बिहार में 15 और 16 नए मामलों के साथ उत्तर प्रदेश में संक्रमितों की संख्या 81 पर पहुंच गई है। गुजरात में रविवार को पांच नए केस सामने आए और पीड़ितों की संख्या 63 पर पहुंच गई।

कर्नाटक में सात नए केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 83 हो गई है। तमिलनाडु में आठ नए मामले मिले हैं और संक्रमितों की संख्या 50 हो गई है। मध्य प्रदेश में छह नए केस सामने आए हैं और संख्या 40 हो गई है। गोवा में दो नए पॉजिटिव केस मिले हैं और संक्रमितों की संख्या पांच हो गई है। हरियाणा में 21, आंध्र प्रदेश में 19, लद्दाख में 13, तेलंगाना में 67, बंगाल में 17, चंडीगढ़ में आठ, छत्तीसगढ़ में सात, हिमाचल में तीन, और उत्तराखंड में अभी तक सात संक्रमित पाए गए हैं। सेना के एक डॉक्टर और एक कमिशंड अधिकारी को भी कोरोना से संक्रमित पाया गया है।

कोरोना का प्रसार

महाराष्ट्र	203
केरल	202
कर्नाटक	83
तेलंगाना	67
गुजरात	63
उत्तर प्रदेश	81
राजस्थान	56
दिल्ली	72
पंजाब	38
हरियाणा	21
तमिलनाडु	50
मध्य प्रदेश	40
लद्दाख	13
जम्मू-कश्मीर	38
आंध्र प्रदेश	19
बंगाल	17
चंडीगढ़	8
बिहार	15
छत्तीसगढ़	7
अंडमान-निकोबार	9
उत्तराखंड	7
हिमाचल प्रदेश	3
गोवा	5
ओडिशा	3
पुडुचेरी	1
मणिपुर	1
मिजोरम	1

उत्तर प्रदेश में 81 हुई कोरोना से पीड़ित मरीजों की संख्या

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

▶ मेरठ में आठ, नोएडा में पांच, गाजियाबाद में दो व बरेली में एक मरीज और मिला

▶ अब तक कुल 14 मरीजों को स्वस्थ घोषित कर अस्पताल से मिल चुकी है छुट्टी

उप्र में रविवार को कोरोना वायरस से संक्रमित 16 नए मरीज पाए गए। इनमें मेरठ के आठ, नोएडा के पांच, गाजियाबाद के दो व बरेली का एक मरीज शामिल है। इस तरह प्रदेश में कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों की संख्या 81 हो गई है। सर्वाधिक 32 मरीज नोएडा के हैं। नोएडा में इतनी बड़ी संख्या में मरीज सामने आने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा रजनीश दुबे को वहां हेलीकॉप्टर से भेजकर हालात सुधारने के निर्देश दिए हैं। वहां स्वास्थ्य विभाग की टीम ने भी पूरी ताकत झोंक दी है।

नोएडा के अलावा अब तक आगरा में 10, लखनऊ में आठ, गाजियाबाद में सात, मेरठ में 13, पीलीभीत और वाराणसी में दो-दो और लखीमपुर खीरी, बागपत, मुरादाबाद, कानपुर, जौनपुर, शामली व बरेली में एक-एक मरीज मिले हैं। कोरोना वायरस प्रदेश के 14 जिलों में पांव पसार चुका है। रविवार को 170 संदिग्ध मरीजों को विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया। नोएडा में अभी तक जो 32 मरीज पाए गए हैं, उनमें से कई एक बड़ी कंपनी के अधिकारी व कर्मचारी हैं। कंपनी का एक अधिकारी बीते दिनों ब्रिटेन की यात्रा कर लौटा था और उसमें कोरोना वायरस पाया गया। इसके बाद दूसरे अधिकारी व कर्मचारी उसके संपर्क में होने के कारण संक्रमित होते चले गए। दूसरी ओर, कोरोना वायरस से संक्रमित अब तक कुल 14 मरीजों को स्वस्थ घोषित कर अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है। जो मरीज स्वस्थ घोषित हुए हैं उनमें आगरा के सात, नोएडा के चार, गाजियाबाद के दो व लखनऊ का एक मरीज शामिल है।

आरआरटी ने एक दिन में 9106 संदिग्ध किए चिह्नित

स्वास्थ्य विभाग की रैपिड रिस्पांस टीम (आरआरटी) व डब्ल्यूएचओ की टीम ने रविवार को 9106 ऐसे लोगों को चिह्नित किया जो चीन सहित कोरोना वायरस प्रभावित देशों की यात्रा कर लौटे हैं। इन्हें कम से कम 28 दिन के होम क्वारंटाइन में रखने को कहा गया है। अभी तक करीब 52082 ऐसे लोग चिह्नित किए जा चुके हैं जो चीन या कोरोना प्रभावित दूसरे देशों की यात्रा कर वापस लौटे हैं।

2430 संदिग्ध मरीजों की हो चुकी है प्रदेश में जांच

प्रदेश में अभी तक कोरोना वायरस के 2430 संदिग्ध मरीजों की जांच करवाई जा चुकी है। इसमें से 2305 संदिग्ध मरीजों की जांच रिपोर्ट नेगेटिव आई है यानी इनमें कोरोना वायरस नहीं पाया गया। वहीं 53 मरीजों की जांच रिपोर्ट अभी आना बाकी है। प्रदेश में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या पिछले चार दिनों के दौरान तेजी से बढ़ी है।

लखनऊ पीजीआइ में भर्ती कनिका की चौथी रिपोर्ट भी पॉजिटिव

जागरण संवाददाता, लखनऊ : पीजीआइ, लखनऊ में भर्ती कोरोना पॉजिटिव बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर की चौथी जांच रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई है। चौथी जांच में भी वायरल लोड मिलने पर गायिका की बेचैनी बढ़ गई है। मगर, डॉक्टरों ने हालत स्थिर बताकर उनको ढाढ़स बंधाया।

लंदन से लौटीं कनिका ने लखनऊ में कई जगहों पर आयोजित पार्टियों में शिरकत की थी। इन पार्टियों में शिरकत करने वाले कई मंत्री, तमाम हाई प्रोफाइल लोग अब भी होम क्वारंटाइन में हैं। नियमों को दरकिनार कर कई लोगों की जान सांसत में डालने वाली कनिका की तबीयत खराब होने पर 19 मार्च को उनके महानगर स्थित शालीमार गैलंट आवास से सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा गया। केजीएमयू में 20 मार्च को जांच में कनिका में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई थी। इसके बाद हड़कंप मच गया था। वह दस दिन से पीजीआइ में भर्ती हैं। केजीएमयू में पहली जांच के बाद पीजीआइ में अब तक तीन जांचें हो चुकी हैं। सभी में उनमें कोरोना वायरस बरकरार मिला। रविवार को आई चौथी रिपोर्ट में भी वायरल लोड मिलने पर कनिका बेचैन हो गईं। इसके बाद डॉक्टरों ने उन्हें हालत स्थिर होने का दिलासा दिया। साथ ही बताया कि वायरल लोड कम होने में दो से तीन हफ्ते का वक्त लगता है।

कनिका कपूर फाइल

कोरोना से लड़ने में काम आएंगे ये कुशल 'सिपाही'

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ कौशल विकास मंत्रालय ने एक लाख प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की फौज तैयार की

▶ राष्ट्रीय कौशल विकास केंद्रों को क्वारंटाइन सेंटर में बदलने का प्रस्ताव

कोरोना वायरस की चुनौती से निपटने के लिए कौशल विकास मंत्रालय ने एक लाख प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की फौज तैयार की है। इसके साथ ही मंत्रालय ने कोविड-19 के पीड़ितों को आइसोलेशन में रखने के लिए अपने राष्ट्रीय कौशल विकास केंद्रों को क्वारंटाइन सेंटर में बदलने का प्रस्ताव भी स्वास्थ्य मंत्रालय को सौंपा है। कौशल विकास केंद्रों के स्किल इंडिया के तहत जिन एक लाख युवक व युवतियों को स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रशिक्षण देकर तैयार किया गया है, उनकी सूची स्वास्थ्य मंत्रालय को दे दी गई है।

कोविड-19 के प्रकोप को रोकने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय को जिन एक लाख कुशल स्वास्थ्य कर्मियों की सूची सौंपी गई है, उनमें 92,040 हेल्थ केयर ट्रेनी, 373 रेडियोलॉजिस्ट एक्सपर्ट, 989 इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन, 299 एक्स-रे टेक्नीशियन, 530 फ्रंट लाइन वर्कर, 10,171 जनरल ड्यूटी असिस्टेंट, 334 फ्लेबोटोमी टेक्नीशियन प्रमुख हैं। कोरोना वायरस से पीड़ितों की देखभाल में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए तैयार किए गए स्वास्थ्य कर्मियों का उपयोग किया जा सकता है। केंद्रीय कौशल विकास मंत्री डॉक्टर महेंद्र नाथ पांडेय ने बताया कि उनके मंत्रालय की ओर से हर संभव मदद मुहैया कराई जा रही है। स्वास्थ्य कर्मियों के साथ अन्य तरह की सुविधाएं भी स्वास्थ्य मंत्रालय को मुहैया कराई जाएंगी। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि देशभर में स्थापित राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थानों को जरूरत पड़ने पर क्वारंटाइन सेंटर के रूप में तब्दील कर दिया जाएगा। इसके लिए तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इसके लिए स्वास्थ्य मंत्रालय के इशारे भर की जरूरत है। वैसे इन सेंटरों को क्वारंटाइन सेंटर बनाने का निर्देश राज्य सरकारों के साथ केंद्र शासित प्रदेशों को भेज दिया गया है। इन सेंटरों को मरीजों के लिए सुविधाओं के लिए वेंटीलेटर, पीपीई, मास्क और दवाओं से लैस किए जाने की बुनियादी जरूरत है। उन्होंने कहा कि देश में कोरोना पीड़ित मरीजों की संभावित संख्या के मद्देनजर युद्ध स्तर की तैयारियों की जरूरत है। इसके लिए उनके मंत्रालय की ओर से तैयारियां की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि अपने एक महीने का वेतन अपने मंत्रालय के सभी कर्मचारियों के साथ प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा कराने का फैसला किया है।

समय का सदुपयोग करें

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि लॉकडाउन की इस अवधि का सदुपयोग कीजिए। इसका इस्तेमाल अपने आप से, अपने परिवार से और अपनी इच्छाओं से जुड़ने में कीजिए। इस संकट की घड़ी ने आपको अपने कुछ सपने पूरे करने का मौका दिया है। उन्होंने कहा, 'मैंने सोशल मीडिया पर देखा कि कई लोग वर्षों से घरों में ऐसे ही रखे वीणा और तबला पर प्रैक्टिस कर रहे हैं। आप भी ऐसा ही कुछ रचनात्मक कर सकते हैं।' मोदी ने ऐसे कई लोगों का नाम भी लिया, जो इस समय का इस्तेमाल सकारात्मक तरीके से कर रहे हैं।

लगभग आधे घंटे के संबोधन में प्रधानमंत्री ने कोरोना मरीजों के इलाज में जुटे डॉक्टरों और नर्सों की खुलकर प्रशंसा की। लॉकडाउन में सामानों की कमी न हो इसके लिए जुटे दुकानदारों की भी प्रशंसा की। उन्होंने ऐसे कुछ लोगों से बात कर उनका अनुभव भी सुना जो कोरोना से संक्रमित पाए गए थे लेकिन अब ठीक होकर घर लौट चुके हैं और क्वारंटाइन में हैं। आगरा के एक परिवार के छह लोग संक्रमित हो गए थे, लेकिन अब सभी दुरुस्त होकर घर वापस आ गए हैं। मोदी ने दिल्ली एम्स और पुणे के डॉक्टरों से भी बात की। इसके जरिये पीएम का संदेश यही था कि कोरोना ऐसा संक्रमण है, जिसका इलाज बहुत कठिन नहीं है। लेकिन इससे बचाव सबसे ज्यादा जरूरी है, वरना यह बड़ी समस्या खड़ी कर सकता है।

घर में छोटा, जोश में बड़ा

जासं, आगरा

▶ प्रधानमंत्री से बात के बाद जागरण से साझा किए आइसोलेशन के दिन

▶ हर पल एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते रहे अशोक से स्वजन

कोई भी जंग जीतने के लिए तीन चीजें चाहिए-अनुभव, हथियार और जोश। कोरोना के खिलाफ जंग में भी यही तीन चीजें काम आईं। प्रधानमंत्री के मन की बात सुनने और अपने मन की बात सुनाने वाले आगरा शहर के जूता कारोबारी अशोक कपूर के स्वजन ने कोरोना की जंग इन्हीं तीनों चीजों के भरोसे जीती। इस परिवार के छह सदस्य व इनका अकाउंटेंट प्रदेश में सबसे पहले कोरोना पाजिटिव घोषित किए गए मरीज थे। अब सभी पूरी तरह से स्वस्थ हैं। प्रधानमंत्री की तरफ से कुशलक्षेम पूछने के बाद अब यह परिवार दूसरों के लिए रोल मॉडल बन गया है।

कपूर परिवार में अनुभव मुखिया अशोक कपूर का था। हथियार सजगता और चिकित्सकों की सहायता बना और जोश भर रहा था 10वीं का छात्र और परिवार का सबसे छोटा सदस्य तनिश। जागरण से बातचीत में अशोक कपूर ने बताया कि दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में जब वह भर्ती थे तो आपस में हिम्मत देने और बढ़ाने का एक मात्र सहारा मोबाइल और वीडियो कालिंग ही थी। सभी को तनिश की चिंता थी पर तनिश रोज खुद पूछता- दादू कैसे हैं। उसका इतना पूछना ही हम सब में जोश भर देता। पिता सुमित कपूर भी तनिश का हालचाल लेते तो वह अपनी कुशलता बताने से पहले उन्हें ही जोश से भर देता। बकौल अशोक कपूर, फोन पर बच्चे समझाते थे। अब सब ठीक है, कोई परेशानी नहीं है। तनिश पल भर को भी परेशान नहीं हुआ।

बच्चे फोन पर समझाते रहे

रात को नींद नहीं आती थी। मन को समझाने की कोशिश की पर बार-बार नकारात्मक विचार आते। घबराहट होने लग जाती थी, लेकिन जब फोन पर बच्चे समझाते तो राहत मिलती। अब सब ठीक है।

-सुनीता, अशोक कपूर की पत्नी

बेटा नहीं घबराया

दिमाग में चल रहा था कि यह क्या हो गया। मगर, डॉक्टरों ने कहा- तुम सभी स्वस्थ हो इसलिए कोई परेशानी नहीं होगी। डॉक्टर के ये शब्द हम सभी का हौसला बढ़ाता थे। हमारे पूरे परिवार में तनिश सबसे मजबूत था। हम सभी घबरा गए, लेकिन बेटा नहीं घबराया।

-सुमित कपूर, उम्र 44 साल

घर आने के बाद भी शारीरिक दूरी बना रहे

आइसोलेशन रूम से बाहर नहीं निकल सकते थे। खुद अपने कपड़े धोए। घर आने के बाद हम सभी शारीरिक दूरी बना रहे हैं। हमने लोगों को जागरूक करने के लिए वीडियो भी जारी किए हैं।

-अमित कपूर, उम्र 38 साल

सावधानी बरतने से बच सकते हैं लोग

दिल्ली में अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद पति और बेटे की चिंता सताती रही, क्योंकि ये दोनों हम लोगों के पांच दिन बाद घर आए। अब पूरा परिवार एक साथ है और खुश है। कोरोना को लेकर भ्रम अधिक है, सावधानी बरतने से बच सकते हैं।

-सारिका कपूर, उम्र 37 साल

कोरोना से डर नहीं लगा

10वीं की बोर्ड परीक्षा का दूसरा पेपर था, सुबह तैयार हो रहा था। तभी बताया गया कि पेपर देने नहीं जाना है। थोड़ी निराशा हुई, क्योंकि तैयारी बहुत अच्छी थी। आइसोलेशन के दौरान कभी भी डर नहीं लगा।

-तनिश कपूर, उम्र 16 साल

हम सभी लोग अलग-अलग आइसोलेशन रूम में भर्ती थे

जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद दो मार्च को जिला अस्पताल से दो एंबुलेंस मिलीं, एक एंबुलेंस में दोनों बेटे और एक एंबुलेंस में मैं, मेरी पत्नी, बेटे की बहू और पोता था।
हम अनिश्चितता में थे, लेकिन दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में पहले से ही पूरी तैयारी थी। पहुंचते ही गेट पर सफेद किट (पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्यूपमेंट) पहने स्टाफ खड़ा था। उन्होंने पांचवीं मंजिल पर हम सभी को अलग-अलग आइसोलेशन रूम में भर्ती कर दिया। बीमारी का पता नहीं था, पर यह था कि पूरा परिवार ठीक हो जाए और यहां से जल्द घर जाएं। अस्पताल में किसी के रूम में नहीं जा सकते थे। फोन पर एक-दूसरे से पूछ लेते थे, क्या हाल हैं? दिल्ली में रहने वाले रिश्तेदार सुबह-शाम निर्धारित समय पर अस्पताल आते, हम लोग भी खिड़की पर आ जाते, सभी नीचे से हाथ हिलाकर हमारा जोश बढ़ाते। डॉक्टर सुबह शाम तीन बार पल्स, ब्लड प्रेशर और बुखार जांचते थे।

-अशोक कपूर, उम्र 73 साल (दोनों घुटनों का प्रत्यारोपण हो चुका है)।

करें सहयोग

मार्च के बिल के साथ अप्रैल का बिल एडवांस चुका दीजिए, उसका हौसला बढ़ जाएगा

इस बार अपने समाचार पत्र वितरक को खुश कर दीजिए

जागरण संवाददाता, लखनऊ

कोरोनाजन्य लॉकडाउन ने हमें वर्क फ्रॉम होम के लिए मजबूर कर दिया। हम अपने परिवार के साथ सुरक्षा-स्वच्छता मानकों का पालन करते हुए अपनी सारी जिम्मेदारियां निभा रहे हैं, पर हर सुबह हमारे दरवाजे पर समाचार पत्र पहुंचाने वाले वितरकों के पास यह विकल्प नहीं है। उनकी भोर में जागकर सेंटर पहुंचने, अखबार का बंडल उठाने और फिर हमारे दरवाजे तक पहुंचाने की कठिन दिनचर्या पूर्ववत जारी है।

कोरोना की दहशत के बीच ड्यूटी कर रहे चिकित्साकर्मियों, पुलिसकर्मियों और मीडियाकर्मियों के लिए प्रधानमंत्री ने तालियां-थालियां बजवा दीं तो क्यों न हम-आप इस महीने अपने समाचार पत्र वितरक को भी खुश कर दें। अगले सप्ताह उन्हें मार्च के साथ अप्रैल का भी एडवांस बिल भुगतान कर दीजिए। आपकी सदाशयता से उस कर्मयोगी का हौसला बढ़ जाएगा और परिवार के भरण-पोषण की सहूलियत भी।

सभी मीडिया संस्थानों के अलावा केंद्र सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, देश-प्रदेश के शीर्षस्थ चिकित्सा संस्थानों, अनुसंधान संस्थानों, माइक्रोलॉजी विज्ञानियों और दिग्गज हस्तियों द्वारा तार्किक ढंग से स्पष्ट कर दिए जाने के बाद यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि समाचार पत्रों के जरिए कोरोना संक्रमण की आशंका निर्मूल है। यह भरोसा पक्का करने के लिए बड़ी हस्तियां अखबार पढ़ते हुए अपने चित्र वायरल कर रही हैं। इससे स्वाभाविक रूप से समाचार पत्र वितरकों और पाठकों के मन से आशंकाएं दूर हो गई हैं और समाचार पत्र कोरोना समेत सभी सामयिक विषयों पर अद्यतन एवं प्रामाणिक कंटेंट अपने पाठकों तक पहुंचाने की भूमिका पूरे मनोयोग से निभा रहे हैं।

देश-दुनिया की सारी तटस्थ एजेंसियां मान रही हैं कि कोरोना को लेकर तरह-तरह की अफवाहों और अवैज्ञानिक सूचनाओं की भरमार से विचलित हुए बगैर समाचार पत्रों ने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी का परिचय देते हुए सिर्फ विश्वसनीय समाचार ही आप तक पहुंचाए। चूंकि अन्य माध्यमों की सूचनाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता, इसलिए लॉकडाउन के दौरान समाचार पत्र ही आपके पास एकमात्र भरोसेमंद माध्यम हैं।

वैसे भी समाचार पत्र, खासकर दैनिक जागरण आपके परिवार के सदस्य जैसा है और इसे हर सुबह आपके दरवाजे पर पहुंचाने वाला वितरक आपके परिवार का शुभचिंतक। समाचार पत्र आपको हर रोज निर्बाध मिलता रहे, इसके लिए जरूरी है कि समाचार पत्र वितरक का हौसला बुलंद रहे। आपके पास अवसर है कि अगले सप्ताह अपने समाचार पत्र वितरक को कोरोना संक्रमण से बचाव के सारे एहतियात का पालन करते हुए अपने दरवाजे बुला लें और दो महीने का बिल भुगतान कर उसके कठिन कर्तव्य निर्वहन की सराहना करें। आपके पास अन्य माध्यमों से भी बिल भुगतान का विकल्प मौजूद है। तो आइए, इस महीने खुश कर देते हैं अपने समाचार पत्र वितरक को।

सूचनाओं के लिए रोज 200 लोगों से बात करते हैं प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोरोना वायरस से निपटने की देश की जंग को लेकर ताजा जानकारी हासिल करने के लिए प्रतिदिन 200 से अधिक लोगों से बात करते हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने रविवार को यह जानकारी दी।

पीएमओ के मुताबिक प्रधानमंत्री की इस संवाद प्रक्रिया में राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों और राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों के साथ टेलीफोन कॉल शामिल होती हैं। इसके अलावा पीएम देश के अलग-अलग हिस्सों के डॉक्टरों, नर्सों, स्वास्थ्य कर्मियों और साफ-सफाई से जुड़े लोगों के साथ भी बातचीत करते हैं। पीएम की कोशिश इसके जरिये इन सभी का उत्साह बढ़ाने और उनके प्रति आभार जताने की होती है।

मोदी कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सामाजिक जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों से भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये बात करते हैं। वह टेलीफोन के जरिये उन लोगों से भी संवाद करते हैं जो कोरोना वायरस के संक्रमण का सामना कर रहे हैं और जो इससे उबर चुके हैं। इसके अलावा प्रधानमंत्री प्रतिदिन कई बैठकों में भी भाग ले रहे हैं, जिनमें उन्हें कैबिनेट सचिव और प्रधान सचिव की ओर से अपडेट दिए जाते हैं। पीएम को सरकार की ओर से उठाए जा रहे कदमों के बारे में मंत्रिसमूह भी जानकारी देता है।

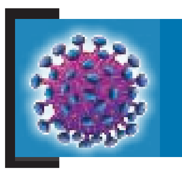

कोरोना को हराना है

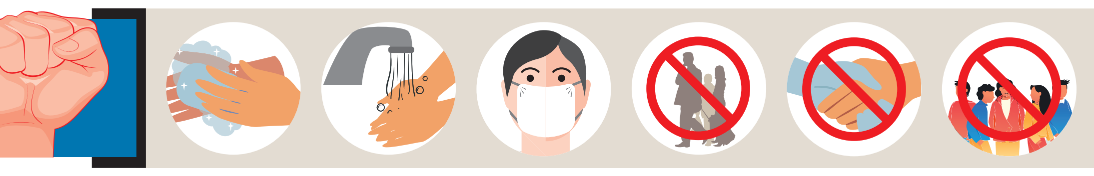

इंटरनेट को भी डरा रहा है कोरोना

56 करोड़ लोग भारत में इंटरनेट डाटा का इस्तेमाल कर रहे हैं

85 करोड़ लोग चीन में इंटरनेट डाटा का इस्तेमाल करते हैं

1.5 लाख नए लोगों ने ग्रुप वीडियो कॉल एप जूम की सेवा पिछले दिनों खरीदी

31 करोड़ लोग अमेरिका में इंटरनेट डाटा का उपयोग करते हैं

30% बढ़ गई गूगल क्लाउड की मांग

फरवरी 2017 में नैस्कॉम समिट का उद्घाटन करते हुए रिलायंस ग्रुप के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने इंटरनेट डाटा का महत्व समझाते हुए कहा था कि इंटरनेट डाटा आधुनिक समय का तेल है, इसका समझदारी से इस्तेमाल करना चाहिए। उस समय फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग समेत कई टेक्नोलॉजी एक्सपर्ट ने अंबानी की बात को खारिज करते हुए कहा था कि सभी के लिए पर्याप्त डाटा पूरी दुनिया में मौजूद है। अब जब कोरोना वायरस के कारण पूरी दुनिया खौफ में है। अमेरिका से लेकर यूरोप तक में लॉकडाउन है और लोगों को घरों से काम करने को कहा गया है, तब अचानक ही मोबाइल सेवा मुहैया कराने वाली बड़ी-बड़ी कंपनियों की रूह कांपने लगी है कि बढ़ते ट्रैफिक की वजह से कहीं आधुनिक विश्व का यह नर्वस सिस्टम ब्रेकडाउन न हो जाए। अमेरिका में हालात बिगड़े हुए हैं, जबकि इटली तो घुटने पर आ चुका है। भारत में स्थिति बिगड़ी है लेकिन, सेल्युलर ऑपरेटर्स ऑफ इंडिया (सीओएआइ) ने हालात काबू होने की बात कहते हुए सरकार से अतिरिक्त स्पेक्ट्रम देने की मांग की है। वैसे भी पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा डाटा इस्तेमाल भारत में ही होता है, ऐसे में हमें ज्यादा चिंता करने की आवश्यकता है।

जुकरबर्ग ने माना, हालात हैं खराब

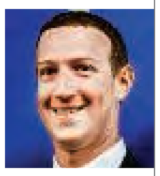

इंस्टाग्राम और वाट्सएप जैसे बेहद लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का मालिकाना हक रखने वाली कंपनी फेसबुक के सीईओ मार्क **जुकरबर्ग** मानते हैं कि हालात खराब है। अपनी आधिकारिक पोस्ट में वह कहते हैं कि हम किसी तरह अपनी सेवाएं चालू रखने के लिए जूझ रहे हैं। गौरतलब है कि फेसबुक, इंस्टाग्राम और वाट्सएप पर ट्रैफिक में अचानक ही पूरी दुनिया में 30 से 50 फीसद की बढ़ोतरी हो गई है। इसी कारण कंपनी ने यूट्यूब पर स्ट्रीमिंग की क्वालिटी गिरा दी है।

ओटीटी बने समस्या

ऑनलाइन एंटरटेनमेंट कंटेंट उपलब्ध कराने वाले नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम जैसे तमाम ओटीटी प्लेटफॉर्म इंटरनेट सेवा देने वाली कंपनियों के लिए सिरदर्द बन गए हैं। वॉक्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक ओटीटी पर सिर्फ न्यूयॉर्क में 40 फीसद ट्रैफिक की बढ़ोतरी हो गई है। हालांकि नेटफ्लिक्स ने भी अपनी स्ट्रीमिंग क्वालिटी गिराकर हालात पर काबू पाने की कोशिश की है।

बढ़ गया है डाटा का खर्च

इंटरनेट इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी क्लाउड फ्लेयर ने दावा किया है कि अमेरिका में लॉकडाउन के दौरान डाटा का इस्तेमाल 20 फीसद बढ़ गया है। ऑनलाइन गेमिंग में डाटा का खर्च अचानक 60 फीसद बढ़ गया। टेक्नोलॉजी कंपनियों के घर के रूप में मशहूर सिएटल में इंटरनेट डाटा का खर्च 40 फीसद बढ़ गया है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही डाटा के बढ़ते खर्च पर काबू नहीं पाया गया और सपोर्ट सिस्टम को मजबूत नहीं किया गया तो अमेरिका में इंटरनेट बैठ सकता है। वह इटली का उदाहरण देते हैं, वहां नॉर्मल स्पीड 10 एमबीपीएस भी नहीं थी, जो अब घटकर 2.3 एमबीपीएस से भी कम रह गई है। भारत में भी हालात अच्छे नहीं है। सीओएआइ ने डाटा का सही इस्तेमाल करने की अपील की है। हमारे यहां औसत इंटरनेट स्पीड 2019 में 6.5 एमबीपीएस रही थी।

संयम से करें इंटरनेट डाटा का इस्तेमाल

सीओएआइ ने उपयोगकर्ताओं से कहा है कि संयम से डाटा का इस्तेमाल करें। सीओएआइ ने अपनी एडवाइजरी में कहा है कि सुबह 9 से 11 बजे तक और शाम चार बजे से 10 बजे तक लोग हैवी फाइल डाउनलोड या अपलोड न करें। वीडियो कॉल न करें। स्टारलाइट टेक्नोलॉजी के आनंद अर्ग्रवाल ने चेतावनी दी है कि बढ़ती मांग नहीं रुकी तो हमारे मोबाइल नेटवर्क पर बहुत लोड पड़ेगा, नतीजा बहुत खराब हो सकता है।

प्रतिव्यक्ति डाटा का खर्च सबसे अधिक है भारत में

11 करोड़ जीबी डाटा हर माह औसतन भारतीय इस्तेमाल कर लेते हैं, जो पूरी दुनिया में सबसे अधिक है। यह स्थिति फरवरी 2020 की है, जबकि 2019 में हमने हर माह 9.8 जीबी डाटा का इस्तेमाल किया। नोकिया इंडिया के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर अमित मारवाह बताते है कि भारत में 47 फीसद ब्रॉडबैंड का इस्तेमाल होता है, जबकि चीन में 95 फीसद। भारतीय उपयोगकर्ता 70 फीसद डाटा मनोरंजन के लिए इस्तेमाल करते हैं।

1800 मेगाहर्ट्ज स्पेक्ट्रम मांगा सरकार से

सीओएआइ ने लॉकडाउन के कारण पैदा हुए हालात को देखते हुए 1800 मेगाहर्ट्ज अतिरिक्त स्पेक्ट्रम सरकार से मांगा है। दूरसंचार विभाग सीओएआइ की मांग पर विचार कर रहा है। इसके लिए जरूरी कानूनी कदमों और फ्रेमवर्क पर विचार चल रहा है।

देश में दोगुना हो गया डाटा का उपयोग

सीओएआइ ने रिपोर्ट दी है कि जनता कर्फ्य और लॉकडाउन में कुछ सर्किल में डाटा की मांग में 100 फीसद का भारी उछाल देखा गया है। स्टारलाइट टेक्नोलॉजी के सीईओ आनंद अग्रवाल ने बताया कि डाटा की मांग में 30 फीसद से लेकर 100 फीसद की बढ़ोतरी हुई है। सीओएआइ की रिपोर्ट के मुताबिक सुबह 9 बजे से 11 बजे तक और शाम चार बजे से रात 10 बजे तक डाटा की मांग में वृद्धि हो जाती है।

(स्रोत : जेएनएन, नई दिल्ली)

प्रदेश में जो भी आ गए, उन सबकी जिम्मेदारी हमारी : योगी

दो टूक ▸ दूसरे राज्यों के सामने नहीं आने देंगे उत्तर प्रदेश जैसी चुनौती

बाहरी कामगारों की दैनिक-आर्थिक जरूरतें पूरी करेगी सरकार

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

दूसरे प्रदेशों के कामगारों के घर वापसी ने जब राज्य सरकारों की व्यवस्थाओं पर सवाल खड़े किए हैं, वहीं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट कर दिया है कि सूबे में जो भी आ गए हैं, उन सबकी जिम्मेदारी हमारी है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि दूसरे राज्यों से आने वाले लोगों को वे जहां हैं, वहीं क्वारंटाइन किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाहरी राज्यों के कामगारों की दैनिक आर्थिक जरूरतें पूरी की जाएंगी। हम नहीं चाहते कि उत्तर प्रदेश जैसी चुनौती दूसरे राज्यों के सामने भी आए।

कोरोना पर नियंत्रण और बचाव के लिए गठित 11 कमेटियों के शीर्ष अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री ने रविवार सुबह कालिदास मार्ग स्थित अपने सरकारी आवास पर समीक्षा बैठक की। योगी ने इस मंथन में कई मानवीय फैसले किए। चूंकि सबसे बड़ी समस्या गरीब-मजदूरों का बड़ी संख्या में प्रदेश में आना है, इसलिए सबसे अधिक जोर योगी का इसी पर रहा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में जो भी आ गए हैं या पहले से रह रहे हैं, उनकी पूरी जिम्मेदारी हमारी है। उन्हें भोजन, शुद्ध पानी, दवा देंगे।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार सुबह लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे पर पहुंचे। दूसरे राज्यों से आने वाले लोगों को सुविधाओं के प्रति आश्वस्त किया। यह तस्वीर उन्नाव के पास रेवारी टोल प्लाजा की है। जागरण

उनके चलते बाकी लोगों के स्वास्थ्य को कोई खतरा नहीं पैदा होने देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश के हर गरीब और दिहाड़ी मजदूर को ढूंढ-ढूंढकर उस तक एक हजार रुपये पहुंचाए जाएं।

बकाये पर नहीं कटेगा बिजली-पानी कनेक्शन : मुख्यमंत्री ने लॉकडाउन की परेशानियों को देखते हुए घोषणा की है कि बकाये के चलते किसी का भी बिजली-पानी का कनेक्शन नहीं काटा जाएगा। आपूर्ति जारी रहेगी। साथ ही अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि लॉकडाउन की वजह से जो भी संस्थान बंद हैं, उनके हर कर्मचारी को वेतन मिलना ही चाहिए। साथ ही मकान मालिकों से योगी ने अपील की है कि अल्प वेतनभोगी, श्रमिक और गरीबों से अभी किराया न लें।

डीएम लगवाएं आवश्यक वस्तु की रेट लिस्ट : मुनाफाखोरी रोकने के लिए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि जिलाधिकारी आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाएं। उनकी रेट लिस्ट दुकानों पर चस्पा कराएं। यदि उससे अधिक कीमत में कोई सामान बेचता है या जमाखोरी करता है तो मुकदमा दर्ज कर सख्त कार्रवाई करें।

खुद सड़क पर उतरे योगी, मुसाफिरों से की बात : कोरोना से बचाव के लिए की जा रही व्यवस्थाओं का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं जायजा ले रहे हैं। रविवार सुबह वह लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे स्थित मोहान टोल प्लाजा पहुंचे और दूसरे राज्यों से आने वाले यात्रियों से बातचीत कर उन्हें समझाया और सारी सुविधाओं के प्रति आश्वस्त किया।

लॉकडाउन का उल्लंघन कर बिहार पहुंचे 25 हजार लोग गांव भेजे गए

जागरण टीम, पटना

▸ अब गांव के आइसोलेशन कैंप में 14 दिन रखे जाएंगे प्रवासी, स्वस्थ होने पर ही जा सकेंगे घर

▸ दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बंगाल समेत कई राज्यों से रविवार देर रात तक पहुंचते रहे लोग

▸ गांव जाने की जिद में लोगों ने किया हंगामा, गुस्सा और भीड़ संभालने के लिए सरकार ने बदला फैसला

लॉकडाउन का उल्लंघन कर बिहार की सीमा पर पहुंचे 25 हजार लोगों को उनके गांव भेजना पड़ा है। किसी कीमत पर घर पहुंचने की जिद में सड़कों पर उतरे प्रवासी जब दिल्ली और अन्य प्रदेशों से बसों से भरकर बिहार की सीमा पर पहुंचे तो वहां रहने को तैयार नहीं हुए। अनुमान से अधिक भीड़ थी। सरकार के इंतजाम नाकाफी पड़ने लगे। भीड़ के साथ हंगामा और गुस्सा बढ़ा, तो सभी लोगों को उनके गांव तक पहुंचाने का फैसला किया गया। प्राथमिक जांच के बाद रविवार देर शाम तक 25 हजार लोगों को गांव तक पहुंचा दिया गया है। वहां उन्हें 14 दिन तक आइसोलेशन कैंप में रखा जाएगा। सरकारी प्रयास के अलावा भी विभिन्न साधनों और पैदल ही गांवों में लोगों के आने का सिलसिला जारी है।

आपदा प्रबंधन विभाग के प्रधान सचिव प्रत्यय अमृत ने कहा कि दूसरे राज्यों से लगातार वापस लौट रहे 25 हजार प्रवासी बिहारी कामगारों को देर शाम उनके घर के स्कूल तक पहुंचा दिया गया। कई जगहों पर इनके लिए कुछ अन्य सरकारी भवनों में भी व्यवस्था की गयी है। सीमावर्ती जिलों में बने सीमा आपदा राहत केंद्रों पर पहुंचे लोगों के लिए भोजन और स्वास्थ्य जांच की व्यवस्था की गई है, लेकिन वहां अधिक दिन तक रहने के लिए लोग तैयार नहीं हो रहे।

अपनों ने ही कहा नो एंट्री : हजारों किलोमीटर का सफर तय कर वापस घर लौट रहे लोगों को उनके अपने गांव में घुसने से रोक रहे हैं। कोरोना संक्रमण के डर से पटना के समीप कुरथौल के सदल्लीचक गांव के लोग बाहर से आने वाले लोगों पर नजर रख रहे हैं। बड़े-बड़े बैनर लगाकर ग्रामीणों ने गांव की सीमा सील कर दी है। दिनेश कुमार

इसलिए बदला फैसला : राज्य सरकार ने शनिवार देररात बाहर से आ रहे लोगों को सीमा पर रोके जाने का आदेश दिया था। सीमा पर आवाजाही रोक दी गई। उत्तर प्रदेश की सीमा पर कर्मनाशा में कैमूर जिला प्रशासन के अधिकारियों ने बताया कि रात से ही भीड़ बढ़ने लगी। रविवार सुबह बड़ी संख्या में दूसरे प्रदेशों से आए लोग सीमा पर पहुंच गए। खचाखच भरे ट्रकों को देख जिला प्रशासन के होश उड़ गए। इसके बाद पुलिस जवानों को लगाकर वाहनों को रोका गया और बाहर से आए सभी लोगों को आइसोलेशन वार्ड में ले जाया गया। जहां व्यवस्थाओं को देख परदेसियों ने हंगामा कर दिया और पुलिस-प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे। उनका कहना था कि ऐसे हालात में 14 दिन काटना बड़ा तकलीफदेह होगा। वहीं, डीएम व एसपी सहित अन्य उन्हें समझा रहे थे। बाद में फैसला किया गया कि लोगों को गांव के कैंप में भेज दिया जाए। सरकार ने अपना फैसला बदला। गांव तक लोगों के पहुंचाने का निर्णय आने के बाद प्रवासी लोगों के लिए दोपहर बाद बस की व्यवस्था कर उन्हें उनके जिला मुख्यालयों तक पहुंचाया गया और वहां से जिलाधिकारी की देखरेख में उन्हें उनके घर तक भेज दिया गया।

बीडीओ से मुखिया तक रखेंगे नजर

बाहर से आए सभी लोगों को अगले 14 दिनों तक क्वारंटाइन में रहना है। संबंधित प्रखंड के प्रखंड विकास अधिकारी (बीडीओ) को यह व्यवस्था देखनी है। जिन जगहों पर लोग भेजे गए हैं, उनकी पूरी जानकारी उनके पंचायत के मुखिया, सरपंच, पंच व अन्य सरकारी कर्मियों को भी भेजी गयी है।

बचाव अभियान...

कोरोना वायरस का संक्रमण रोकने के लिए रविवार को अहमदाबाद में फॉगिंग की गई। महामारी पर काबू पाने के लिए देश में अभियान तेज कर दिए गए हैं। एपी

पूर्व राज्यपाल ने अमेरिका से आए बेटे को एयरपोर्ट से लौटाया

जागरण संवाददाता, प्रयागराज

▸ बीमार मां को देखने अमेरिका से आए थे जस्टिस अंशुमान सिंह के बेटे

▸ वापसी का टिकट न मिलने से पांच दिन चेन्नई, मुंबई और दिल्ली में बिताया

यह पहल लोगों के लिए प्रेरणा है जो आपाधापी में घरों के लिए भाग रहे हैं और कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं दिखते। लॉकडाउन के दौरान पैदल ही निकल पड़े हैं, जबकि सरकार 'जो जहां है, वहीं पर रहे' की अपील बार-बार कर रही है। कोरोना के संक्रमण का खतरा न बढ़े, इसलिए पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह ने अमेरिका से आए अपने बेटे अरुण प्रताप सिंह को घर आने से मना कर दिया। अरुण अपनी बीमार मां को देखने के लिए प्रयागराज आने वाले थे। पिता की मनाही से चेन्नई एयरपोर्ट पर उतरने के बाद भी वह भारी मन से दिल्ली होते हुए वापस अमेरिका लौट गए।

विदेश से आने वाले लोगों से संक्रमण का खतरा ज्यादा है। इसीलिए, प्रयागराज के मिशन रोड निवासी पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह ने अपने बड़े बेटे अरुण प्रताप सिंह तथा अन्य स्वजनों को घर आने से रोक दिया। अरुण अमेरिका में नार्थ कोईराना स्टेट के रोली शहर में रहते हैं। वहां पर मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब के साथ बिजनेस भी करते हैं। अरुण की पत्नी जया सिंह एक कॉलेज में पढ़ाती हैं और बेटा सिद्धार्थ पढ़ाई कर रहा है। बेटी अनु सिंह सेंट जियागो में पढ़ती है। अरुण पत्नी के साथ 14 मार्च को चेन्नई एयरपोर्ट पहुंचे थे। पूर्व राज्यपाल की पत्नी चंद्रावती देवी बीमार हैं। अरुण मां को देखना चाहते थे। बेटे ने चेन्नई एयरपोर्ट पर उतरने के बाद जब पिता से संपर्क साधा तो आदेश मिला कि वह वापस अमेरिका लौट जाएं। अरुण ने पिता का आदेश सिर माथे पर लिया। मां से वीडियो कॉलिंग की और लौटने की तैयारी में लग गए। दिल्ली से वापसी का टिकट 20 मार्च का था। अरुण 15 मार्च को मुंबई पहुंचे। वहां चिकित्सकीय जांच हुई। फिर दिल्ली आए और तीन दिन रहने के बाद 20 मार्च को अमेरिका रवाना हुए। वहां पहुंचकर उन्होंने पिता से बात की।

गोरखपुर में होम क्वारंटाइन पर सख्त हुआ प्रशासन, 20 टीमें कर रहीं निगरानी

जागरण संवाददाता, गोरखपुर

▸ घर से निकलने की इजाजत नहीं, नर्सिंग होम संचालक व प्रधानों की भी ले रहे मदद

कोरोना वायरस का फैलाव रोकने के लिए होम क्वारंटाइन (घर में रहकर परिवार से अलग रहना) किए गए उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में दो लाख लोगों की निगरानी कड़ी कर दी गई है। प्रशासन इस बात की पड़ताल करा रहा है कि दूसरे देश या राज्यों से घर लौटे यह लोग गाइडलाइन का पालन कर रहे हैं या नहीं। स्वास्थ्य विभाग की टीम जांच और संक्रमण रोकने के उपाय बता रही है तो पंचायतीराज विभाग शौचालय की उपलब्धता और प्रयोग संबंधी रिपोर्ट बनाने में जुटा है। प्रशासन की कोरोना वायरस नियंत्रण समिति ने होम क्वारंटाइन का उल्लंघन करने वालों से सख्ती से निपटने की तैयारी की है।

नजर रखने का जिम्मा खंड विकास अधिकारियों को : होम क्वारंटाइन किए गए लोगों पर नजर रखने का जिम्मा खंड विकास अधिकारियों को सौंपा गया है। उनकी जांच के लिए जिले के सभी ब्लॉकों में पांच-पांच डाक्टरों की 20 टीमें बनाई गई हैं। इस काम में नर्सिंग होम संचालकों और प्रधानों की भी मदद ली जा रही है। टीम घर-घर जाकर व लाउडस्पीकर के जरिये होम क्वारंटाइन का मतलब समझा रही है। बता रही है कि ऐसे लोगों को 14 दिन तक घर में ही अलग रहना है। परिवार को भी कहीं समूह में नहीं बैठना है।

> जिले के हर घर में शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। फिर भी होम क्वारंटाइन किए गए लोगों के घरों की पड़ताल कराई जा रही है। गांवों में सफाई के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं। टीमें नियमित भ्रमण कर रही हैं। खंड विकास अधिकारियों से रोजाना की रिपोर्ट मंगाई जा रही है।
>
> **-हर्षिता माथुर, मुख्य विकास अधिकारी**

शौचालय की हो रही पड़ताल : यूं तो प्रशासन का दावा है कि जिले के सभी गांवों के हर घर में शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। एहतियात के तौर पर क्वारंटाइन हुए लोगों के घर शौचालय है या नहीं, इसका फिर भौतिक सत्यापन करने के लिए अलग टीम बनाई गई है। मुख्य विकास अधिकारी ने टीम से एक हफ्ते में रिपोर्ट पेश करने को कहा है।

ऐसे करें होम क्वारंटाइन

- होम क्वारंटाइन के लिए हवादार कमरा चुनें जिसमें शौचालय भी हो।
- अगर कमरे में कोई और भी हो तो दोनों में कम से कम एक मीटर की दूरी रखें।
- बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और बच्चों से दूर रहें।
- साबुन से हाथ धोएं, अल्कोहल युक्त सैनिटाइजर का प्रयोग करें।
- सर्जिकल मास्क लगाएं तथा छह से आठ घंटे में इसे बदल दें।

हालात

सड़कों पर आया डर और उम्मीद का सैलाब

सिर पर गठरी, गोद में बच्चा और गांव पहुंचने की आस, कहीं-कहीं तो सौ-सौ किलोमीटर तक पैदल चले लोग

प्रियम, नई दिल्ली

लॉकडाउन से अब तक और उससे पहले भी विषय सिर्फ कोरोना रहा है। सारे प्रयास इससे लड़ने के लिए किए जा रहे हैं और किसी भी नियोजन का केंद्र सिर्फ यही बना है। रविवार को चौथे दिन कुछ बदला हो या नहीं, लेकिन चर्चा जरूर कोरोना के कारण शहरों से अपने गांवों की ओर जाती भीड़ पर जा टिकी है, जिसे पलायन भी कहा जा रहा है। पिछले दो दिनों से एनएच 9 पर परिवार के परिवार अपने थोड़े बहुत सामान के साथ बिना नेतृत्व के जुलूस की तरह बढ़ते चले जा रहे हैं। थक जाते तो हाईवे के किनारे सुस्ताने के लिए बैठ जाते। ऐसा भी देखने को मिला कि बच्चों की हिम्मत चलते चलते जवाब दे गई तो पिता बोला बेटा बस थोड़ी दूर और। देश के किसी किसी राज्य में तो लोग सौ सौ किलोमीटर तक पैदल चले। सभी को बस घर पहुंचने की जल्दी है। लेकिन वर्तमान स्थिति सबके सामने है। ये बढ़े कदम कहां थमेंगे, अब सरकार के हाथ में है। इसे सरकारों के प्रति लोगों की अविश्वसनीयता कहें या डर। गाजियाबाद के लालकुआं से दिल्ली के आनंद विहार और इंडिया गेट तक जनसैलाब की जुबानी और उनकी व्यथा पढ़िए।

नानी से मिलना चाहता था अरुण : दिल्ली के लक्ष्मीनगर में रहने वाली संतोष का बेटा आठ साल का होगा। पति के साथ तेज कदमों से बेटे को गोदी में लिए चली जा रही थीं। रोककर मंजिल पूछी तो बताती हैं कि मायके मुजफ्फरपुर जाना चाहती हैं। जाने का कारण कोरोना का डर नहीं बल्कि उसका व्यवसाय पर पड़ा असर बताया। बोली, अभी तो कुछ आटा दाल बचा है लेकिन पति का काम बंद हो गया है।

घर जाना पहले से तय था: गुड़गांव के रहने वाले आलोक अपने कुछ दोस्तों के साथ आनंद विहार बस अड्डे के पास मिले। ठसाठस भरी बस में चढ़ने के लिए जी जान से जोर लगाए हुए थे। पूछा, तो बोले आगरा जा रहे हैं। पहले अपने वाहन से जाना था लेकिन लॉकडाउन हो गया। जब पता चला की बस से जाने का विकल्प है तो जाने का फैसला किया। पूरा देश बंद है। मेरे फ्लैट में बाकी दोस्त भी मेरे साथ घर जा रहे हैं। वहां जाकर फिर भी कुछ हद तक सुरक्षित रहेंगे।

आगे भी बंद रहा तब क्या करेंगे : कविता अपनी दो सहेलियों और उनके परिवार के साथ नोएडा मोड़ पर खड़ी मुरादाबाद जाने वाली बस के पीछे पीछे भाग रही थीं। किसी तरह बस पकड़ भी ली। खिड़की के बाहर खड़े रहकर उनके जाने का ठिकाना और कारण पूछा। कहती हैं शाहजहांपुर जा रहे हैं। अभी तो चल जाएगा लेकिन अगर कोरोना का प्रभाव खत्म नहीं हुआ तब क्या खाएंगे, कहां जाएंगे।

बिटिया का पहुंचा दें

निजामुद्दीन के पास से एक बुजुर्ग महिला कई घंटे चलकर आई थीं। नोएडा और लालकुआं के बीच कहीं बीच में बैठी मिलीं। बताती हैं कि कोरोना वोरोना क्या करेगा, यहां तो रोज जीते मरते हैं। साथ में छोटी बिटिया है जिसकी चिंता हो रही थी इसलिए इसे घर पहुंचाने बांगरमऊ जा रहे हैं। पीछे खड़े डंपर की तरफ इशारा करते हुए बोलीं, ऐसे भर भरके ले जा रहे हैं। हम तो धस नहीं पाएंगे, अगली बस का इंतजार कर रहे हैं। पहले दो बसें गुजरीं, लेकिन एक में सवारी ज्यादा थी और एक आगरा जा रही थी।

दो दिन से ज्यादा का राशन नहीं था

इरफान की पंचर की दुकान है। लालकुआं बस अड्डे के थोड़ा पहले करीब एक दर्जन परिजनों के साथ जमीन पर बैठे मिले। वह बरेली जाने की बस का इंतजार कर रहे थे, ज्यादा किराए के चलते पहले एक बस छोड़ चुके थे। जाने का कारण पूछने पर बताते हैं कि तीन दिन हो गए। राशन लगभग खत्म होने वाला है। इतना बड़ा परिवार है, भूखे मरते तो नहीं देख सकता। सरकार की योजनाओं के बारे में पूछा तो उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। बस चलने वाली खबर कहीं से उड़ते उड़ते मिली थी।

बागपत के पास ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे से कानपुर जा रहा दिव्यांग। जागरण

केरल से अपने 150 नागरिकों को कल एयरलिफ्ट करेगा जर्मनी

तिरुअनंतपुरम, आइएएनएस : देश में जारी 21 दिन के लॉकडाउन के चलते केरल में फंसे अपने 150 नागरिकों को जर्मनी की सरकार मंगलवार को एक चार्टर्ड विमान से एयरलिफ्ट करेगी।

सूत्रों के अनुसार जर्मनी की सरकार पहले इन 150 जर्मन नागरिकों को विगत शनिवार को जर्मनी वापस ले जाने वाली थी। लेकिन किन्हीं कारणों से यह नहीं हो पाया। अब जर्मनी के नागरिकों से कहा गया है कि अब वह उड़ान भरने के लिए तैयार रहें। जहां कहीं भी जर्मन नागरिक फंसे हुए हैं, फ्लाइट उन्हें लेने वहां आ जाएगी। इन 150 लोगों में जर्मन नागरिकों के अलावा वह लोग भी हैं जिनके पास जर्मन पासपोर्ट हैं। इसके अलावा कुछ यूरोपीय नागरिक भी हैं।

सूत्रों ने बताया कि भारत में फंसे इन लोगों को वापस जर्मनी ले जाने के लिए जर्मन दूतावास ने एक ऐप के जरिये ऑनलाइन रजिस्टर होने को कहा था।

बादाम व दखिनी मिर्च का प्रयोग कर वायरस से लड़ें

जागरण संवाददाता, अलीगढ़ : कोरोना वायरस इंसान की श्वांस नली में दिक्कत करने के साथ फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है।

न्यूट्रीशियन की सलाह

शरीर की आंतरिक शक्ति को कमजोर करता है। इंसान की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी हो, तो वह वायरस से मजबूती से लड़ सकता है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के कारगर उपाय हैं। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) के तिब्बिया कॉलेज के हकीम प्रो. नईम अहमद खान के अनुसार अंकुरित चने, दाल जैसे नाश्ते के साथ बादाम व दखिनी मिर्च रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का कारगर नुस्खा है। इनका सेवन बहुत जरूरी है। साथ ही मौसमी फल, प्रोटीनयुक्त पदार्थ और खजूर का सेवन करें...

नाश्ते में लें बादाम

- हर दिन नाश्ते में पांच बादाम व 5-10 दखिनी मिर्च लेनी चाहिए।
- बादाम कारगर एंटी ऑक्सीडेंट है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- दखिनी मिर्च शरीर के लिए एंटी डोज की तरह काम करती है। संक्रमण को रोकती है।
- ये दोनों चीजें इंसान को दिनभर रोगों से लड़ने की शक्ति देती हैं।
- अंकुरित चना, दाल और फल व्यक्ति को भरपूर ऊर्जा देते हैं।

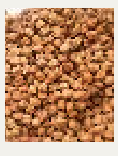

भोजन में क्या लें

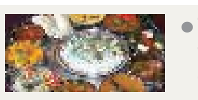

- खाने में प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ लेने चाहिए। पनीर मिले तो जरूर लें।
- सोयाबीन, हरी सब्जियां, नीबू, दाल और दही खाएं।

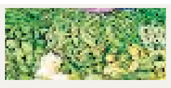

- खजूर धोकर और आंवले के मुरब्बे का सेवन करें।
- खजूर में आयरन के साथ पौष्टिक होते हैं, जो लाभदायक हैं।
- डायट पर खर्चा ज्यादा दिखे तो आंवले का मुरब्बा लें।
- ब्रेड पर शहद लगाकर लें।

भारत में अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता

- प्रो. नईम का मानना है कि रोग प्रतिरोधक क्षमता शहरी लोगों की तुलना में ग्रामीणों में अधिक होती है।
- कोरोना वायरस का यूरोप-अमेरिका जैसा असर भारत में नहीं। ये रोग प्रतिरोधक क्षमता का असर है।
- दूसरे मुल्कों की तुलना में अपने देशवासियों में ये क्षमता अधिक है।

गर्म पानी का सेवन करें

व्यक्ति के लिए गर्म पानी रोगों से बचने का सबसे बेहतर उपाय है। लगातार गर्म पानी का सेवन करते रहें।

कपूर को पानी में रखें

- नवरात्र में घर-घर हवन हो रहे हैं। लोग अपने घरों में पानी से भरी कटोरी में कपूर रख दें।
- कपूर की महक पूरे वातावरण को शुद्ध करती है। सांस के जरिये जो ऑक्सीजन हम लेंगे, वो भी शुद्ध होगी।
- कोरोना संक्रमण से बचने के लिए हाथ साबुन से धोते रहें। लोगों से मिलें नहीं। घर से कतई न निकलें।

छठा नवरात्र

घर पर रहकर करें पूजा-पाठ आपके साथ हैं मातारानी

देवी पूजा घर में

नईदुनिया, राजनांदगांव : छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध मंदिरों में शुमार डोंगरगढ़ की मां बम्लेश्वरी मंदिर के पुजारी पंडित युवराज शर्मा ने कोरोना संकट की इस घड़ी में श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि वे घरों में ही आराधना, पूजा-पाठ और यज्ञ-अनुष्ठान करें। माता तो कण-कण में विराजित हैं। आंखें बंद आत्मसात हो जाएं तो मां का चेहरा सामने हो जाता है। दर्शन कर लें। उन्होंने कहा है कि मां बम्लेश्वरी किसी भी भक्त पर कोई संकट नहीं आने देंगी। यह एक अलग तरह का युद्ध है। इसे मैदान में उतरकर नहीं, मैदान से दूर रहकर यानी अपने घरों में रहकर ही जीता जा सकता है।

पंडित शर्मा ने कहा है कि श्रद्धालुओं के सामने यह परीक्षा की घड़ी है। इसमें संयम और धैर्य न खोयें। घरों में रहें। परिवार के सदस्यों का ध्यान रखें। माता-पिता की सेवा करें। पत्नी और बच्चों के साथ वक्त बिताएं। उन्होंने कहा कि माता-पिता की सेवा भी ईश्वर सेवा है। इसे ऐसा भी समझें कि ईश्वर ने ही ऐसी परिस्थिति बनाई है कि आप परिवार के बड़े सदस्यों की सेवा कर सकें। छोटों को वक्त दे सकें। उन्होंने कहा कि मातारानी श्रद्धालुओं की सुरक्षा में सदैव खड़ी हैं। इसलिए बिना किसी चिंता के अपना ध्यान घर-परिवार और माता की भक्ति में लगाएं। उन्होंने बताया कि मंदिर में 5111 मनोकामना ज्योत प्रज्ज्वलित की गई हैं। ट्रस्ट के सदस्य और पुजारी माता की सेवा में लगे हुए हैं।

पंडित युवराज शर्मा, मंदिर के पुजारी

शरीर से गायब कोरोना का भी पता लगाएगी किट

तलाशी राह ▶ एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड किट को एनआइवी पुणे ने किया वैध, बीमारियों की पहचान होगी आसान

यह किट कम्युनिटी केस रिपोर्ट में लंबे समय तक आएगी काम

संदीप पांडेय, लखनऊ

देश में कोरोना की मास टेस्टिंग पर बहस बनी हुई है। कम्युनिटी बेस्ड जांच पर आइसीएमआर इन्कार कर रहा है। वहीं, एनआइवी पुणे ने पहली रैपिड किट को वैध कर दिया है। यह किट वर्तमान संक्रमण के साथ ही भविष्य में भी काम आएगी। इसमें कोविड-19 से मुक्ति के बाद भी बीमारी की पहचान की जा सकेगी। सार्स-कोव-टू वायरस की जांच के लिए 27 मार्च को गाइड लाइन जारी कर दी गई है।

इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) देश में अभी कोरोना वायरस का थर्ड फेज नहीं मान रहा है। ऐसे में कम्युनिटी बेस्ड टेस्टिंग भी नहीं की जा रही है। वहीं एनआइवी पुणे के साथ करीब 11 रैपिड टेस्टिंग किट की वैधता को परखने पर काम चल रहा है। यह किट विभिन्न देशों की कंपनियों ने बनाई है। 27 मार्च को एनआइवी पुणे ने एंटीबॉडी बेस्ड रैपिड टेस्ट को वैध किया। यह किट किसी भी व्यक्ति के शरीर में मौजूद संक्रमण का पता लगाने में सक्षम है। इसके लिए एंटीबॉडी 'आइजीएम' पॉजिटिव आएगा। वहीं कोरोना के वायरस से मुक्त हो चुके मरीज में वर्षों बाद भी पता चल सकेगा कि व्यक्ति पहले कोविड-19 से संक्रमित रह चुका है। कुल मिलाकर यह किट भविष्य में बेहद कारगर सिद्ध हो सकती है।

प्रतीकात्मक

30 मिनट में होगा टेस्ट

बीएसएल थ्री लैब में कोरोना की रिपोर्ट आठ से 12 घंटे में मिल रही है। विशेषज्ञ के मुताबिक एंडीबॉडी बेस्ड किट से 30 मिनट में जांच मुमकिन होगी। कंफर्मेशन के लिए बेवजह पॉलीमरेज चेन रिएक्शन (पीसीआर) जांच की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। विशेषज्ञ किसी केस में आशंका होने पर भले ही लैब से जांच रिपीट कराएं। गाइड लाइन के अनुसार, किट से जांच ब्लड, सीरम व प्लाज्मा से किया जाएगा। वहीं इसमें संक्रमण के सात से 10 दिन में टेस्ट पॉजिटिव आएगा।

देश में सबसे कम जांच

देश में कोरोना टेस्टिंग कम हो रही है। अनुमान है कि यहां प्रति 10 लाख व्यक्तियों पर 6.8 लोगों का टेस्ट हुआ। चिकित्सा विज्ञानियों के मुताबिक, जांच का दायरा बढ़ाया जाए तो मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी हो सकती है। इसके लिए सिंगापुर व दक्षिण कोरिया जैसे देशों का हवाला दिया जा रहा है।

संक्रमण होने के बाद शरीर में सबसे पहले बनती है आइजीएम

इसके लिए उसके शरीर में बन चुकी एंटीबॉडी 'आइजीजी' पकड़ने में भी यह किट सक्षम होगी। दरअसल, व्यक्ति में पांच प्रकार की एंटीबॉडी- जी, ए, एम, डी, ई होती हैं। इसमें संक्रमण की शुरुआत में आइजीएम बनती है, बाद में आइजीजी का निर्माण होता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे में कोरोना वायरस से मुक्ति पा चुका व्यक्ति कभी अन्य बीमारी की गिरफ्त में आया तो उसके जोखिम की स्थिति व इलाज की दिशा तय करने में आसानी होगी।

भारत में कोविड-19 का प्रसार रोकने के लिए 49 दिनों का लॉकडाउन जरूरी

नई दिल्ली, आइएएनएस : ब्रिटेन में कैंब्रिज विश्वविद्यालय के भारतीय मूल के दो शोधकर्ता एक गणितीय मॉडल के साथ आए हैं। इसमें कोविड-19 का प्रसार रोकने के लिए 49 दिनों का लॉकडाउन या टुकड़ों में दो महीने तक चलने वाले लॉकडाउन की वकालत की गई है। विश्वविद्यालय में एप्लाइड मैथमेटिक्स और थ्योरिटिकल फिजिक्स के रोनोजॉय अधिकारी और राजेश सिंह द्वारा तैयार पेपर में कहा गया है कि भारत सरकार द्वारा लगाए गए 21 दिनों के लॉकडाउन के प्रभावी होने की संभावना नहीं है। 21 दिनों का यह लॉकडाउन खत्म होने के बाद कोरोना के फिर से उभर आने की आशंका है। इस अध्ययन में सामाजिक दूरी के साथ कार्यस्थल पर लोगों की अनुपस्थिति, स्कूल बंद करने और लॉकडाउन के प्रभाव की जांच की गई है। लेखकों ने लिखा है कि सामाजिक संपर्क की संरचनाएं गंभीर रूप से संक्रमण के प्रसार को निर्धारित करती हैं। टीकों की अनुपस्थिति में बड़े पैमाने पर सामाजिक दूरी के जरिये इसका नियंत्रण किया जा सकता है।

पेड़ पर मचान बनाकर क्वारंटाइन हुए युवकों को प्रशासन ने उतारा

जागरण संवाददाता, आसनसोल : लॉकडाउन की घोषणा होने पर चेन्नई से घर लौटने के बाद 24 मार्च से पेड़ पर मचान बनाकर क्वारंटाइन हुए सात युवकों को शनिवार की शाम पेड़ से उतारा गया। मामला बंगाल के पुरुलिया जिले के जंगीडीह गांव का है। बीडीओ और पुलिस की मदद से पेड़ से उतारे गए युवकों को गांव के ही एक आइसीडीएस (समेकित बाल विकास परियोजना) सेंटरमें रखा गया है। युवकों को सेंटर में ही खाने-पीने की सामग्री से लेकर अन्य सुविधाएं मुहैया कराई जा रही है।

चेन्नई से हाल ही में लौटे युवकों ने बताया कि आजीविका की तलाश में कुछ माह पहले सभी चेन्नई गए थे, जहां एक फैक्ट्री में मजदूरी किया करते थे। 22 मार्च को कारखाना प्रबंधन की ओर से लॉकडाउन के कारण कारखाना बंद कर दिए की जानकारी दी गई। इसके बाद सभी 23 मार्च को खड़गपुर लौट आए, जहां उनके स्वास्थ्य की जांच की गई। संक्रमित नहीं होने के बावजूद डॉक्टरों ने एहतियात के तौर 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन में रहने का परामर्श दिया। युवकों ने बताया कि गांव-घर के लोग सुरक्षित रहे, इसे केंद्र में रखकर सभी ने 24 मार्च से खुद को पेड़ पर बने मचान पर क्वारंटाइन कर दिया। हाथियों के उपद्रव से परेशान यहां के ग्रामीणों को पेड़ों पर रहने की आदत है। सो सभी ने पेड़ पर ही अपना अस्थाई आशियाना बना डाला। परिजन पेड़ के नीचे खाना रख दिया करते थे, जिसे वे ग्रहण करते थे। युवकों के अनुसार अब सारी व्यवस्था सेंटर में हो जाने से उनकी परेशानी दूर हो गई है।

बंगाल के पुरुलिया जिले के जंगीडीह गांव में चेन्नई से लौटे सात युवकों को प्रशासन और चिकित्सकों ने होम क्वारंटाइन की सलाह दी थी। इनके घर में अलग से रहने के लिए कमरा नहीं था। ऐसे में उन्होंने खुद को पेड़ पर आइसोलेट कर लिया था। जागरण

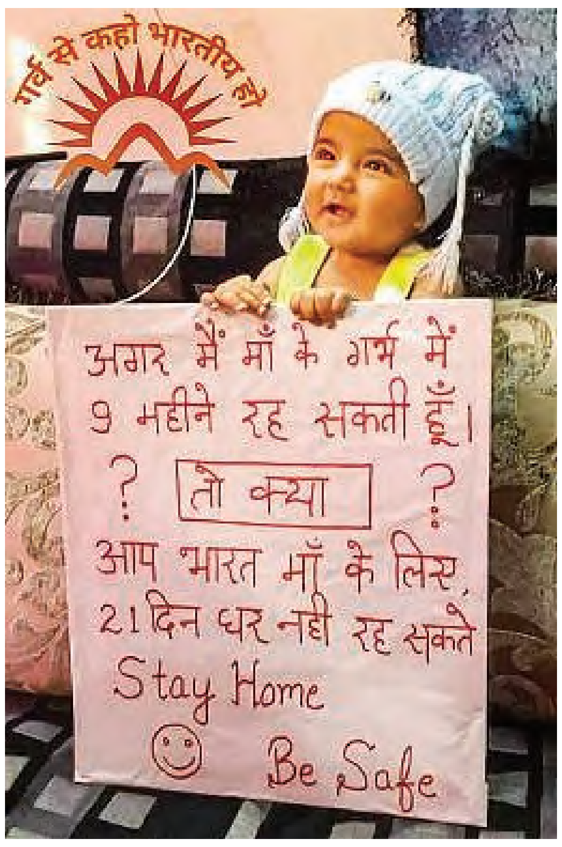

लोगों को सीख...

देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान लोगों को 21 दिन घर में रखने की सीख देने का पोस्टर लिए मासूम की यह तस्वीर पीएम नरेंद्र मोदी ने अपने ट्विटर हैंडल पर पोस्ट की है। प्रेट्र

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाइए, कोरोना से बचिए

आयुर्वेदाचार्य की सलाह

कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए तमाम उपाय और परहेज लोग कर रहे हैं। घर में रहते हुए किस तरह अपनी प्रतिरोधक क्षमता आप बढ़ा सकते हैं, इसकी जानकारी आयुर्वेदाचार्य और महावीर आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा. देवदत्त भादलीकर दे रहे हैं। वे कहते हैं कि कोरोना या अन्य वायरस से लड़ने के लिए जरूरी है कि हम अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के सभी उपाय रसोई में ही मौजूद हैं...

मुलेठी की चाय या दूध

100 मिली पानी में एक चम्मच मुलेठी डाल लें और उसे खौलाएं, बिना शक्कर के पी लें। पानी की जगह दूध का भी इस्तेमाल हो सकता है।

डॉ. देवदत्त भादलीकर

सहजन

सहजन जिसे ड्रमस्टिक भी कहते हैं। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन ए रहता है। यह एंटी वायरल है। इसकी सब्जी बनाकर या दाल में डालकर खाने से वायरस का खात्मा होता है।

कुम्हड़ा का बीज

कुम्हड़े का बीज इम्युनिटी बूस्टर है। बीज का पाउडर बनाकर रोजाना रात को सोते समय खा लें या फिर सौंफ के साथ बीज चबाकर भी खाया जा सकता है।

खाली पेट फल खाएं

रात में हमारी बॉडी अम्लीय प्रक्रियाओं से गुजरती है। ऐसे में खाली पेट कोई एक फल खा लें। यह शरीर के अंदर क्षारीय गुण बढ़ाएगा।

नारियल पानी

ताजा नारियल पानी में आधा नींबू मिलाकर पीएं, यह प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएगा।

लाल शिमला मिर्च

एक संतरे में जितना विटामिन-सी होता है, उसका तीन गुना लाल रंग के शिमला मिर्च में पाया जाता है। लिहाजा ककड़ी, गाजर के साथ सलाद में लाल शिमला मिर्च को भी शामिल करें तो यह बेहद प्रभावी साबित होगा।

दाल

अरहर की एक कटोरी दाल को अपने खाने में जरूर शामिल करें। प्रोटीन का यह बहुत बड़ा माध्यम है।

धूप करें

धूप जलाना एंटी बैक्टेरियल प्रक्रिया मानी जाती है। घर में नियमित रूप से धूप जलाएं। इसमें गोबर के उपले, नीम के पत्ते, पके हुए नारियल का छिलका, हींग, लहसन के छिलके, नमक, कपूर को शामिल करें।

भाप लें

कोरोना भी गले में कुछ दिन रहकर आगे बढ़ता है। ऐसे में गर्म पानी का भाप जरूर लें। एक चम्मच हल्दी, 10-15 तुलसी के पत्ते डालकर पानी को उबाल लें और फिर तौलिए या चद्दर से ढककर भाप लें।

काफी या चाय

तुलसी, सौंठ, काली मिर्च, गुड़, प्याज का एक छोटा टुकड़ा, गिलोय मिलाकर काफी या चाय बनाएं। यह स्वादिष्ट भी होगा और स्वास्थ्यपरक भी। इम्युनिटी का बूस्टर डोज मिलेगा।

गार्गल करें

खांसी-सर्दी हो तो हल्दी, त्रिफला, मुलेठी, सौंठ, सेधा नमक डालकर पानी को गर्म करें और गार्गल करें। जो सामग्री न मिले उसे छोड़कर भी गार्गल करें, लाभकारी होगा।

मेथी का पानी

वायरस गले के बाद फेफड़े में भी पहुंचता है। ऐसे में रोजाना रात को मुट्ठीभर मेथी के दाने पानी में भिंगों दें। सुबह खाली पेट पीएं। यह प्यूरिफायर का काम करता है। टॉक्सिन शरीर से बाहर करता है।

जल ही जीवन है

- पूरे दिन घूंट घूंट करके गुनगुना पानी पिएं। 24 घंटे में कम से कम दो लीटर।
- घूंट-घूंट करके गर्म ग्रीन टी, रसम या गर्म सब्जी का सूप पीएं।
- सौंठ, काली मिर्च, पिप्पली 5-5 ग्राम और तुलसी की 10 पत्तियां एक लीटर पानी में तब तक उबालें जब तक यह आधा लीटर न रह जाए। फिर गरम गरम घूंट-घूंट करके पीएं। दिन में कई बार इसे आजमाएं।
- तुलसी, अश्वगंधा, आंवला, गिलोय, लहसन, मुलेठी, सहजन की पत्ती समान मात्रा में लेकर पाउडर बनाकर रख लें? । दिन में दो बार पांच पांच ग्राम की मात्रा में गर्म पानी से लें। यह भी कारगर है।
- 8 से 10 लहसुन की मीडियम साइज की कलियां एक लीटर पानी में तब तक उबालें जब तक पानी आधा लीटर न रह जाए। इसे घूंट घूंट पी सकते हैं।
- नाक में अणु तेल या तिल तेल का नस्य लें यानी दोनों नथुनों में इनमें से किसी एक तेल की दो दो बूंदें डालें।

सेल्फ चेकअप

गहरी सांस लें, कम से कम 20 सेकंड तक रोकें। अगर आपको खांसी आती है या सांस फूल जाती है, तो रोग के किसी संदिग्ध कारक के बारे में सोचें।

नींद : रोजाना सात-आठ घंटे की नींद भी इम्युनिटी बढ़ाती है। ऐसा करने से शरीर में प्रोटीन भी बढ़ता है।

अखबार सुरक्षित है

सैनिटाइज होकर आपके हाथ में आ रहे अखबार

कारोना सिर्फ संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से होता है, खतरनाक वायरस से बचने के लिए अखबार सच्चा साथी

जेएनएन, नई दिल्ली

कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं कि अखबार से कोरोना हो सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। समाचार पत्र कई प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद सैनिटाइज भी किए जा रहे हैं। इसलिए, अखबारों और पत्रिकाओं से कोरोना वायरस फैलने की कोई आशंका नहीं होती। ये कहना है संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (पीजीआइ) लखनऊ के इंडो सर्जन प्रो. ज्ञान चंद का। उन्होंने बताया कि शोध संस्थानों ने भी दावा किया कि अखबार पूरी तरह सुरक्षित हैं। इनसे कोरोना वायरस फैलने का अब तक कोई मामला सामने नहीं आया है।

यह सिर्फ संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से होता है। इस खतरनाक वायरस से बचने के लिए अखबार आपका सच्चा साथी हो सकता है। इस समय पूरी दुनिया में कोरोना को लेकर कई शोध चल रहे हैं। इस संबंध में आप अखबार के माध्यम से ही खुद को अपडेट रख सकते हैं। यह समझने की जरूरत है कि अखबार की अच्छी खबरें हमारी सोच को सकारात्मक रखने में भी मदद करती हैं।

केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) के निदेशक डॉ. प्रमोद त्रिवेदी कहते हैं कि देश में अभी इंफेक्शन इस हद तक नहीं है, जिससे बड़ी संख्या में आबादी संक्रमित हो। फिलहाल संक्रमण उन्हीं लोगों से हो रहा है, जो लोग विदेश से होकर आए हैं या जो उनके संपर्क में आए हैं। ऐसे में अखबार से संक्रमण की कोई संभावना नहीं है। इसलिए इस भ्रम में कतई न आएं। अखबार आपको तमाम जानकारियों से अपडेट करता है और ऐसे में जब आप घर पर ही हैं और समय व्यतीत करने में अखबार आपका साथी हो सकता है। मेरठ के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. संजीव सक्सेना के अनुसार, कोरोना संक्रमण को लेकर अखबार नियमित रूप से हमें नित नई जानकारी देते रहते हैं। कोरोना ऐसा वायरस है, जिसमें बचाव ही इलाज है। ये तेजी से संक्रमित होकर बड़ी आबादी को अपने गिरफ्त में ले लेता है। ऐसे में बड़ी संख्या में लोग दहशत में आ जाते हैं। लाकडाउन की स्थिति में लोग अपने घरों में रहें। इधर-उधर कतई न भटकें। खांसने एवं छींकने वालों से दूर रहें। रोजाना सुबह का आगाज अखबार पढ़कर करें। पत्रिकाएं भी पढ़ें, जिससे मानसिक सेहत भी दुरुस्त रहेगी।

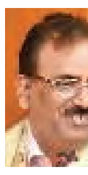

डॉ. प्रमोद त्रिवेदी। फाइल

डॉ. संजीव सक्सेना। जागरण

अपने घर में अखबार पढ़ते प्रो. ज्ञान चंद्रा। जागरण

आंखों के रास्ते हो सकता है संक्रमण

धर्मेन्द्र मिश्रा, लखनऊ

कोरोना वायरस का संक्रमण मुंह व नाक के अलावा आंखों के रास्ते भी होता है। इसलिए मुंह में मास्क लगाने के अलावा आंखों को सुरक्षित रखने रखना जरूरी है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को इन दिनों चश्मा भी पहनना चाहिए। संक्रमण से बचाव के लिए सिर्फ मास्क ही पर्याप्त नहीं है।

केजीएमयू लखनऊ में ऑप्थेल्मोलॉजी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सिद्धार्थ अग्रवाल कहते हैं कि जब कोई संक्रमित मरीज किसी स्वस्थ व्यक्ति के पास एक मीटर से कम दूरी पर छींकता, खांसता या थूकता है तो वायरस वायु कणों के साथ मिलकर मुंह, नाक व आंखों के पास पहुंच सकते हैं। ऐसी स्थिति में संक्रमण हो सकता है।

आमतौर पर लोग मुंह पर मास्क या रुमाल लगा रहे हैं, लेकिन आंखों को लेकर अभी भी हर कोई संजीदा नहीं है। जो लोग कांटेक्ट लेंस लगाते हैं, वह भी अपने आपको सुरक्षित न समझें। बेहतर है कि सभी लोग चश्मा ही लगाएं। जिन्हें चश्मा नहीं लगा, वह धूप का चश्मा लगा सकते हैं। डॉ. सिद्धार्थ के अनुसार कोरोना वायरस आंखों में जाने पर आंसुओं के जरिए नाक और गले तक पहुंच सकते हैं। फिर यह सांस की नली के जरिये फेफड़ों तक पहुंच जाते हैं। यह स्थिति घातक हो सकती है।

इन बातों का रखें ध्यान

न्यूनतम एक मीटर की शारीरिक दूरी का ख्याल रखें। आंखों में कभी खुजली या जलन महसूस होने पर उसे हाथों से न मलें, बल्कि हाथ साबुन से धुलें, फिर आंखों में पानी का छींटा मारें। दूसरे की तौलिया, रुमाल का इस्तेमाल कतई न करें। भरपूर नींद लें। हरी शाक-सब्जियां खाएं। आंवला, गाजर मूली, नींबू इत्यादि फायदेमंद है। किसी तरह का तनाव न पालें।

डरें नहीं, इनसे सीखें! हौसले से जीत रहे कोरोना वायरस के खिलाफ जंग

उम्मीद ▸ धीरे-धीरे ठीक हो रहे कोरोना पॉजिटिव मरीज, बुखार भी नहीं

संक्रमित रेलवे गार्ड ने कहा, घबराने की कोई जरूरत नहीं

शशिकांत तिवारी, भोपाल

कोरोना जैसी बीमारी से लड़ने और जीतने के लिए इलाज के साथ-साथ हौसला भी जरूरी है। यहां एम्स में आइसोलेशन में रह रहे भोपाल के तीन कोरोना पॉजिटिव मरीज इसी हौसले के बूते कोरोना के खिलाफ जंग जीतने की राह पर हैं।

स्वस्थ समाज

गत शुक्रवार को कोरोना वायरस से संक्रमित मिले 53 साल के रेलवे गार्ड का कहना है कि यहां किसी तरह की दिक्कत नहीं है, पर अकेलापन लग रहा है। मोबाइल में नेट नहीं चल रहा है। वार्ड में टीवी भी नहीं है, लेकिन किसी तरह की शारीरिक तकलीफ नहीं है। इसलिए चिंता का कोई कारण नहीं है। इसलिए सतर्क जरूर रहें, लेकिन इस बीमारी से घबराने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। एम्स के अलग वार्ड में रखे गए इस गार्ड के पास सिर्फ डॉक्टर व नर्स को आने की इजाजत है।

पहला पॉजिटिव : 26 साल की युवती : लंदन से दिल्ली होते हुए भोपाल आई। 21 मार्च को सैंपल लिया गया। अगले दिन संक्रमित होने की रिपोर्ट आई। उसी दिन एम्स में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों के मुताबिक हालत ठीक है। उसे बुखार भी नहीं है।

दूसरा पॉजिटिव : 62 साल का मीडियाकर्मी (संक्रमित युवती के पिता) : जांच के लिए 24 मार्च को सैंपल लिए गए। संक्रमित पाए जाने पर अगले दिन भोपाल स्थित एम्स में भर्ती कराया गया। बुखार और सांस लेने में दिक्कत समेत किसी तरह की समस्या नहीं है। यह पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ की पत्रकारवार्ता में भी गए थे। उन्होंने 'नवदुनिया' को बताया कि उन्हें कोई तकलीफ नहीं है। पीड़ित बेटी को क्लोरोक्वीन दिया जा रहा, जिससे उसे कुछ दिक्कत जरूर हो रही है।

तीसरा पॉजिटिव : रेलवे का 53 साल का गार्ड : 21 मार्च को कुशीनगर से झांसी और 22 मार्च को सचखंड एक्सप्रेस लेकर भोपाल पहुंचे। इसी दौरान प्लेटफार्म पर किसी मरीज के संपर्क में आने संक्रमण होना का अनुमान। सर्दी, खांसी और बुखार के चलते 25 मार्च को रेलवे अस्पताल में दिखाने पहुंचे, जहां से एम्स रेफर किया गया। उसी दिन हुई जांच में कोरोना पॉजिटिव आया।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/
positive-news

सभी मरीजों की हालत ठीक है। उन्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं है। एम्स के विशेषज्ञों की टीम लगातार निगरानी कर रही है।
– डॉ. सुधीर डेहरिया, सीएमएचओ, भोपाल

डॉ. सुधीर डेहरिया की फाइल फोटो। जागरण

नियमित दवा व मानसिक मजबूती से जिंदगी में लौट रही रोशनी

विदेश से आने के बाद लोग देखकर इस तरह भाग रहे थे, जैसे जंगली जानवर आकर खड़ा हो गया हो

आशीष धामा, नोएडा

सोचा था कि कुछ दिनों पत्नी के साथ इंडोनेशिया घूमने के बाद बेहतर महसूस करूंगा। लेकिन लौटने पर देखा तो हालात पहले जैसे बिल्कुल नहीं थे। लोग देखकर इस तरह भाग रहे थे, जैसे जंगली जानवर आकर खड़ा हो गया हो। कंपनी में पहुंचा तो पदाधिकारियों ने भी दरवाजे से ही जांच कराने के बाद आने की बात कही। दो-चार दिनों बाद ही तबीयत बिगड़ने लगी। आभास हो गया था कि कोरोना वायरस ने अपनी चपेट में ले लिया है। जांच कराई तो रिपोर्ट भी पॉजिटिव निकली। दहशत से जिंदगी अंधेरे में धंसती चली गई। लेकिन एकांत, नियमित दवा व मानसिक मजबूती से एक बार फिर जिंदगी में जीने की आस जाग उठी हैं। यह कहानी है नोएडा के सेक्टर-44 निवासी अनुग्रह पांडेय की। जिन्होंने आठ दिन आइसोलेशन वार्ड में नियमित दवा व चिकित्सकों का सहयोग कर कोरोना से जंग जीत ली है।

मूलत : राजस्थान के जिला बांसवाड़ा के रहने वाले अनुग्रह पांडेय नोएडा के सेक्टर-127 स्थित एक नामचीन कंपनी में साफ्टवेयर इंजीनियर हैं और पत्नी के साथ सेक्टर-44 में रह रहे हैं। वह जनवरी के अंतिम सप्ताह में पत्नी के साथ इंडोनेशिया के बाली शहर में घूमने गए थे। अनुग्रह बताते हैं कि उन्होंने अपनी यात्रा अच्छे से बिताई। लेकिन लौटते समय एयरपोर्ट पर आभास हुआ कि शरीर में कुछ परिवर्तन हो रहा है। कोरोना का शक कतई भी नहीं था। पत्नी के साथ हंसते-बोलते दो फरवरी को स्वदेश लौट आए। सोसायटी में कदम ही रखा था कि लोगों ने बुरे तरीके से बरताव किया। घर पहुंचते ही शरीर का तापमान बढ़ने लगा और तबीयत बिगड़ती चली गई। मामले की सूचना स्वास्थ्य विभाग को दी। विभाग ने दोनों को क्वारंटाइन वार्ड में रखा और सैंपल जांच के लिए भेज दिया। पत्नी की रिपोर्ट तो नेगेटिव मिली, लेकिन मुझे आइसोलेशन में भर्ती कर दिया। आइसोलेशन वार्ड में रहना जेल से भी बदतर लग रहा था। शुरुआती दौर में मूलभूत सुविधाओं का भी बेहद अभाव रहा। कई बार चिकित्सकों पर गुस्सा आया। आंखों में हर समय परिवार के लोगों की तस्वीर रहती थी। कई बार आंसू भी आए। लेकिन चिकित्सक समय-समय पर मनोबल बढ़ाते रहे। खानपान का ख्याल रखा और किसी तरह की परेशानी नहीं होने दी। अच्छी बात यह थी कि वार्ड में मोबाइल के प्रयोग पर प्रतिबंध नहीं था। ज्यादा समय स्वजनों से बातचीत में ही गुजरता था।

ग्रेनो में तीन मरीज इच्छाशक्ति से जीते

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा

ग्रेटर नोएडा के कासना स्थित राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान (जिम्स) से पिछले दिनों कोरोना वायरस से संक्रमित तीन मरीज ठीक होकर निकले। इनका उपचार कर रहे चिकित्सकों का कहना है कि इनके ठीक होने में सबसे अहम इनकी इच्छा शक्ति ने निभाई। तीनों की दूसरी रिपोर्ट भी नेगेटिव आई और अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

कोरोना पॉजिटिव होने के बाद इन तीनों को जिम्स में भर्ती कराया गया था। इनमें एक युवती और दो युवक थे। युवती फ्रांस से आई थी और 15 मार्च को संस्थान के आइसोलेशन वार्ड में भर्ती हुई थी। दूसरा युवक इंडोनेशिया से आया और 18 मार्च को भर्ती हुआ था। वहीं तीसरा युवक 12 मार्च को भर्ती हुआ था। वह अपनी कंपनी में विदेश से आए अधिकारी से संक्रमित हुआ था। तीनों ने कोरोना को मात दिया है। जिम्स के निदेशक ब्रिगेडियर डॉक्टर राकेश कुमार गुप्ता ने बताया कि छह डॉक्टरों सहित 22 लोगों की नर्सिंग टीम आइसोलेशन वॉर्ड में काम कर रही है। तीन मरीज जो ठीक होकर निकले, इसमें सबसे अधिक भूमिका इच्छा शक्ति ने निभाई। पोषक तत्वों वाला खाना दिया गया। तरल पदार्थ का अधिक सेवन कराया गया। टीम के सदस्य मरीजों से बातचीत करते रहे। अकेला महसूस नहीं होने दिया। इससे उनकी इच्छा शक्ति कमजोर नहीं हुई। केवल गर्म पानी दिया।

'हिम्मत ही है वायरस की दवा'

अनिल भारद्वाज, गुरुग्राम : कोरोना वायरस को मात देकर कई दिन बाद घर पहुंची युवती का कहना है कि दुनिया कह रही है कि इसकी कोई दवा नहीं है, लेकिन मैं कहती हूं कि हिम्मत इसकी दवा है। इससे डरें नहीं। उन्होंने सलाह दी कि रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) को मजबूत रखिए तो वायरस आसपास नहीं आएगा। आप ने स्वयं को बीमार मान लिया तो कोई दवा असर नहीं करेगी। पालम विहार निवासी 22 वर्षीय इस साहसी युवती ने बताया कि कोरोना वायरस से ग्रसित होने का पता चलने पर वह और उनके स्वजन घबरा गए थे। उनके कारण भाई और पिता व नानी भी संक्रमित मिले तो पूरा परिवार एक-दूसरे की चिंता में डूब गया। चीन, ईरान, अमेरिका, स्पेन और इटली की खबरों ने सभी को चिंतित कर रखा था। लेकिन मैं अस्पताल पहुंची तो दृढ़ संकल्प लिया कि कोरोना को हराकर घर जाना है और मैं आज अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति की बदौलत स्वस्थ हूं। मेरा भाई भी स्वस्थ है। डॉक्टरों के मुताबिक पिता व नानी भी स्वस्थ हैं।

महामारी के इस कठिन दौर में आश्रम में ही वक्त व्यतीत कर रहे बाबा रामदेव

सात्विक व अहिंसक जीवन पद्धति से ले रहे ऊर्जा

अनूप कुमार • हरिद्वार

योग गुरु बाबा रामदेव सात्विक व अहिंसक जीवन पद्धति का अनुकरण कर रहे हैं। वे कहते हैं कि महामारी के इस कठिन समय से पार पाने के लिए हमारे पास घर (आश्रम) में रुकने के सिवा दूसरा विकल्प नहीं है। लेकिन, इस अवधि में हम स्वस्थ, सात्विक व अहिंसक जीवन पद्धति अपनाकर चुनौतियों से निपटने के लिए ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं।

स्वाध्याय साधना को समय

बाबा का कहना है कि समय के सदुपयोग में वह स्वाध्याय साधना को ज्यादा वक्त देते हैं। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के साथ ही अन्य विषयों के ग्रंथ व शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। वे कहते हैं, इससे न केवल हमारी धार्मिक एवं आध्यात्मिक समझ, बल्कि धार्मिक व आध्यात्मिक विश्वास और श्रद्धा भी विकसित-परिष्कृत होती है। योगाभ्यास भी इसका हिस्सा है। इसमें ध्यान और प्राणायाम बेहद जरूरी है। प्राणायाम से हमारी प्राण शक्ति बढ़ती है तो ध्यान से आत्म-शक्ति। यही इम्युनिटी है, जिसके मजबूत रहने पर हम हर प्रकार की बीमारियों से लड़ सकते हैं।

ऐसे बिताया दिन

मैं स्वयं भी यही कर रहा हूं। सुबह चार बजे उठकर प्राकृतिक नियमों का पालन करने के बाद स्नान, ध्यान, योग, यज्ञ व हवन में करीब तीन घंटे का समय देता हूं। यह मेरी हमेशा की दिनचर्या है। रात दस बजे सोकर सुबह चार उठ जाना स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ मस्तिष्क की निशानी है। बाबा बताते हैं कि सुबह उठने पर वह गुनगुने पानी में आमला, ऐलोवेरा या फिर गिलोय व तुलसी का सेवन करते हैं। इससे शरीर को आंतरिक ऊर्जा मिलती है। पाचन तंत्र मजबूत होता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। कभी-कभी लहसुन या फिर शहद के साथ प्याज का रस भी ले लेते हैं। यह वात रोगों में लाभदायी और खून को पतला करता है। जरूरी होने पर वह गर्म पानी में नींबू-अदरक भी लेते हैं। यह सामान्य स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। चाय-कॉफी तो वह बिल्कुल नहीं लेते।

एकांत-ध्यान और सात्विक आहार

बाबा बताते हैं कि शारीरिक ऊर्जा बनाए रखने के लिए बीच-बीच में मैं फलाहार के साथ तरल पेय का सेवन करता हूं। दोपहर का भोजन दो से तीन बजे के बीच हो जाता है। इसमें अन्न, खासकर गेहूं-चावल की मात्रा सूक्ष्म और बिना तेल-मसाले की दाल, हरी सब्जी व सलाद की मात्रा ज्यादा होती है। संध्या काल में एकांत-ध्यान और विशेष कार्य न होने पर कुछ देर विश्राम के बाद वह जिम्मेदारियों से संबंधित कार्यों में समय देता हूं। रात का अल्पाहार सात से आठ बजे के बीच हो जाता है और इसके तीन घंटे बाद सोने चला जाता हूं। लेकिन, सोने से पहले खुले में टहलना कभी नहीं भूलता।'

हर जिम्मेदारी का निर्वहन

बाबा रामदेव बताते हैं कि सुबह आठ बजे के आसपास नाश्ते में वह हर दिन अलग-अलग जूस, अंकुरित अन्न, दलिया आदि का सेवन करते हैं। कई मौकों पर दही-मट्ठा भी इसका हिस्सा होता है, लेकिन तब बाकी चीजें नहीं होती हैं तो। जरूरी होने पर वह नाश्ते में दूध व दही का भी इस्तेमाल कर लेते हैं। इस सबसे फारिग होने पर पतंजलि सहित अन्य जिम्मेदारियों का निर्वहन, सोशल मीडिया के तमाम प्लेटफार्म पर लोगों की जिज्ञासा शांत करना भी उनकी दिनचर्या में शामिल है। बीच-बीच में स्वाध्याय साधना भी चलती रहती है। इससे मन-विचार व कर्म को परिष्कृत करने और ज्ञान को बढ़ाने के साथ ही आध्यात्मिक विचार व श्रद्धा को मजबूती मिलती है। कुछ देर वह अपने लोगों और साथ में काम करने वालों के साथ अहम मुद्दों पर विमर्श, आने वाले समय व दिनों की रणनीति पर चर्चा करते हैं। इसके बाद इन विषम परिस्थितियों में पतंजलि योगपीठ और उसके विभिन्न प्रकल्पों में काम कर रहे कर्मियों का मनोबल बनाए रखने के लिए विभिन्न स्तरों पर संवाद करते हैं।

कंगना ने पीएम मोदी को बताया देश का बेस्ट लीडर

जागरण संवाददाता, कुल्लू : बॉलीवुड क्वीन कंगना ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दुनिया का बेस्ट लीडर बताया है। उन्होंने कहा कि पीएम अपना बेस्ट देंगे और देश को इस संकट से जरूर बाहर निकालेंगे। उन्होंने यह जानकारी सोशल मीडिया में साझा की है। कंगना ने लोगों से लॉकडाउन का पालन करने की अपील की। उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस को हल्के में न लें। कोरोना से पार पाना किसी बड़ी जंग को जीतने के बराबर होगा।

कंगना। (फाइल)

भारत विकासशील देश है, इसलिए कोरोना की मार हमारे लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं है। लोग घरों से बाहर न निकलें और मजबूरी में निकलना ही पड़े तो शारीरिक दूरी बनाए रखें। बॉलीवुड क्वीन कंगना इन दिनों अपने घर मनाली में हैं। कंगना मनाली में लॉकडाउन के हर नियम का पालन कर रही हैं। साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से देशवासियों को भी लॉकडाउन के नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। इसके अलावा लॉकडाउन के दौरान किताबें पढ़कर व व्यायाम करके समय बिता रही हैं।

नेगेटिव रिपोर्ट के बाद भी क्वारंटाइन रहें

डॉक्टर का कहना है

प्रो. सरमन सिंह
निदेशक, एम्स, भोपाल।

नवदुनिया, भोपाल : अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), भोपाल के निदेशक प्रो. सरमन सिंह का कहना है कि थर्मल स्क्रीनिंग में नेगेटिव आने का मतलब यह नहीं कि वह व्यक्ति कोरोना वायरस से संक्रमित नहीं हो सकता। यह यंत्र तभी काम करेगा, जब शरीर का तापमान बढ़ा हुआ। यानी आप बुखार से पीड़ित हों। इसलिए सावधान रहें और लक्षण दिखने पर तुरंत जांच कराएं।

थर्मल स्क्रीनिंग से संतुष्ट न हों

किसी व्यक्ति के कोरोना से संक्रमित होने के 2 से 10 दिन के भीतर बुखार के लक्षण दिखाई देते हैं, इसलिए थर्मल स्क्रीनिंग में नेगेटिव पाए जाने के बाद भी यात्री को संतुष्ट नहीं होना चाहिए। उसे अपने घर पर ही 15 दिन तक क्वारंटाइन रहना चाहिए। कई प्रवासी-अप्रवासी भारतीय यात्रियों ने यहीं गलती की है, जिसका खामियाजा आज देश भुगत रहा है।

बुजुर्गों को ज्यादा खतरा

कोविड-19 वायरस से संक्रमित अधिकांश लोग सामान्य सांस संबंधी बीमारियों से पीड़ित होते हैं। ऐसे ज्यादातर लोगों के बगैर किसी इलाज के ठीक होने की संभावना भी होती है। फिर भी वरिष्ठ नागरिकों के लिए वायरस गंभीर खतरा है। खासकर जो हृदय रोग, मधुमेह, श्वास रोग तथा कैंसर जैसी बीमारियों से पीड़ित हैं। उनके लिए ज्यादा खतरा है।

डॉक्टर की सलाह मानें

सबसे जरूरी है कि विशेषज्ञों व सरकारी निर्देशों का पालन करें। बार-बार हाथ धोने या एल्कोहल युक्त सैनिटाइजर से हाथ मसलने तथा चेहरे को न छूने की आदत डाले। हाथों को साबुन तथा पानी से कम से कम 20 सेकंड तक धोएं। छींकते और खांसते समय साफ-सफाई का ध्यान रखें। अन्य लोगों की तरफ मुंह करके न छींके। ऐसा करते वक्त कोहनी के मध्य मुंह रख लें।

भ्रांतियों पर ध्यान न दें

कोरोना को लेकर बहुत सी भ्रांतियां हैं। सोशल मीडिया में तरह-तरह के मैसेज चल रहे हैं, जिनमें विभिन्न तरह के दावे किए जा रहे हैं। इन पर ध्यान नहीं दें। किसी विशेष तापमान में कोरोना वायरस के घटने-बढ़ने का कोई पक्का दावा नहीं किया जा सकता। लिहाजा से इन बातों पर भरोसा न करें। यह कठिन समय है। धैर्य और विवेक से काम लें।

शारीरिक दूरी बनाकर रखें

खांसने व छींकने वाले व्यक्ति से एक मीटर की दूरी बनाकर रखें। दरअसल, खांसता या छींकता पर नाक या मुंह से सूक्ष्म आकार के द्रव्य कण निकलते है, जिसमें विषाणु हो सकता है। यह द्रव्य सामान्यत: एक मीटर फैलता है। नजदीक होने पर ये वायरस श्वास के अंदर जा सकते हैं।

...रिपोर्ट निगेटिव आई तो जान में जान आई

अनिल तिवारी, पटना

पूरी दुनिया में कोरोना से उपजे संकट काल में आम-अवाम की सबसे ज्यादा उम्मीदें चिकित्सा जगत से हैं। सरकारी हों या निजी, स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े डॉक्टर समेत सभी लोग निर्भीक होकर अपना कर्तव्य निभाएं। यह कहना है नालंदा मेडिकल कॉलेज (एनएमसीएच) जो कोरोना अस्पताल में तब्दील हो चुका है, के सहायक प्रोफेसर डॉ. किशोर झुनझुनवाला का। उन्होंने 22 मार्च को अस्पताल आए उस संक्रमित युवक का इलाज किया जो स्कॉटलैंड से दिल्ली उतरने के बाद पटना आया और पहले एम्स में भर्ती हुआ। एम्स से उसे कोरोना अस्पताल भेज दिया क्योंकि उस वक्त वहां जांच तक की सुविधा नहीं थी। युवक बिहार का पहला कोरोना संक्रमित है।

ऐसे किया खुद को क्वारंटाइन : डॉ. झुनझुनवाला ने बताया कि उन्होंने संक्रमित युवक का इलाज शुरू कर दिया था, लेकिन समय कम होने से न तो ग्लव्स पहन पाया और न ही बचाव के दूसरे जरूरी उपाय किए। बस मरीज के उपचार में लग गया। रात में सीनियर डा.अजय सिन्हा के साथ मंथन कर निश्चय किया कि मुझे भी क्वारंटाइन हो जाना चाहिए। माथे पर चिंता की लकीरें पड़ गईं, परंतु धैर्य और जज्बे ने साथ नहीं छोड़ा, सो सीधे घर गया। पत्नी और बच्चों को फोन कर गेट के पास बुलाया। बाहर के उस कमरे को सैनिटाइज करने को कहा जिसमें खुद को क्वारंटाइन करना था। मुझे देख नर्वस हुए घर के लोगों को जरूरी दवाएं खाने को कहा और समझाते हुए उन्हें खुद से अलग रहने के लिए तैयार किया। इसके बाद दवा, कपड़े, कीटनाशक, सैनिटाइजर समेत सभी जरूरी प्रबंध करा कमरे में कैद हो गया।

परिवार ने दिया भरपूर साथ : 22 मार्च की रात से 27 मार्च की सुबह तक क्वारंटाइन डॉ. झुनझुनवाला ने बताया कि दिन और रात टीवी देखने, किताबें पढ़ने, मोबाइल पर परिवार से बातचीत कर बीतते थे। जांच रिपोर्ट में क्या आएगा, इसे लेकर चिंता रहती जिससे नींद नहीं आती थी। लेकिन, अभिभावकों, पत्नी, पुत्र और बेटी ने खूब साथ दिया। लॉक कमरे से बच्चों को काल, वीडियो काल कर पढ़ाई करने को कहता, उनसे कविता, कहानियां सुनता, बाहर के हालचाल लेता रहा। इसके अलावा कमरे और बाथरूम की सफाई, गर्म पानी से नहाने, कपड़े धोने आदि में समय बीतता था। खाना सुरक्षित तरीके से पत्नी दरवाजे पर रख देती और चाय मैं खुद अंदर बना लेता। 26 मार्च को जब मेरे सैंपल की जांच रिपोर्ट निगेटिव आई तो उछल पड़ा कि कोरोना से जंग जीत गया। फिर भी सावधानी बरतने को कमरे में ही रहा। अस्पताल के साथियों ने फोन पर बधाई दी तो ड्यूटी की इच्छा जताई। 27 मार्च से फिर जुट गया हूं मानव धर्म और कर्तव्य का पथ निभाने में।

क्वारंटाइन के बाद फिर काम में जुटे डॉ.किशोर झुनझुनवाला अपने परिवार के साथ। सौजन्य : स्वजन

अब प्रशिक्षण दे रहे स्टॉफ को : ड्यूटी आने पर पैरा मेडिकल स्टाफ को प्रशिक्षित करने का बीड़ा उठाया। शनिवार को डमी के तौर पर कर्मियों को सामने रखकर पीपीई किट व मास्क पहनने, कोरोना के मरीज को छूने से लेकर शव सुरक्षित उठाने और पैकिंग करने की जानकारी दी। इससे कोरोना मरीज के इलाज को लेकर चिकित्साकर्मियों में फैली भ्रांतियां दूर हो रही हैं। डर खत्म हो गया।

घर को कैसे बनाएं कोविड-19 प्रूफ

कोरोना वायरस डिजीज-19 (कोविड-19) के प्रकोप ने दुनिया भर में लोगों की आदतों में बदलाव ला दिया है। सैनिटाइजेशन और बार-बार हाथ धोना इनमें शुमार है। लेकिन इसके बारे में भी जानना जरूरी है कि घरेलू कामकाज करते समय किन बातों का ख्याल रखें ताकि घर को भी कोविड-19 प्रूफ और स्वच्छ बनाए रख सकें।

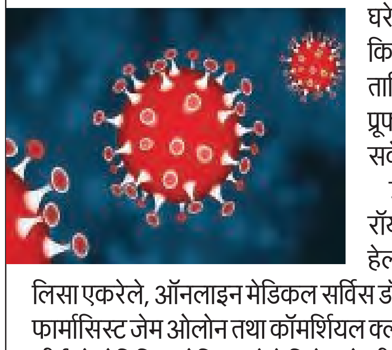

इस संबंध में जानते हैं- रॉयल सोसायटी फॉर पब्लिक हेल्थ की ट्रस्टी तथा अध्यक्ष लिसा एकरेले, ऑनलाइन मेडिकल सर्विस डॉक्टर-4-यू के कंसलटेंट फार्मासिस्ट जेम ओलोन तथा कॉमर्शियल क्लीनिंग फर्म क्लीनोलॉजी के सीईओ डोमिनिक पोन्यिाह जैसे विशेषज्ञों की कुछ सलाह :

इन मौकों पर अवश्य धोएं हाथ

- बाहर से घर लौटने या खरीददारी या व्यायाम करने के तत्काल बाद।
- डिशवेयर को लोड करने के बाद, क्योंकि हो सकता है कि प्लेट खाली होने के बाद या पहले संक्रमित हों।
- गंदे हाथ कटलरी को संक्रमित कर सकते हैं। इसलिए खाने-पीने की कोई भी सामान लेने से पहले भी ताकि ग्लास, मग, क्रॉकरी या कटलरी को संक्रमित होने से बचा सकें।
- सफाई के लिए गंदे कपड़े निकालने और साफ कपड़े लेने से पहले।
- जहां तक संभव हो सके चेहरा छूने से पहले। खासकर यदि घर लौट रहे हों तो जरूर ही।
- यदि आप कहीं से कार से आए हैं तो घर का सामान छूने से पहले। इसके लिए कार में एंटी बैक्टीरियल वाइप्स रखें।

फैब्रिक कंडीनशर से करें तौबा

यद्यपि फैब्रिक सॉफ्टनर या कंडीशनर कपड़ों को सुगंधित तथा मुलायम बनाते हैं लेकिन यह उस पर एक अदृश्य परत भी छोड़ता है। जब आप कपड़े पहनते हैं तो यह आप तक पहुंच जाता है। यह भले ही थोड़ा अटपटा लगे लेकिन फैब्रिक सॉफ्टनर को छोड़ने से धूल कणों की संख्या कम हो जाती है।

त्वचा की पपड़ी हटाते रहें

सप्ताह में एक-दो बार त्वचा की पपड़ी एब्रैसिव स्पॉन्ज से निकालते रहें ताकि डेड स्कीन निकल जाए और आपका त्वचा फ्रेश रहे। इसका फायदा यह भी है कि धूल को भी दूर रख सकते हैं।

महीने में एक बार सीलिंग और दीवार को वैक्यूम करें

घर के अंदर भी बहुत सारे छोटे धूल कण होते हैं, जो सांसों के जरिए फेफड़े तक पहुंचते हैं। यह स्थिति खासकर अस्थमा रोगियों के लिए बहुत ही खतरनाक होता है। इसलिए झाड़ू-पोछा करने से पहले महीने में कम से कम एक बार सीलिंग और दीवार को वैक्यूम जरूर करें।

- सोफा और कुर्सियों की सफाई के लिए रबड़ का दस्ताना पहनें।
- यदि घर में किसी को अलर्जी है सप्ताह में कम से कम एक या दो बार डस्टिंग जरूर करें।
- पौधों को भी धूल मुक्त रखें। इसके लिए वाटर स्प्रे के इस्तेमाल से बेहतर है कि कंप्रेस्ड एयर का इस्तेमाल करें। क्योंकि पानी के इस्तेमाल से फफूंद पनप सकता है।
- की-बोर्ड की सफाई के लिए एयर-स्प्रे का इस्तेमाल बाहर करें ताकि करें ताकि धूल घर के अंदर नहीं उड़े।

बैम्बो टॉयलेट रोल का करें इस्तेमाल

नॉन-पेपर टॉयलेट रोल पारंपरिक टॉयलेट का अच्छा विकल्प है। इसके लिए बैम्बो टॉयलेट पेपर शीट का इस्तेमाल कर सकते हैं, जिसे फाड़ने पर छोटे धूल कण नहीं निकलते हैं। इसका इस्तेमाल किचन रोल और टिशू पेपर के विकल्प के रूप में भी किया जा सकता है। हालांकि बैम्बो पेपर रेगुलर टिशू पेपर से थोड़ा महंगा जरूर है लेकिन अब यह लोकप्रिय हो रहा है।

घर के बाहर करें कंघी और मेकअप

- बाल संवारने के लिए कंघी घर के बाहर करें ताकि स्काल्प स्किन (रुसी) घर के अंदर नहीं गिरे।
- पालतू पशुओं के लिए भी यही तरीका अपनाएं।
- जब धूप नहीं हो तो मेक-अप घर के बाहर लगाएं। इससे मेक-अप के सामानों से बनने वाले धूल से बचा जा सकेगा। आइशैडो, पॉवडर तथा चमकदार उत्पाद धूल पैदा करते हैं।
- हेयर स्प्रे तथा ड्राई शैंपू के इस्तेमाल से भी बचें।

(स्रोत : डेली मेल)

दैनिक जागरण

दान देने से कोई गरीब नहीं होता

पलायन की त्रासदी

कोरोना वायरस के भयावह खतरे से निपटने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद कुछ समस्याएं आनी ही थीं, लेकिन इस बारे में शायद ही किसी ने अनुमान लगाया हो कि महानगरों से एक बड़ी संख्या में लोग अपने घर-गांव जाने के लिए निकल पड़ेंगे। दुर्भाग्य से ऐसा ही हुआ, दिल्ली और कुछ अन्य महानगरों के दिहाड़ी मजदूर, कारखाना श्रमिक और अन्य अनेक लोग जिस तरह अपने घर-गांव जाने के लिए उमड़ पड़े उससे राज्य सरकारों के साथ केंद्र सरकार के समक्ष भी यकायक यह चुनौती आ खड़ी हुई कि इन सबको राहत देने के साथ ही उनके बीच कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से कैसे रोका जाए? यह संतोषजनक है कि केंद्र एवं राज्य सरकारें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के इन लोगों को सुरक्षित ठिकानों पर ठहराने और उनके खाने-पीने की उचित व्यवस्था करने में जुटी हुई हैं। इस व्यवस्था में समाज के सक्षम तबके की ओर से बढ़-चढ़कर जिस तरह योगदान दिया जा रहा है वह समस्या की गंभीरता को कम करने वाला तो है ही, राष्ट्रभाव को बल देने वाला भी है।

महानगरों से हजारों लोगों का पलायन एक मानवीय त्रासदी के अलावा और कुछ नहीं। इस पर गंभीरता से विचार होना चाहिए कि आखिर लॉकडाउन की घोषणा के एक-दो दिन बाद अचानक ऐसा क्या हुआ कि महानगरों से हजारों लोग अपने गांव जाने के लिए निकल पड़े? जब बार-बार यह कहा जा रहा था कि जो जहां है वह वहीं रहे तो फिर ऐसी नौबत क्यों आई कि हजारों-हजार लोग अनजानी आशंका से घिर गए और अपना ठौर-ठिकाना छोड़कर निकल लिए? आखिर अपने कठोर परिश्रम से शहरी जीवन को संचालित करने वालों के प्रति हमारे महानगर इतने निष्ठुर क्यों नजर आए? ये वे सवाल हैं जिन पर हर किसी को और खासकर राजनीतिक वर्ग को कहीं अधिक गहनता से विचार करना होगा। यह वही राजनीतिक वर्ग है जो दिन-रात गरीबों-मजदूरों के हित की बातें करता है, लेकिन जब उसके लिए अपने कहे को सार्थक साबित करने का अवसर आया तो वह नाकामी की इबारत लिखते हुए पाया गया। यह अच्छा हुआ कि मजदूरों और कामगारों की पलायन की त्रासदी का अहसास खुद प्रधानमंत्री ने किया। उन्होंने मन की बात कार्यक्रम के जरिये इस त्रासदी से दो-चार हो रहे लोगों से माफी मांगकर अपने बड़प्पन का परिचय दिया। निःसंदेह उनके खेद जताने का यह मतलब नहीं निकाला जाना चाहिए कि लॉकडाउन को अनावश्यक बताने वाले सही हैं। लॉकडाउन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य था। भारत सरीखे विशाल आबादी और कमजोर स्वास्थ्य संसाधन वाले देश के लिए यही उचित था कि वह लॉकडाउन की जल्द घोषणा करके उसे सफल बनाने में जुट जाए।

भविष्य की बुनियाद

कोरोना के खिलाफ जंग के लिए उत्तराखंड सरकार और शासन की तैयारियां कितनी मुकम्मल होंगी, यह तो आने वाला समय ही बताएगा, लेकिन कम से कम इस बहाने प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाएं दुरुस्त होने की उम्मीद जगी है। चिकित्सकों के सभी रिक्त पदों को भरने के लिए प्रस्ताव भेजा जा चुका है। दवा और नए उपकरण खरीदे जा रहे हैं। अस्पतालों को उपकरणों से सुसज्जित किया जा रहा है। यह भले ही कोरोना के लिए किया जा रहा है, लेकिन निश्चित तौर पर इसका फायदा भविष्य में भी मिलेगा। राज्य गठन को लगभग बीस वर्ष हो चुके हैं, लेकिन प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं अभी तक पटरी पर नहीं आ पाई हैं। प्रदेश अभी भी चिकित्सकों की कमी से जूझ रहा है। यह बात अलग है कि बीते तीन वर्षों में स्वास्थ्य सेवाएं सुधारने की दिशा में तेजी से काम हुआ है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किए जाने की गुंजाइश है। दरअसल, प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों में बड़े निजी अस्पतालों के कारण स्वास्थ्य सेवाएं फिर भी ठीक हैं, लेकिन पर्वतीय क्षेत्रों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। आज भी गांवों में यदि कोई बीमार होता है तो उसे इलाज के लिए कई किलोमीटर दूर स्थित सरकारी अस्पतालों तक लाना पड़ता है। उस पर पर्वतीय क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति उनकी समस्याओं को और बढ़ाती हैं। राज्य गठन के बाद प्रदेश में अभी तक आई सरकारों ने पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने और इन्हें सुधारने को प्रयास तो किए, लेकिन मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में यह पूरी तरह धरातल पर नजर नहीं आए। आज भी पर्वतीय क्षेत्रों में चिकित्सकों की भारी कमी है। यहां स्वास्थ्य विभाग का ढांचा भी बहुत मजबूत नहीं है। हालांकि, अब इसके लिए बजट में प्रविधान किए गए हैं और थोड़ा बहुत काम भी हो रहा है। अब सरकार ने जिस तरह कोरोना से निपटने के लिए ब्लॉक स्तर तक प्रशासनिक मशीनरी के दायित्वों का निर्धारण किया है और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तक उपकरण पहुंचाने का दावा किया है। उससे भविष्य के लिए एक उम्मीद की किरण जरूर नजर आ रही है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार की ये तैयारियां कोरोना से जंग जीतने का आधार बनें। जो स्वास्थ्य सेवाएं पर्वतीय क्षेत्रों में दुरुस्त की जा रही हैं, उन्हें बरकरार रखा जाए तो भविष्य में बेहतर सुविधाएं मिल पाएंगी।

छोड़ना होगा प्रकृति से लड़ना

हृदयनारायण दीक्षित

अब हमें यह मानना होगा कि प्रकृति के अधिकाधिक दोहन को ही विकास मानने वाली सोच पृथ्वी को महामारियों से नहीं बचा सकती

मृत्यु निश्चित है। वह सूचना देकर नहीं आती, लेकिन महामारियां मृत्यु के जयघोष के साथ आक्रमण करती हैं। लोग थोक में मरते हैं। मौत का भय भयानक सामाजिक रूप लेता है। संप्रति मानवता ऐसे ही मृत्युभय से कांप रही है। दुनिया के तमाम देशों के साथ भारत भी महामारी से संघर्षरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यकारी निदेशक माइकल रयान ने कहा है कि 'भारत के पास कोरोना से लड़ने की क्षमता है। इसके पास चेचक और पोलियो को समाप्त करने का अनुभव है।' उन्होंने विश्वास जताया है कि भारत अपनी तैयारियों से कोरोना के तीसरे चरण से बचने में कामयाब होगा।' भारत पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शी हो सकता है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने 'व्हाट इंडिया कैन टीच अस-भारत हमें क्या सिखा सकता है' व्याख्यान माला (1882) में कहा था, 'हम हर चीज के अभ्यस्त होकर आश्चर्य करना छोड़ देते हैं। अचानक आए भूकंप के समान हमारे संरक्षकों को किस बात ने चौंकाया होगा? उनकी स्थायी धारणाओं को किसने ध्वस्त किया होगा।'आपदाएं स्थापित धारणाएं तोड़ती हैं।

कोरोना के अंत के बाद का विश्व सोच-विचार, आचार-व्यवहार और आहार आदि की आदतों में भिन्न होगा। विज्ञान को अपनी सीमा का पता चल गया है। प्रकृति की अनंत शक्ति का परिचय मिल गया है। स्वयं को महाशक्ति मानने वाले देश आत्मसमर्पण कर रहे हैं। विश्व इतिहास में अपने ढंग की यह पहली आपदा है। सामान्यतया इतिहास के विवरण में 'ईसा पूर्व और ईसा बाद' के काल विभाजन हैं। अमेरिका पर 9/11 हमले के बाद वैश्विक सामाजिक व्यवहार में आधारभूत बदलाव हुए थे। अब इतिहास के कालविभाजन की रेखा 'कोरोना के पहले और कोरोना के बाद' की हो सकती है। आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव में दुनिया को ग्लोबल विलेज यानी भूमंडलीय गांव माना गया था। खासकर व्यापार में राष्ट्र-राज्य की सीमाएं शिथिल हो रही थीं, लेकिन कोरोना आपदा से ये सीमाएं सील हैं। विमान सेवाएं बंद हैं। सामाजिक व्यवहार बदल गए हैं। वार्ता करने में फासले की दूरी विशेषज्ञ बता रहे हैं। निकट वार्ता का सामाजिक व्यवहार बदल गया है। हम सबकी आंतरिक मानसिक बदलाव की गति तेज रफ्तार है।

भारत के धर्म, दर्शन और लोकव्यवहार में अनुकूलन की शक्ति है। आपदाओं में आश्चर्यजनक एकता और सामान्य जीवन में अनेकता यहां की प्रकृति है। प्रधानमंत्री मोदी ने जनता कर्फ्यू की अपील की। देश ने अपील स्वीकार की। उन्होंने 21 दिन के लॉकडाउन की अपील की। हाथ जोड़े। सबने माना, लेकिन अपवाद भी रहे और हैं भी। ऐसी महामारी में अपवाद की ताकत अनुशासित करोड़ों देशभक्तों की ताकत से ज्यादा बड़ी और खतरनाक भी होती है। लॉकडाउन में कानून की शक्ति है। एपिडेमिक डिजीज एक्ट व आपदा प्रबंधन कानून 2005 है। भारतीय दंड संहिता की धारा 188, 269 व 270 में भी कड़ी व्यवस्था है। धारा 144 है। देश को कानून का पालन करना ही चाहिए। विकल्पहीन महामारी में घर में ही रहना उचित है। मनुष्य घर संवारने के लिए श्रम करते हैं। घर आश्रय है। सब घर में रहें, अपने लिए, अपनों के लिए, राष्ट्र के लिए। घर में रहते हुए कम से कम एक और परिवार के पोषण से यह संघर्ष आसान होगा।

चिकित्सा विज्ञानी देर-सबेर कोरोना की दवा खोज लेंगे। संभवतः बचाव का टीका भी, लेकिन तेज रफ्तार संक्रमण वाली महामारियों से लड़ना तब भी व्यावहारिक रूप में कठिन रहेगा। क्या अरबों की आबादी वाले विश्व के प्रत्येक व्यक्ति का टीकाकरण व्यावहारिक होगा? मान लें कि ऐसा संभव है तब क्या इसी तरह की अन्य नई बीमारियां और जानलेवा वायरस भविष्य में दस्तक नहीं देंगे? वैज्ञानिक रोगों से लड़ने की ही औषधि खोज सकते हैं, लेकिन आधुनिक मनुष्य प्रकृति से लड़ रहा है। पृथ्वी के मर्मस्थल खोदे जा रहे हैं। ग्लोबल विलेज में भयंकर ग्लोबल वार्मिंग है। विज्ञान का सदुपयोग लोकमंगल प्रेमी ही कर सकते हैं। प्रकृति के अधिकाधिक दोहन को ही विकास मानने वाली सोच पृथ्वी को महामारियों से नहीं बचा सकती। प्रकृति की लयबद्धता-ईकोलोजी-तोड़ने के परिणाम को महामारी मानने से इन्कार नहीं किया जा सकता। इस संदर्भ में लॉकडाउन के परिणाम ध्यान देने योग्य हैं। महानगरों के वायु प्रदूषण में गिरावट आई है।

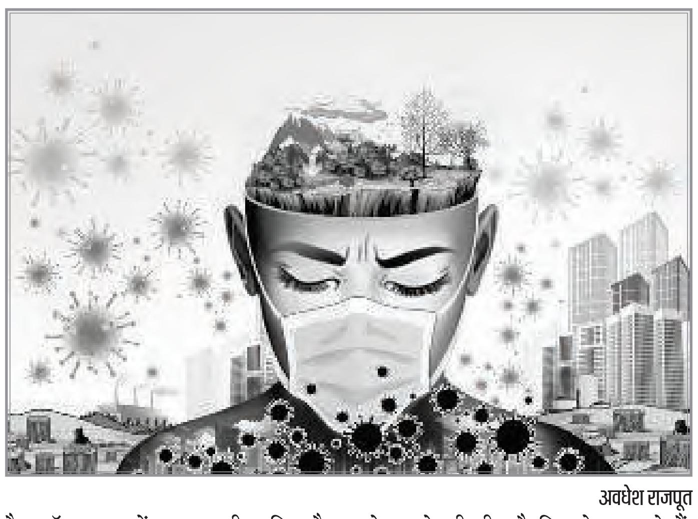

अवधेश राजपूत

आज सारी दुनिया में सोशल डिस्टेंसिंग यानी शारीरिक दूरी की चर्चा है। सोशल डिस्टेंसिंग का अर्थ समाज से अलगाव नहीं है। जीवन की सभी गतिविधियां सामाजिक हैं। मन की निकटता को वैदिक ग्रंथों में श्रेष्ठ बताया गया है। समाज की दीर्घजीविता के लिए प्रत्येक सदस्य का परस्पर दूर रहना जरूरी है। नमस्कार में मन की निकटता की अभिव्यक्ति है। ऋग्वेद में नमस्कार को देवता कहा गया है। नमस्कार में देह ऊर्जा या विकार का संक्रमण दूसरे को नहीं होता। हम सब प्रकृति के अंग हैं। प्रकृति अराजक नहीं है। पृथ्वी और सभी ग्रह सुसंगत नियमों में गतिशील हैं। अग्नि प्रवाह उर्ध्वगामी है। जल प्रवाह ऊंचे से नीचे प्रवाहित हैं। भारतीय चिंतन में मनुष्य देह अन्नमय कोष है। अन्न, फल आदि प्रकृति की देन हैं। कुत्ते, बिल्ली, चमगादड़, सांप आदि जीव खाद्य पदार्थ नहीं हैं। वे प्रकृति का ही सृजन हैं, लेकिन लाउत्से सरीखे दार्शनिकों को जन्म देने वाले चीन में लोग इन्हें खाते हैं। दुनिया ग्लोबल विलेज है तो चीन जैसे देशों की जीवनशैली का खामियाजा हम सभी को भुगतना पड़ेगा।

विश्व को ऐसे तमाम सामयिक प्रश्नों पर विचार करना होगा। जीवन दृष्टि और जीवन शैली दोनों विचारणीय हैं। जीवन शैली का विकास जीवन दृष्टि से होता है। मूलभूत प्रश्न जीवन दृष्टि के हैं। विकास और समृद्धि की हमारी दृष्टि और परिभाषा क्या है? क्या प्रकृति का विध्वंस कर ऊंचे भवन बनाना ही विकास है? अच्छे महानगरों की परिभाषा में भीमकाय हवाई अड्डे और बहुमंजिला भवन ही क्यों हैं? विकास और समृद्धि की यह जीवनदृष्टि प्रकृति की दुश्मन है। इसी जीवनदृष्टि से आधुनिक आत्मविरोधी जीवनशैली का विकास हुआ है। नई बीमारियां, वायरस, अनिद्रा और अवसाद जैसे रोग बढ़े हैं। कोरोना के अनुभव मार्गदर्शी हो सकते हैं। जीवनदृष्टि के संदर्भ में आर्थिक भूमंडलीकरण असफल हो गया लगता है। सांस्कृतिक भूमंडलीकरण की दृष्टि से भारत को नई जीवनदृष्टि की महिमा का नेतृत्व करना चाहिए।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

खेती को सुरक्षित रखने की चुनौती

चौधरी पुष्पेंद्र सिंह

खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से कोरोना संकट में भी कृषि और इससे जुड़ी व्यवस्था का निर्बाध चलना जरूरी है

इस समय देश-दुनिया में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो कोरोना महामारी से प्रभावित न हो तो खेती-किसानी भला कैसे अछूती रहेगी। इससे मुकाबले के लिए देशव्यापी लॉकडाउन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर असर भी पड़ने लगा है। रबी की कुछ फसलों-सरसों, मटर, चना, प्याज, आलू आदि की कटाई या निकासी शुरू हो चुकी है। अगला एक महीना रबी की मुख्य फसल गेहूं की कटाई, साथ ही जायद व उसके बाद खरीफ की फसलों की बोआई शुरू होने का वक्त है। स्पष्ट है कि खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से कृषि कार्यों और इससे जुड़ी व्यवस्था का निर्बाध रूप से चलना अति आवश्यक है।

ऐसे में लॉकडाउन के बावजूद सरकार को सभी तरह के कृषि व संबंधित कार्यों में लगे किसान-मजदूरों को काम करने, कटाई, निकासी, परिवहन, भंडारण, प्रसंस्करण और बिक्री व्यवस्था सुचारू रूप से चलवानी होगी। कृषि यंत्रों एवं वाहनों और मजदूरों की आवाजाही सुगम करनी होगी। कृषि यंत्रों के रखरखाव, मरम्मत और कारीगरों को भी अनुमति देनी होगी। फसल खरीद के लिए खरीद केंद्रों, अनाज मंडियों, परिवहन और भंडारण की व्यवस्था को युद्धस्तर पर चलाना होगा। इन सभी स्थानों पर उचित आपसी फासला व सफाई जैसे आवश्यक कदम भी उठाने होंगे जिससे संक्रमण न फैले। फसलों का भुगतान अधिक से अधिक डिजिटल माध्यम से किया जाए। एक अप्रैल से शुरू होने वाली रबी फसलों की खरीद को पंजाब सरकार ने 15 अप्रैल और हरियाणा सरकार ने 20 अप्रैल से शुरू करने का निर्णय किया है। इस पर सरकार पुनर्विचार करे अन्यथा ग्रामीण क्षेत्रों में इस दौरान धन का प्रवाह अवरुद्ध हो जाएगा। बोआई के लिए बीज, खाद, कीटनाशकों के उत्पादन, भंडारण, वितरण व बिक्री और सिंचाई की व्यवस्था भी सुचारू रूप से चलानी होगी।

दुग्ध उत्पादन और पशुपालन से कृषि की एक-तिहाई आय होती है। आपूर्ति चेन टूटने, मिठाई की दुकानें, होटल आदि बंद होने, शादी-समारोह स्थगित होने से दूध व अन्य खाद्य सामग्री की मांग कम हुई है। डेयरियों और दूधियों ने किसानों से दूध की खरीद घटा दी है। इससे दूध व अन्य फसलों के दाम गिर गए हैं। दूध संग्रह, प्रसंस्करण, उत्पादन और वितरण में लगे डेयरी व संबंधित उद्योगों को सुचारू रूप से चलाना होगा। पशुओं के आहार, सूखे व हरे चारे, पशु-चिकित्सकों और दवाइयों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी। अच्छी पैदावार के बावजूद खाद्य पदार्थों और कृषि उत्पादों की वितरण व्यवस्था बाधित हो रही है। लॉकडाउन के दौरान फल, सब्जी, दूध व अन्य आवश्यक खाद्य सामग्री ढो रहे वाहनों, कर्मचारियों व व्यापारियों को भी रोका जा रहा है। आपूर्ति बाधित होने, स्थानीय विक्रेताओं द्वारा मुनाफाखोरी के कारण ये वस्तुएं उपभोक्ता स्तर पर महंगी हो गई हैं। ऐसे तत्वों पर सख्त अंकुश लगाकर वितरण व्यवस्था में तत्काल सुधार किया जाना चाहिए। चिकन से कोरोना वायरस फैलने की झूठी अफवाहों से उपभोक्ता मांस, मछली, चिकन, अंडे आदि से परहेज कर रहे हैं जिससे इनके दाम गिर गए हैं। सरकार तत्काल उपभोक्ताओं की इन शंकाओं को दूर करे। मांग घटने से पोल्ट्री फीड के रूप में इस्तेमाल होने वाली मक्का और सोयाबीन के दाम भी गिर गए हैं। पोल्ट्री फीड की आपूर्ति भी बाधित होने की शिकायतें मिली हैं जिन पर कार्यवाई होनी चाहिए।

भारत में असंगठित क्षेत्र में 80 प्रतिशत से ज्यादा लोग काम करते हैं। काम बंद होने के कारण ये लोग शहरों से अपने गांव की ओर पलायन कर रहे हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव और बढ़ेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले बाहर के मजदूर भी बीमारी के डर से पलायन कर रहे हैं। इस कारण गन्ने की छिलाई और बोआई, गेहूं की कटाई व निकासी, सब्जियों को तोड़ना और खरीफ की बोआई भी प्रभावित हो सकती है। इस संकट से निपटने के लिए सरकार 1.70 लाख करोड़ रुपये का राहत पैकेज देने जा रही है। 80 करोड़ लोगों को अगले तीन महीने तक अतिरिक्त पांच किलो गेहूं या चावल और एक किलो दाल प्रति माह मुफ्त दी जाएगी। 8.70 करोड़ किसानों को पीएम-किसान योजना की 2,000 रुपये की एक किस्त अप्रैल में ही मिल जाएगी। 20.40 करोड़ महिलाओं के जन-धन खाते में 1500 रुपये भेजे जाएंगे। तीन करोड़ विधवाओं, पेंशन धारकों और दिव्यांगों को भी एक-एक हजार रुपये की मदद दी जाएगी। 8.3 करोड़ गरीब परिवारों को अगले तीन माह तक एक गैस सिलिंडर प्रति माह मुफ्त दिया जाएगा। मनरेगा दिहाड़ी को 182 रुपये से बढ़ाकर 202 रुपये कर दिया है। आरबीआई ने भी 3.75 लाख करोड़ की अतिरिक्त तरलता उपलब्ध करवाई है।

फिर भी इस आपदा में कृषि कर्ज की वसूली व किस्तों को भी एक वर्ष के लिए स्थगित करना बेहतर होगा। किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट दोगुनी कर ब्याज दर भी घटाकर एक फीसद कर देनी चाहिए, ताकि किसान साहूकारों से महंगा कर्ज लेने के लिए बाध्य न हों। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को राहत देने के लिए सरकार को पीएम-किसान योजना की राशि को 6,000 रुपये से बढ़ाकर 24,000 रुपये प्रति किसान परिवार प्रति वर्ष कर देना चाहिए। इस राशि का वहन केंद्र व राज्य सरकारें आधा-आधा कर सकती हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्र में धन का प्रवाह बढ़ेगा। इससे मांग बढ़ेगी जिससे अर्थव्यवस्था भी मंदी से बच जाएगी।

ऐसी आपदा के वक्त देश में खाद्यान्न की भरपूर उपलब्धता एक बड़ी राहत की बात है। सरकार के पास लगभग 7.75 करोड़ टन खाद्यान्न मौजूद है। इसमें गेहूं और चावल और 22.5 लाख टन दालों का भंडार उपलब्ध है। एक महीने बाद गेहूं की 10 करोड़ टन फसल और आ जाएगी। रबी की दालों-चना, मसूर और मटर की आवक भी जारी है। दूध और चीनी की भी कोई कमी नहीं है। इस आपदा में कृषि, खाद्य भंडारण व वितरण व्यवस्था निर्बाध रूप से चलती रहे तो देश इस गंभीर संकट से उबर सकता है।

(लेखक किसान शक्ति संघ के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

विषाणुओं से मुकाबला

भारतीय ऋषियों ने आरण्यक संस्कृति की महिमा गाई है। मनुष्य को जीवन देने वाले पंच महाभूतों का योगदान सर्वोपरि है। जब भी कोई मांगलिक अनुष्ठान होता है तो पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु की शांति की प्रार्थना की जाती है। महर्षि पतंजलि ने भी इसी क्रम में योगशास्त्र का प्रतिपादन किया। मनुष्य का शरीर तो रोग का मंदिर कहा गया है। शरीर के भीतर रक्त, मज्जा, अस्थि और रस-रसायन जितने पदार्थ हैं, सबमें असंख्य जीवाणु और रोगाणु विद्यमान हैं। ईश्वर ने शरीर में एक प्रतिरक्षा तंत्र स्थापित किया है। जैसे देश की रक्षा के लिए सेना और समाज की रक्षा के लिए आरक्षी तैनात होते हैं और ये सारे तंत्र चुस्त रहते हैं तो शांति रहती है, उसी प्रकार यदि मनुष्य समुचित आहार-विहार तथा योग को जीवन में आत्मसात करे तो घातक से घातक बीमारियों से शरीर अपने आप लड़ लेता है। ब्रह्ममुहूर्त में ईश्वरीय कृपा बरसती है। यदि मनुष्य इस बेला में जागकर शुद्ध वायु, उगते सूर्य की ऊर्जा आदि का योग कर ले तो उसका प्रतिरक्षण तंत्र इतना मजबूत हो जाएगा कि महामारी से लड़ने में शरीर खुद सक्षम हो जाएगा।

इसी के साथ मनुष्य को पेड़, पौधे, नदी-तालाब, सूरज-चांद, धरती-आकाश, जंगली जीव-जंतु आदि पूरी प्रकृति को अपने परिवार का सदस्य समझना चाहिए। यही 'वसुधैव कुटुंबकम' का संदेश भी है। भौतिकता के दौर में सबसे बड़ा आघात जंगलों पर हो रहा है। हमें अपने अंदर पेड़ लगाने का भाव पैदा करना चाहिए। पर्यावरणविद पीपल, बरगद, आम, बेल आदि को पृथ्वी का संरक्षक कहते हैं। ये पेड़ विषाणुओं को सबसे ज्यादा अपनी ओर खींचकर मनुष्य के लिए प्राणवायु देते हैं। रावण से युद्ध के दौरान लक्ष्मण के शरीर में कार्बन से आई मूर्छा को दूर करने के लिए हनुमानजी संजीवनी-बूटी लाए थे। इसका अर्थ है कि हमें जीवन देने वाले पेड़ों के संपर्क में भी रहना चाहिए।

सलिल पांडेय

संदिग्ध रवैये से उठते सवाल

डॉ. कुमारेंद्र सिंह सेंगर

या तो चीन कोरोना की काट जानता है या फिर उसने अपने संक्रमित नागरिकों को लेकर पूरी दुनिया से झूठ बोला

चीन के जिस वुहान शहर से कोरोना की शुरुआत हुई, उसे लेकर दो खबरें एक साथ सामने आईं। एक तो वहां बस सेवा बहाल करने से संबंधित है। दूसरी खबर यही मिली कि वुहान में जिन लोगों को कोरोना मुक्त घोषित किया गया था, उनमें से लगभग दस प्रतिशत लोग फिर से संक्रमित मिले हैं। अलग-अलग होते हुए भी इन खबरों से सिरे आपस में जुड़े हुए भी हो सकते हैं। पहला तो यह कि कोरोना चीन द्वारा तैयार किया हुआ एक तरह का जैविक हथियार है।

कोरोना वायरस के हमले के चलते वैश्विक अर्थव्यवस्था की बुरी हालत हो गई है। संभव है कि बहुत सारे उत्पादों के शेयर, बहुत से प्रमुख देशों के शेयर चीन द्वारा खरीद लिए गए हों। आज के भौतिकतावादी युग में जहां कि आर्थिक स्थिति ही सर्वोपरि है वहां शेयर बाजार पर चीन का कब्जा (यदि हुआ) तो यह सभी देशों पर उसका आधिपत्य स्थापित करेगा। ऐसी शंका इसलिए भी हो रही है, क्योंकि विगत दो-तीन दिन से सोशल मीडिया पर ऐसे वीडियो भी सामने आ रहे हैं जहां कि कोरोना संक्रमित चीनी नागरिकों को अन्य देशों में वस्तुओं, जगहों को कोरोना से संक्रमित करते हुए देखा जा रहा है। चीन अपने वायरस की मारक क्षमता को अवश्य ही जनता होगा और उसने कहीं न कहीं इसकी रोकथाम के चिकित्सकीय उपाय भी अवश्य ही बना रखे होंगे। कोरोना वायरस से निपटने का तरीका उसके पास होने का सबसे बड़ा सुबूत यह भी है कि इटली, अमेरिका, जर्मनी की चिकित्सा स्थिति किसी भी रूप में चीन से कम नहीं। ऐसे में ये देश आज भी कोरोना से संक्रमित बने हुए हैं, जबकि चीन का वुहान शहर कोरोना से मुक्त हो गया है। इसके अलावा चीन की एक भी बड़ी हस्ती या दूसरा बड़ा शहर कोरोना से संक्रमित नहीं हुआ।

इसी संदर्भ में दूसरी खबर, जिसमें वुहान में ठीक हुए लोगों में से लगभग दस प्रतिशत लोगों में वापस संक्रमण पाया गया है, वह या तो दुनिया का ध्यान चीन से, वुहान से हटाने के लिए प्रसारित की गई है अथवा चीन द्वारा अपने देश के कोरोना संक्रमित लोगों के आंकड़ों से खिलवाड़ किया गया है।

यह बात समूचा विश्व जानता है कि चीन में अपनी ही तरह की तानाशाही है। चाहे वह आर्थिक नीति का मसला रहा हो अथवा खेलकूद का, वह चाहे नागरिकों से संबंधित फैसले लेने का मामला हो या फिर राजनीति का सभी में चीनी तानाशाही खुलकर दिखाई देती है। लगता है इसके द्वारा चीन अपने ऊपर लगाए जा रहे चीनी वायरस के आरोप को वुहान के द्वारा ही मिटाना चाहता है। वह नहीं चाहता होगा कि उसकी इस नकारात्मक छवि का प्रभाव सुरक्षा परिषद की सदस्यता पर पड़े। ऐसे में कोरोना के मरीजों की कुछ संख्या को दोबारा सामने ला दिया। इससे विश्व समुदाय के सामने चीन मासूम बना रहे और कोरोना वायरस बनाए जाने, उसकी दवा बनाए जाने के आरोप से भी बचा रहे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

प्रकृति का सम्मान करे मनुष्य

'जीत हमारी ही होनी है' शीर्षक से लिखे अपने लेख में सृजन पाल सिंह ने लिखा है कि कोरोना के खिलाफ विज्ञान की जीत तय है, मगर उसे अपने हथियार तैयार करने के लिए समय देना होगा। उनकी यह बात भी कुछ हद तक सही है कि मानव एक जीवट प्रजाति है और विषाणुओं एवं जीवाणुओं के खिलाफ लड़ाई में विजय अंततः इंसानों की हुई है। देखा जाए तो लेखक ने इस महामारी का एकतरफा विश्लेषण किया है। उन्होंने इस तथ्य की अनदेखी कर दी है कि आखिर यह वायरस मनुष्य की करतूतों की ही देन है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह संकट मानव ने खुद अपने लिए पैदा किया है। इसकी वजह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध जाकर काम करना है। जबसे मनुष्य ने यह भ्रम पाल लिया है कि वही इस जगत का सर्वेसर्वा है तबसे उसके सामने ऐसे संकट समय-समय पर उसे सबक सिखाने आते रहे हैं। अभी मानव जाति के पास संभलने का समय है। हमें समझना होगा कि प्रकृति में जितना महत्व हमारा है उतना ही महत्व दूसरे जीवों का भी है। हम प्रकृति के दूसरे घटकों का सम्मान करने लगेंगे और उन्हें नुकसान पहुंचाना बंद कर देंगे तो संभव है वायरस रूप दूसरे जीव भी हमारे लिए संकट पैदा नहीं करेंगे।

अभिषेक कुमार, नई दिल्ली

चीनी चक्रव्यूह में फंसी दुनिया

दैनिक जागरण के 28 मार्च के अंक में प्रकाशित, खतरे का पर्याय बना चीन, में लेखक दिव्य कुमार सोती ने कोरोना संक्रमण के संदर्भ में चीन के मनमाने रवैये को दोषी ठहराया है, जो बिल्कुल सही प्रतीत होता है।

मेलबाक्स

देखा जाए तो प्रारंभ से ही चीन का व्यवहार कोरोना वायरस के संक्रमण को लेकर पूरी दुनिया को भ्रमित करने वाला रहा है, आखिर क्या वजह है कि अमेरिका को छोड़कर कोई भी देश चीन के खिलाफ मुखर नहीं हो रहा है? वजह है चीन पर निर्भर होना और जिसका चीन शुरू से ही फायदा उठाता नजर आ रहा है। यदि हम चीन की रणनीति को समझने की कोशिश करें तो साफ है कि वह दूसरों देशों को विभिन्न प्रकार से अपना कर्जदार बना कर वहां के बाजारों पर कब्जा कर करता है, इस तरह वह इन देशों में अपनी प्रभुता कायम कर लेता है। परिणामस्वरूप उन देशों में कई प्रकार की परियोजनाएं चलाकर पूरी दुनिया में अपनी ताकत को और मजबूत करने की कोशिश करता है। दक्षिण एशिया में स्थित पाकिस्तान, श्रीलंका, मालदीव आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं। प्रश्न यह उठता है कि चीन की वैश्विक निर्भरता को कैसे तोड़ा जाए? तो इसका सीधा सा जवाब है कि सभी देशों को अपने यहां तेजी से विभिन्न प्रकार की स्वदेशी तकनीकियों को बढ़ावा देना होगा ताकि बढ़ते व्यापारिक चीनी चक्रव्यूह को तोड़ा जा सके। भारत में मेक इन चाईना के स्थान पर मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों को अंगीकार करने की जरूरत है।

पवन कुमार मुरली, कादीपुर, गुरुग्राम

पर्यावरण की रक्षा का बड़ा सवाल

वक्त का फेर है, इंसान पिंजरे में है और पंछी आजाद। समय आ गया है कि हम थोड़ा ठहर कर विचार करें कि हम रास्ते से कहां भटक गए इससे लौटने का सही रास्ता क्या है? कोरोना वायरस ने दुनिया में महामारी का खतरा बनकर यह समझा दिया है कि विज्ञान के क्षेत्र में बड़े-बड़े दावे करने वाला इंसान अब भी कुदरत के आगे बौना है, हमें यह विचार करना चाहिए कि इस संकट के जरिए प्रकृति हमें क्या संदेश देना चाहती है? जहां वायु प्रदूषण आज विश्व की सबसे बड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों में एक है वहीं ग्रीनपीस द्वारा कराए गए एक नए अध्ययन में सर्वाधिक वायु प्रदूषण वाले शहरों की पहचान की गई, इस सूची में भारत का बोलबाला है और दुनिया के सबसे प्रदूषित 10 शहरों में 7 तथा सबसे खराब 30 शहरों में 22 भारत के हैं। लॉकडाउन से न केवल हवा शुद्ध हो रही है, बल्कि इससे ध्वनि प्रदूषण भी नगण्य हो गया है। इसका प्रत्यक्ष असर मानव जाति एवं जीव जंतुओं पर पड़ेगा। आज के इस कठिन दौर से गुजरते हुए हमें इस चुनौती को एक अवसर में बदलना चाहिए। हमें अब पर्यावरण की रक्षा करने के लिए भी कृतसंकल्पित होना होगा।

harshchauhan302@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

10 प्रतिशत अपने जीडीपी के बराबर निवेश कर रहा है अमेरिका अपनी अर्थव्यवस्था को तेजी देने के लिए। भारत को भी आर्थिक गतिविधियों में तेजी देने के लिए बड़ा निवेश करने की आवश्यकता है।

आजकल

सेहत को खतरा और संकट में आजीविका

डॉ. विकास सिंह
मैनेजमेंट गुरु और वित्तीय एवं समग्र विकास के विशेषज्ञ

देश जब एक अदृश्य स्वास्थ्य संकट से जूझ रहा है तब नीति निर्माताओं को एक मजबूत ढांचे के माध्यम से ऐसा समाधान तलाशने की दरकार है, जिसमें स्वास्थ्य सेवा के साथ राजकोषीय प्रोत्साहन और मौद्रिक सहायता शामिल हो। इस संकट से निपटने के लिए प्रधानमंत्री की पहल अच्छी है, लेकिन यह पर्याप्त प्रतीत नहीं होती। उन्हें यह संकल्प लेना होगा कि इस संकट की वजह से उद्योग और रोजगारों पर कोई ग्रहण नहीं लगेगा और इस आपदा से निपटने के बाद आर्थिक मोर्चे पर अपेक्षित कदम उठाए जाएंगे

आज हम एक विस्फोटक स्थिति से दो-चार हो रहे हैं। कोरोना वायरस से उपजी कोविड-19 महामारी को दुनिया एक वित्तीय समस्या के रूप में देख रही है, जबकि असल मुद्दा मानव, स्वास्थ्य और आजीविका का है। नीति निर्माताओं ने अब तक उचित कदम उठाया है, सही जिम्मेदारी निभाई है और समझदारी दिखाई है। किसी अदृश्य संकट से निपटना हमेशा कठिन होता है। दुनिया की एक बड़ी आबादी को अपनी चपेट में ले चुका यह संकट वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी बन गया है। इस अभिशाप से आर्थिक वृद्धि दर खासी कमजोर पड़ने की आशंका है। कमजोर अर्थव्यवस्था वाले देशों को और अधिक खामियाजा भुगतना होगा। हमारी अर्थव्यवस्था भी इससे प्रभावित होगी।

फैलाव और रोकथाम: सामाजिक रूप से अलग-थलग रहने से वस्तुओं की मांग समस्या बढ़ाने लगी है, क्योंकि मौजूदा दौर में आपूर्ति बाधित हो रही है। यह स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थिति में सरकार कोई भी कदम उठाए, आर्थिक नुकसान को होने से नहीं रोक सकती। वित्तीय संकट में, किसी उद्योग के लिए आर्थिक सहायता दूसरे को असंतुलित कर देती है, लेकिन अभी ऐसा नहीं है। आपूर्ति की कड़ी एक प्रमुख आर्थिक संबल है और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने की कुंजी भी। वहीं वित्तीय प्रणाली एक ऐसा इंजन है जो आर्थिक प्रणाली को ऑक्सीजन देने में पहले से ही थका हुआ है। अधिकांश कर्जों का एक बड़ा हिस्सा वापस नहीं आएगा जो बैंकिंग प्रणाली को घुटनों के बल ले आएगा। यहां तक कि इसमें उनके उबरने से पहले ही उन्हें डुबो देने की ताकत है।

परिवर्तन की यह लहर मांग को धीमा करेगी जो अर्थव्यवस्था को काफी प्रभावित करेगी और भविष्य की संभावनाओं को नुकसान पहुंचाएगी। अमेरिका पूरे उत्साह के साथ सकल घरेलू उत्पाद का 10 प्रतिशत निवेश कर रहा है। भारत को भी कुछ ऐसा ही करने की जरूरत है। कई लोगों को यह उदार और भारी-भरकम लग सकता है, लेकिन मंदी की कीमत कहीं अधिक और दीर्घकालिक चुकानी होगी। सरकार कम जीएसटी और आयकर की अर्जित कर पाएगी। नगरपालिका कर राजस्व एवं स्टांप शुल्क में भी अचानक कमी आएगी। कोई विनिवेश भी नहीं होगा और इससे राजस्व को नुकसान पहुंचेगा। हालांकि कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से सरकार को इस संकट से निपटने में कुछ हद तक मदद मिली है। हमें अधिक तीव्रता से, जल्दी और बेहतर तरीके से धन खर्च करने की आवश्यकता है और अमेरिका के विपरीत बड़े कॉरपोरेट पर नहीं, बल्कि छोटे किसानों, व्यापारियों तथा एमएसएमई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि वही हमारी अर्थव्यवस्था को चलाते हैं और रोजगार के सृजनकर्ता हैं। राजकोषीय घाटे के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं है। राजकोषीय घाटे की राशि से अधिक हमें वास्तव में यह चिंता करनी चाहिए कि पैसा खर्च करने का सही तरीका क्या है। उच्च मुद्रास्फीति और विनिमय अस्थिरता के जोखिम को कम किया जाना चाहिए। इसमें आरबीआइ की भी अहम भूमिका है।

वहीं बिक्री और खरीद को जोड़ने वाली कड़ी बिगड़ और टूट चुकी है। जब कोई व्यक्ति कुछ खरीदारी करता है तो वह बिक्री और खरीद की कड़ी की शुरुआत करता है। इस कड़ी से एक अनुकूल चक्र शुरू होता है जिसमें कई अन्य साझेदार भी शामिल होते हैं, जो साधारण क्रेता से निर्माता तक हर चरण में मूल्य वर्धन यानी वैल्यू एडिशन करते हैं और जिसमें वित्तीय संस्थानों की तरह कई अन्य भी शामिल होते हैं। यह कड़ी कमजोर हो रही है।

आजीविका और गरिमा: यह मानते हुए कि सरकार असंगठित क्षेत्र के सभी मजदूरों को अगले चार महीनों तक प्रति माह पांच हजार रुपये का भुगतान करती है जिसका भार जीडीपी के दो प्रतिशत से कम होगा। यह प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और समर्थन अर्थव्यवस्था में उच्च मांग और विकास को पुनर्जीवित करने में काम आएगा। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि जैसी विभिन्न सामाजिक योजनाओं के लिए अग्रिम भुगतान किया जा सकता है। राज्यों को भी इसमें कुछ लागत साझा करनी चाहिए। सरकार वैसे भी अग्रिम करों की उगाही करती है। सरकारों को यात्रा एवं पर्यटन और वाहन तथा इलेक्ट्रॉनिक जैसे मंदी से प्रभावित क्षेत्रों में दुष्प्रभाव को कम करने के लिए अस्थायी कर और बजटीय उपायों को लागू करना चाहिए।

देश में उद्यमों और लाखों नौकरियों को बचाने के लिए तत्काल राहत देनी होगी। सरकार को बिलों के सृजन के बजाय बिलों के संग्रह पर जीएसटी भुगतान करने की अनुमति देनी चाहिए। सरकार और सरकारी स्वामित्व वाली संस्थाओं का एमएसएमई पर तीन लाख करोड़ रुपये बकाया है। इस राशि को जारी करने से न केवल व्यापारी समुदाय को सही संकेत मिलेगा, बल्कि एक बहुत ही गहन और स्वस्थ विकास को बढ़ावा मिलेगा। तीन माह के लिए सभी कर्जों के पुनर्भुगतान पर एक सामूहिक पाबंदी बेहतर नकदी प्रवाह में मदद करेगी और पांच प्रतिशत अतिरिक्त तरलता लाएगी।

सरकार के अलावा बड़ी कंपनियों को भी अपना दायित्व निभाना होगा और उन्हें नौकरियों के संरक्षण पर काम करना चाहिए। आज अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने की जरूरत है। हम अप्रत्याशित और अभूतपूर्व स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे हैं जो अर्थव्यवस्था को डुबो रहा है। प्रधानमंत्री को इस नाजुक स्थिति से निपटने के लिए मौद्रिक-राजकोषीय, दोनों मामलों में निर्णायक और सशक्त नीतिगत प्रतिक्रिया देने की दरकार है। राजकोषीय नीतियों का उद्देश्य तरलता को जीवन देना है, जबकि मौद्रिक प्रोत्साहन का काम अल्पकालिक वित्त पोषण में किसी भी समस्या को कम करना और पर्याप्त तरलता सुनिश्चित करना होना चाहिए। इसे संरचनात्मक समस्याओं के समाधान को अनुकूलित करके संवर्धित किया जाना चाहिए।

आपदा के वक्त उठाया सही कदम

प्रवीण गुगनानी

पूरा देश इस समय जिस कोरोना संकट के कारण पैदा हुई स्थिति से जूझ रहा है उससे कुछ राहत दिलाने के लिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक बड़े आर्थिक पैकेज की घोषणा की है। इस अवसर पर एक कथा स्मरण हो आई। एक कंजूस सेठ के घर एक बड़े उदार घर की लड़की बहू बनकर आई। इस घर की बात-बात में कंजूसी देखकर वह आधे सिर दर्द से बीमार रहने लगी। कण भर अन्न भी भूमि पर गिर जाए तो सिर आसमान पर उठा लेने वाले सास-ससुर के कारण बहू की बीमारी बढ़ती जा रही थी। वैद्य को बुलाया गया।

वैद्य ने कहा, बहू को सिरदर्द की बीमारी गंभीर है। इसकी दवाई हेतु मण भर यानी 40 किलो मोती का चूरा बनाकर उसकी दवाई बनानी होगी। अब बहू का चेहरा फक्क पड़ गया। उसे लगा कि नीचे गिरा हुआ कण भर अन्न भी उठवाने वाला ससुर क्या मण भर मोती के चूर की दवाई बनवाएगा? पर पल भर में ही बहू के सामने चौंकाने वाला दृश्य आया। सेठ उठा और तिजोरी से मण भर मोती की बोरी उठा लाया। बोला, लो वैद्य बनाओ बहू के लिए दवाई। वैद्य के जाने के बाद आश्चर्य से भरी बहू ससुर के पास गई और पैर छूकर उससे पूछा, बाबूजी आप तो कण भर अन्न नुकसान होने पर भी मुझे डांटते हो फिर ये मण भर मोती आपने मेरे ऊपर खर्च कर दिए। ससुर बोला बेटा कण-कण बचाया ही इसलिए था कि विपदा आने पर बच्चों पर मण भर मोती लुटाया जा सके।

कहना न होगा कि यहां उस सेठ की तुलना हमारे पीएम मोदी के साथ की जा सकती है जो कि घर परिवार छोड़ देश सेवा के लिए निकले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे और बेहद सीमित व्यक्तिगत आवश्यकताओं वाले व्यक्ति हैं। मोदी सरकार द्वारा दिए जाने वाले एक लाख सत्तर हजार करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की भी यही स्थिति है।

वैसे तो मोदी प्रत्येक संकट से कुछ न कुछ सीखते हैं और अपने लिए नया मार्ग बनाते हैं, किंतु कोरोना ने तो उनसे 135 करोड़ लोगों के प्रधानमंत्री के पद से आगे जाते हुए उन्हें देश भर के समस्त परिवारों का मुखिया भी बना दिया है। इस आर्थिक पैकेज के अंतर्गत 80 करोड़ गरीबों को अगले तीन महीने तक मुफ्त आटा या चावल और एक किलो दाल देने की घोषणा की गई है। गरीब महिलाओं को गैस सिलेंडर भी मुफ्त में मिलेगा। जनधन खातों में प्रतिमाह पांच सौ रुपये भेजे जाएंगे। यहां आप अस्सी करोड़ का आंकड़ा देखकर विस्मित हुए होंगे, क्योंकि इतना बड़ा निःशुल्क अन्न वितरण भी अपने आप में अनोखा सेवा प्रकल्प होगा। वित्त मंत्री ने कहा कि 135 करोड़ नागरिकों के अन्नदाता करीब आठ लाख सत्तर हजार किसानों के खाते में दो हजार रुपये हर महीने डाले जाएंगे। मनरेगा की दिहाड़ी 182 रुपये से बढ़ाकर 202 रुपये कर दी है। वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगों के लिए अतिरिक्त एक हजार रुपये पेंशन के तौर पर दिए जाएंगे।

ऐसी और भी कितनी ही महत्वपूर्ण व संवेदनशील घोषणाएं इस पैकेज में सम्मिलित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी केवल देश में सबसे बड़े आर्थिक पैकेज की घोषणा करने तक ही नहीं रुके, उन्होंने कोरोना के विरुद्ध वैश्विक स्तर पर नेतृत्व की पहल करते हुए पहले दक्षेस और फिर जी-20 देशों का वर्चुअल सम्मेलन बुलाने हेतु पहल व व्यवस्था की। मोदी द्वारा की गई इस पहल के कारण कोरोना आपदा से संघर्ष कर रहे विकासशील देशों हेतु नई संभावनाएं विकसित हो रही हैं। मोदी ने आरंभिक संबोधन में कहा कि हमें इस वैश्विक महामारी की दृष्टि से प्रभावी और समन्वित कार्रवाई करनी होगी तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकासशील देशों का विश्वास बहाल करना होगा। नरेंद्र मोदी के विषय में आज अधिकांश देशों में यह धारणा बनी है कि वही वैश्विक स्तर पर कोरोना के विरुद्ध मुहिम का सफल नेतृत्व कर सकते हैं। आइए हम सब मिलकर सर्वे भवंतु सुखिनः के हमारे प्राचीन सनातनी वाक्य का उद्घोष करते हुए इस आपदा की समाप्ति तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से वचनबद्ध हो जाएं।

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

खरी-खरी

कोरोना का जिम्मेदार तो ये कलजुग है!

शांतिलाल जैन

'कलजुग है सांतिबाबू, कोरोना फिर तो आयेगाई!' यह पहली बार नहीं है जब किसी घटना के लिए उन्होंने कलयुग को जिम्मेदार माना हो। उनकी नजर में मृत्युलोक में जितने कष्ट, तकलीफें, बुराइयां और परेशानियां हैं, उसकी एकमात्र वजह कलयुग का होना है। यहां तक कि उनकी कष्टसाध्य होती जा रही बीमारी के लिए भी वे यही कहते सुने जाते हैं-'कलजुग है तो भुगतना तो पड़ेगाई।' इस बार खास बात ये है कि सुप्रीम कोर्ट के जज ने कहा है कि 'कलयुग में वायरस से हम लड़ नहीं सकते।' अपनी मान्यता को एक ऊंची आसंदी से समर्थन मिल जाने से वे इस समय सातवें आसमान पर हैं। 'मैं तो सुरू दिन से बता रिया हूं।' सुबह से सैंतीस लोगों से कह चुके हैं यह बात। इस समय, अड़तीसवां मैं, उनकी ग्रिप में हूं और कलयुग को शिद्दत से महसूस कर रहा हूं। अक्सर, हमने उन्हें दूधवाले से उलझते देखा है। कहते हैं-'जमानो कैसो आ गओ, कोकाकोला सुद्ध मिल रई, मगर दूध एकदम असुद्ध।' एक बार वे अतिसार के शिकार हुए। बोले-'खानपान की चीजें असुद्ध मिल रई कलजुग में, तो दस्त तो लगेंगे ही। तुमने सुनी है कब्बी, के सतजुग में किसी को दस्त लगे हों? नई ना।'

उनके अनुसार हमारे पूर्वजों ने चार हजार सात सौ बारह वर्ष पूर्व घोषणा कर दी थी कि कलयुग में आर्यावर्त के उत्तर में स्थित एक देश कोरोना नामक विषाणु उत्पन्न करेगा, जिससे समूची मानवता के लिए खतरा बनेगा। बोले-'नगर में महामारी हमरी गलियन से ही फैलेगी, नालियां इतनी गंदी भरी पड़ी हैं।' उनका ये अदम्य विश्वास है कि सतयुग में यहीं इन्हीं गलियों में दूध की धाराएं बहा करतीं थीं, जो कालांतर में गंदी नालियों में परिवर्तित हो गई हैं। जैसे-जैसे कलयुग बढ़ेगा नालियां और ज्यादा चोक होने लगेंगी। मुन्सीपाल्टी कखु ना कर पायगी। कुछ दिन पूर्व, मोहल्ले में हुए एक विजातीय विवाह पर उनकी प्रतिक्रिया थी- समझ लो भैया के घोर कलजुग आवे वारो है। मौका मुनसिब जान मैं धीरे से सटकने लगा। वे ऊंची आवाज में बोले-'मूं पे कपड़ा लपेट के जईयो सांतिबाबू, कलजुग चलरा है। कब कौनों असुरी सक्ति कोरोना के जीव पकड़ के आपकी नाक में घुसेड़ देहैं, कौन जाने!

ट्वीट-ट्वीट

क्या आपने आनंद विहार पर दिल्ली सरकार के किसी नुमाइंदे को देखा? कहां हैं दिल्ली के मुख्यमंत्री? ये सारे लोग वही हैं जिन्होंने एक महीना पहले केजरीवाल को वोट दिया। आज ये खुद को अनाथ महसूस कर रहे हैं! ये पार्टी कहती है कि वह आम आदमी की बात करती है।
आशुतोष@ashutosh83B

चीन ने इटली को जो 640000 जांच किट दिए वे किसी काम के नहीं थे। अब नीदरलैंड ने भी कहा है कि चीन द्वारा उसे दिए 13 लाख मास्क में से आधे खराब निकले हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो चीन से सिर्फ एक ही अच्छी चीज बाहर आती है और वह है प्रोपेगेंडा।
शिव अरूर@ShivAroor

सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, धर्मगुरु, धार्मिक स्थल, कलाकार कोरोना से लड़ने के लिए सहायता राशि देते रहेंगे और कुछ पत्रकार बस यही देखते रहेंगे कि किसने नहीं दिया अब तक।
ऋचा अनिरुद्ध@richaanirudh

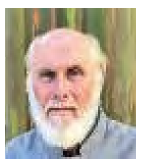

आज के तनाव भरे युग में आयुर्वेद, योग, मंत्र व ध्यान से रोग-प्रतिरोधक मानसिक क्षमता बढ़ती है। शारीरिक प्राण-शक्ति भी। अतः यह हमारी जीवन पद्धति का अंग होना चाहिए। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम आधुनिक चिकित्सा त्याग दें।
डॉ. डेविड फ्राउले@davidfrawleyved

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या बड़े शहरों से मजदूरों का पलायन लॉकडाउन को लेकर स्थानीय प्रशासन की लापरवाही का नतीजा है?

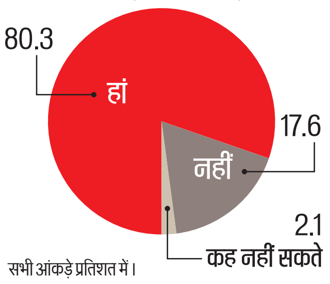

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

लॉकडाउन के बावजूद बाहर निकलने वालों से निपटने के लिए क्या सरकार को और सख्ती करनी चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

गठरी लादे शीश पर निकल पड़े जो वीर,
उनसे कहना है यही मत हो यार अधीर।
मत हो यार अधीर मिलेगा राशन-पानी,
करके पैदल मार्च करो मत अपनी हानी।
रजधानी को छोड़ छोड़ बैठे यदि पटरी,
ले जाओगे साथ कोरोना वाली गठरी।
– ओमप्रकाश तिवारी

उत्तर प्रदेश डायरी

लॉकडाउन के दौरान दिखते अलहदा रंग

सद्गुरु शरण
स्थानीय संपादक, उत्तर प्रदेश

यह मानना पड़ेगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जादू देशवासियों के सिर पर चढ़कर बोल रहा है। कोरोना के खिलाफ जंग में मोर्चा ले रहे कर्मयोगियों के लिए तालियां-थालियां बजवाने के बाद उन्होंने जब लॉकडाउन की घोषणा की तो सपने में भी उनकी बात न मानने वाले उत्तर प्रदेश के विपक्षी नेता अच्छे बच्चों की तरह ना-नुकुर किए बिना चुपचाप घरों में दुबक गए। बोर होने पर एकाध ट्वीट कर मन बहला लेते हैं, पर क्या मजाल कि लॉकडाउन के प्रति अनुशासन में जरा भी चूक आ जाए। जान है तो जहान है।

सियासत, समर्थक और ख्वाहिशें सिर्फ उसी हालत में महत्व रखती हैं, जब हम खुद सलामत रहें। तो फिर इतनी आसान सी बात अपने योगीजी को समझ में क्यों नहीं आती? लॉकडाउन की तो जैसे उन्हें परवाह ही नहीं। कभी किसी आश्रयस्थल पर खाने की गुणवत्ता परखने पहुंच जाते हैं तो कभी एसजीपीजीआइ में स्थापित किए जा रहे कोविड हॉस्पिटल की प्रगति देखने। खुद भी दौड़ रहे हैं और अफसरों को भी दौड़ा रहे हैं। योगीजी को अपने विपक्षी नेताओं से कुछ सीखना चाहिए। हार्डवर्क उतना जरूरी नहीं, जितना विपक्षी नेताओं जैसा स्मार्टवर्क।

दिनभर लॉकडाउन का सख्ती से पालन करके मोदीजी की अपील का सम्मान करिए, शाम को किसी चेले से एक-दो बढ़िया ट्वीट डलवा दीजिए। बस, हो गई राजनीति। अभी कौन सा चुनाव होने जा रहा है। जब चार-छह महीने बचेंगे, तब देखा जाएगा। इस समय कोई कह भी नहीं सकेगा कि जब प्रदेशवासी संकट का सामना कर रहे हैं तो आप घर में क्यों कैद हैं? सीधी सी बात है कि मोदीजी ने घर से बाहर निकलने को सख्ती से मना किया है और एक जिम्मेदार राजनेता की तरह प्रधानमंत्री की बात मानना हमारा फर्ज है। डॉक्टर, चिकित्साकर्मी, पुलिसकर्मी और मीडियाकर्मी घर से बाहर काम कर रहे हैं तो उनकी कोई मजबूरी होगी। नेताओं को हर महीने पगार थोड़े ही चाहिए। उन्हें जब सत्ता मिलती है तो वे सारे लिहाज त्यागकर देश-विदेश की बैंकों के लॉकर भर लेते हैं, ताकि बाद में सत्ता रहे या न रहे, उनके राजसी ठाट-बाट पर आंच न आए। योगीजी संत ठहरे। राजनीति में रहकर भी राजनीति नहीं सीख पाए, इसलिए कोरोना की दहशत में भी चैन से नहीं बैठते। वैसे भी वह मुख्यमंत्री हैं। उनकी जिम्मेदारी है कि सब कुछ मैनेज करें। विपक्ष का काम सरकार की आलोचना करना है। योगीजी दिन-रात कितना भी परिश्रम कर लें, विपक्ष अपना धर्म बखूबी निभा रहा है। यूपी की राजनीति कोरोना संकट की छाया में भी अपनी चाल बदलने को तैयार नहीं। योगीजी खूब लॉकडाउन तोड़ें, विपक्ष अपनी परंपराएं नहीं तोड़ेगा।

चाचा की घर वापसी के संकेत: अखिलेश यादव का अपने चाचा शिवपाल यादव से मनमुटाव कोई छिपी बात नहीं।

व्यवस्था का जायजा लेते सीएम योगी। प्रेट्र

सपा के कार्यक्रमों में मंच पर भी दोनों की धक्कामुक्की हो चुकी है। इसके चलते बाद में चाचा ने अपनी निजी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी बना ली थी। बहरहाल अब संकेत मिल रहे हैं कि वक्त की ठोकरें खाकर चाचा-भतीजे को राजनीति की समझ आ गई है और दोनों को नेताजी यानी मुलायम सिंह की नसीहतें सही लगने लगी हैं। नेताजी शुरू से दोनों को समझाते थे कि भाजपा और बसपा के जाल में मत फंसो, पर तब सत्ता के गुरूर में उन्हें यह बात समझ में नहीं आ रही थी। सत्ता गई, डिंपल कन्नौज में चुनाव हारीं, चाचा को भाजपा ने इस्तेमाल करके हाशिये पर डाला और जांच एजेंसियां पीछा करने लगीं तो सबकी अक्ल ठिकाने आ गई। संकेत तो होली पर सैफई में ही मिल गए थे, जब भतीजे ने झुककर चाचा के चरण छुए, पर अब बात साफ दिख रही है। समाजवादी पार्टी ने शिवपाल सिंह की सदस्यता समाप्त कराने संबंधी याचिका पर बल न देने का फैसला कर लिया है। जाहिर है, चाचा पार्टी में वापस आ रहे हैं। शिवपाल के वापस आने से अखिलेश को बेशक सहारा मिलेगा, पर इससे सपा को धरातल पर कितनी मजबूती मिलेगी, यह वक्त ही बताएगा। भाजपा को यादव परिवार की इस नई एकता से शायद ही कोई परेशानी हो। उसे चाचा-भतीजे की दोस्ती या दुश्मनी से कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका लक्ष्य सिर्फ यह है कि 2022 तक बुआ-भतीजे एक न होने पाएं। फिलहाल इसके आसार दूर-दूर तक नहीं दिखते।

अपने घर में भी है रोटी : कोरोना की विपदा ने लोगों को तमाम आशंकाओं, चिंताओं और परेशानियों से मुकाबिल कर दिया, पर इससे गुजरते हुए लोगों को कई सबक भी मिले हैं। मसलन घर-गांव छोड़कर दिल्ली, मुंबई, सूरत, पंजाब और हरियाणा में मजदूरी करने वाले पूर्वांचलियों को सबक मिला कि परिवार सबकी जिंदगी का पहला और अंतिम सच है। पगार के लिए ही सही, जिनकी खेती और फैक्ट्रियों के लिए दिन-रात पसीना बहाया, मुसीबत आते ही उन्होंने साथ छोड़ दिया। जिनकी सरकार बनवाने में वोट का योगदान दिया, उन्होंने रात के अंधेरे में बसें लगवाकर गाजियाबाद बॉर्डर पर छुड़वा दिया। तब लोगों को गांव और परिवार याद आए। ठुकराए जाने से दिल इस कदर आहत हुए कि साधन की परवाह किए बिना लोगों ने हाईवे पकड़ लिए और सैकड़ों किलोमीटर के सफर पर पैदल ही चल दिए।

मंथन

हमारी परंपराओं में छिपा समाधान

अनिल झा
पूर्व विधायक, दिल्ली विधानसभा व पूर्व अध्यक्ष, छात्र संघ, दिल्ली विश्वविद्यालय

अगर हम अपनी परंपराओं पर गौर करें तो पाएंगे कि स्वच्छता की कड़ी हमारे समाज और संस्कृति के साथ मजबूती से जुड़ी रही जो तमाम मुश्किलों से महफूज रखने में मददगार थी

प्रतीकात्मक

फिलहाल दुनिया के 180 से ज्यादा देशों में कोरोना वायरस फैल चुका है। पश्चिम के विकसित देशों में स्वास्थ्य का बुनियादी ढांचा बहुत बेहतर है, फिर भी वे देश आज सबसे ज्यादा घबराए हुए हैं। क्या भारत में उस प्रकार का स्वास्थ्य का बुनियादी ढांचा है? यदि इस आपदा ने विकराल रूप धारण कर लिया तो क्या हमलोग उसे नियंत्रित कर पाएंगे? देश की सरकार और सभी प्रशासनिक अधिकारी कह रहे हैं कि साफ-सफाई का हमें खास ध्यान रखना चाहिए। घरों को और अपने आप को सैनिटाइज करना चाहिए। संचार के सभी माध्यमों पर होने वाली ये चर्चाएं हमारे लिए जागरूकता का कार्यक्रम चला रही हैं जो बहुत अच्छी बात है। सोशल मीडिया के माध्यम से तमाम चिकित्सकों और योग के जानकारों से बात हुई। उन्होंने बताया कि भारत में अगर कोरोना वायरस व्यापक तौर पर फैल गया तो हमें संभलने का मौका नहीं मिलेगा। सैकड़ों या हजारों नहीं, बल्कि लाखों लोग हताहत हो जाएंगे। इतना ही नहीं, मानवीय नुकसान के बाद हमारे देश के अंदर जो आर्थिक नुकसान होगा उसकी भरपाई करने में दशकों लग जाएंगे। आज समय आ गया है कि हम अपने देश के नागरिकों को, अपने छात्रों को, बच्चों को स्कूलों में यह पढ़ाएं कि हाथ धोना और अपने शरीर को साफ सुथरा रखना कितना जरूरी है।

हमारी प्राचीन सभ्यता, सनातन सभ्यता है। हमारी सभ्यता में बिना पैर और हाथ धोए घर में हमारा प्रवेश वर्जित था। आज से तीन दशक पहले भी हमारी माता जी रसोईघर को बहुत अच्छे से साफ करती थीं। राख और गोबर से घर की लिपाई की जाती थी। वह एक तरह से सैनिटाइज करना ही होता था। रसोईघर का दर्जा मंदिर के समान होता था। मुझे याद है कि मेरी दादी और मेरी मां गांव में हमें बिना हाथ पैर धोए रसोईघर में आने नहीं दिया करती थीं। मंदिर की तो बात ही कुछ और है। सलीके से हाथ पैर धोने के बाद ही मंदिर में प्रवेश होता था। धूप-कपूर को जलाकर वातावरण को शुद्ध किया जाता था। कुछ लोग सोशल मीडिया पर हवन का भी मजाक बना रहे हैं। मुझे लगता है कि वे सब नादान हैं। हवन क्रिया में जो भी वस्तु प्रयोग में लाई जाती है उससे उस स्थान का वातावरण शुद्ध होता है और इसका अपना एक वैज्ञानिक आधार है। हवन से वायुमंडल शुद्ध होता है और संक्रमण के आने की आशंकाएं बहुत हद तक कम हो जाती हैं।

जब मिट्टी के बर्तन में दाल बनती थी, मिट्टी के तवे पर रोटी बनती थी और मिट्टी के बर्तन में चावल बनता था, मैं उस स्मृति को भूल नहीं पा रहा हूं, उसका स्वाद और आनंद ही कुछ और था। मिट्टी के बर्तन में भोजन बनाने से और उसमें भोजन करने से हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत होता है यानी रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। कई वैज्ञानिक रिपोर्ट में इस बात को प्रमाणित भी किया गया है। देश भर में शहरीकरण या फिर उद्योगीकरण के बाद समय और ईंधन के अभाव में खाना पकाने के लिए नए-नए तरीकों का ईजाद किया गया जिसमें वाकई में अपेक्षाकृत कम समय में भोजन तैयार हो जाता है। लेकिन अब समय आ गया है कि हमें केवल इस बात की ओर ही ध्यान नहीं देना होगा कि कम ईंधन की खपत या कम समय में बना हुआ भोजन लेना है या फिर ऐसा भोजन लेना है जिसमें हमारे इम्यून सिस्टम यानी रोग प्रतिरोधी क्षमता में वृद्धि करने की ताकत हो। अब हमें इस मसले पर नए सिरे से विमर्श शुरू करना होगा, क्योंकि हम देख रहे हैं कि बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के ढांचे वाले देश भी इस बीमारी का मुकाबला करने में अक्षम हैं।

पुराने दौर के चाहे शहर हों या गांव वहां रात्रिभोज के बाद या दिन के भोजन के बाद भी मीठे के रूप में गुड़ दिया जाता था। आज बहुत सारे डॉक्टरों और योग गुरुओं ने बताया है कि कोरोना वायरस का संक्रमण गले से शुरू होता है और मैं यह समझता हूं कि भारतीयों ने बहुत पहले ही इस बात को जान-समझ लिया था कि अगर गले में किसी तरह का संक्रमण है तो यदि हम सामान्य रूप से गर्म पानी के साथ गुड़ का प्रयोग करें तो आराम मिलता है, और गले का संक्रमण तो लगभग खत्म हो जाता है। अगर गर्म पानी और गुड़ का हम लगातार सेवन करें और चीनी को छोड़ दें, तो यह हमारी सेहत के लिए फायदेमंद हो सकता है।

वैसे आज हमारे सामने जिस तरह की परिस्थिति पैदा हो चुकी है, अब हर हाल में हमें उससे निपटना ही होगा। यह सिर्फ सरकारों की या फिर सरकारी या गैर-सरकारी संगठनों की जिम्मेदारी नहीं है, यह हम सबकी जिम्मेदारी है। यदि हम अपने शरीर के सभी अंगों को हमेशा साफ बनाए रखें तो शरीर के माध्यम से होने वाले किसी भी प्रकार के संक्रमण और उसके फैलाव से बचा जा सकता है। अगर हम देश के सभी गांवों के सभी लोगों और यहां तक कि शहरों में रहने वालों के बीच भी इस संदेश को गंभीरता से प्रसारित कर दें कि हाथ को धोना अनिवार्य है, तो शायद सभी महिला-पुरुषों को शरीर के माध्यम से होने वाले संक्रमण के बारे में जानकारी प्राप्त हो सकती है। पाठ्यक्रमों के जरिये पुस्तकों में इस बात को हम बताएं, रोचक कहानियों, कविताओं आदि के माध्यम से स्वच्छता का संदेश प्रसारित करें तो देश के छात्रों में इसका सकारात्मक असर हो सकता है।

टेलीकॉम कंपनियों को मिली छह महीनों की मोहलत

नई दिल्ली, प्रेट्र : टेलीकॉम नियामक संस्था ट्राइ ने दूरसंचार कंपनियों को मासिक और त्रैमासिक रिपोर्ट दाखिल करने में छह महीनों की छूट दे दी है। कंपनियों को यह रिपोर्ट अप्रैल में जमा करनी थी। कोरोना संकट को देखते हुए टेलीकॉम उद्योग की संस्था सीओएआइ ने ट्राई से पिछले दिनों ही आग्रह किया था कि कंपनियों को इस तरह की रिपोर्ट फाइल करने के लिए और वक्त दिया जाए।

जब भी कोई संकट आता है, तो सबसे बड़ा और पहला असर तरलता पर दिखता है। अभी आरबीआइ को चाहिए कि वह गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों को पर्याप्त तरलता मुहैया कराए।

– अरुंधति भट्टाचार्य, पूर्व चेयरपर्सन, एसबीआइ

एफपीआइ ने की रिकॉर्ड निकासी

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना वायरस संकट के चलते दुनियाभर की अर्थव्यवस्था को मंदी की ओर जाते देख विदेशी निवेशक भारतीय पूंजी बाजारों से कन्नी काटने लगे हैं। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआइ) ने मार्च में अब तक भारतीय पूंजी बाजारों से एक लाख करोड़ रुपये से अधिक रकम की निकासी कर ली है, जो अब तक का सर्वोच्च है। इससे पहले लगातार छह महीनों तक एफपीआइ भारतीय पूंजी बाजारों में शुद्ध खरीदार बने हुए थे। जानकारों का कहना है कि कोरोना वायरस के प्रकोप से बचने के लिए लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध या लॉकडाउन सिर्फ भारत नहीं, बल्कि दुनियाभर में कारगर उपाय के रूप में आजमाया जा रहा है। इसने विदेशी निवेशकों को सतर्क रुख अपनाने पर मजबूर किया है।

डिपोजिटरी आंकड़ों के मुताबिक 2-27 मार्च की अवधि में एफपीआइ ने इक्विटी से 59,377 करोड़ रुपये और डेट सेग्मेंट से 52,811 करोड़ रुपये की राशि निकाल ली। इस दौरान कुल शुद्ध आउटफ्लो 1,12,188 करोड़ रुपये रहा। नेशनल सिक्युरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड ने जब से एफपीआइ आउटफ्लो आंकड़े मुहैया कराने शुरू किए हैं, तब से किसी एक महीने में एफपीआइ द्वारा यह रिकॉर्ड निकासी है। मॉर्निंगस्टार इंडिया के सीनियर एनालिस्ट - मैनेजर रिसर्च हिमांशु श्रीवास्तव का कहना था कि सरकार द्वारा लॉकडाउन की घोषणा के बाद आर्थिक गतिविधियां ठप हो गई हैं। इससे घरेलू इकोनॉमी की विकास दर में बड़ी गिरावट की आशंका जताई जाने लगी है। कोरोना के खिलाफ दुनिया की जंग पिछले कुछ दिनों में तेज हुई है। लेकिन प्रकोप में कमी आने के संकेत अभी बाकी हैं।

मांग घटने से सस्ते क्रूड ऑयल का भी नहीं मिल रहा कोई खरीदार

हालात ▶ भारत की कई रिफानरियों की भंडारण क्षमता फुल

तेल कंपनियों के मुताबिक 50 फीसद कम हुई बिक्री, पेट्रोल पंप मालिकों ने बताया, बिक्री 95 फीसद घटी

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

प्रतीकात्मक

कुछ महीने पहले इंटरनेशनल एनर्जी फोरम ने वर्ष 2020 के बाद दुनिया में क्रूड खपत का अनुमान जारी करते हुए कहा था कि वर्ष 2040 तक इसकी मांग बढ़ती रहेगी। लेकिन कोरोना वायरस ने अभी जिस तरह से दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का चक्का जाम किया है उससे पेट्रोलियम उत्पादों की खपत में भारी कमी होती दिख रही है। पेट्रोलियम उत्पादों के तीन सबसे बड़े उपभोक्ता देश अमेरिका, चीन व भारत में से भारत में पूरी तरह से लॉकडाउन है। अमेरिका के आधे से ज्यादा उद्योग व ट्रांसपोर्ट बंद हैं जबकि चीन के भी कई प्रांतों में स्थिति अभी सामान्य नहीं हुई है। यही वजह है कि पिछले पांच हफ्तों में क्रूड की कीमत 65 डॉलर से घटकर 26 डॉलर प्रति बैरल आ जाने के बावजूद इसके खरीददार नहीं मिल रहे।

भारत में पेट्रोल व डीजल की खपत में 50 फीसद से ज्यादा की कमी आ चुकी है। देश की अधिकांश रिफाइनरियों के क्रूड भंडार पूरी तरह से भरे हुए हैं। जबकि मांग नहीं होने की वजह से देश की अधिकांश रिफाइनरियों में या तो उत्पादन बंद कर दिया गया है या फिर वे अपनी क्षमता का बहुत ही कम उत्पादन कर रही हैं। देश की सबसे बड़ी रिफाइनरी कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक पिछले बुधवार तक कंपनी ने उत्पादन में 30 फीसद कटौती कर दी थी।

पेट्रोल, डीजल, बिटूमिन व अन्य औद्योगिक उत्पादों की खुदरा बिक्री तब तक 50 फीसद कम हो चुकी थी। रेलवे व एविएशन सेक्टर से आने वाली मांग भी नगण्य है। ऐसे में पहले से जो क्रूड खरीद समझौते हुए हैं वे मांग को पूरा करने के लिए काफी हैं। बहरहाल, एलपीजी की मांग बढ़ रही है और उसकी निर्बाध आपूर्ति की जा रही है। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) के चेयरमैन मुकेश कुमार सुराना ने दैनिक जागरण को बताया कि 'लॉकडाउन की वजह से भविष्य की मांग को देखते हुए हमने अपने उत्पादन को नियंत्रित करना शुरू कर दिया है क्योंकि पेट्रोलियम उत्पादों को रिजर्व करके रखना एक संवेदनशील काम है। हम भी उसी के हिसाब से रिफाइनरियों में प्रोडक्शन घटा रहे हैं।' जबकि देश के 68 हजार पेट्रोल पंपों के एसोसिएशन के प्रेसिडेंट अजय बंसल का कहना है कि पिछले 15 दिनों में पेट्रोल व डीजल की बिक्री 95 फीसद कम हो चुकी है। बंसल भारत सरकार की एक पुरानी रिपोर्ट के हवाले से बताते हैं कि 70 फीसद डीजल व 99 फीसद पेट्रोल ट्रांसपोर्ट सेक्टर में इस्तेमाल होता है। रोड पर वाहनों की संख्या देखने से साफ हो जाता है कि बिक्री में 95 फीसद कमी होने का उनका दावा सच के करीब है। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी ने कहा है कि तीन अरब लोगों ने सड़कों पर निकलना बंद कर दिया है जिससे दो करोड़ बैरल कच्चे तेल की मांग कम हो गई है। अगर कोरोना की वजह से औद्योगिक उत्पादन ज्यादा दिनों तक ठप रहता है तो पिछले तीन महीनों में अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड की जो खरीदारी की गई है उससे ही अगले एक वर्ष तक की मांग पूरी की जा सकती है।

बढ़ रही एलपीजी की मांग, सरकार मुस्तैद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : पेट्रोल व डीजल की बिक्री कम होने के बावजूद देश में एलपीजी की मांग बढ़ रही है। आने वाले दिनों में एलपीजी की मांग बढ़ने की संभावना को देखते हुए पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने रविवार को सऊदी अरब के ऊर्जा मंत्री प्रिंस अब्दुल अजीज व सऊदी अरब की सबसे बड़ी तेल कंपनी सऊदी अरैमको के प्रेसिडेंट अमीन नासिर से बात की। प्रधान ने बताया कि सऊदी अरब ने आश्वस्त किया है कि वह भारत की घरेलू मांग के मुताबिक एलपीजी की आपूर्ति करता रहेगा। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के चेयरमैन संजीव सिंह ने बताया है कि सरकारी क्षेत्र की तेल कंपनियां रसोई गैस की मांग को पूरा करने में पूरी तरह से सक्षम हैं। एचपीसीएल के चेयरमैन मुकेश कुमार सुराना के मुताबिक लोगों में दो-तीन सिलेंडर रिजर्व में रखने का प्रचलन देखा जा रहा है जिससे मांग बढ़ गई है।

बैंकों को बासेल नियमों के पालन में मिली छूट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- एनएसएफआर संबंधी मानक अब इस वर्ष पहली अक्टूबर से होंगे लागू
- कोरोना वायरस की वजह से प्रभावित हो रहा है बैंकों का कामकाज

कोविड-19 वायरस की वजह से देश की अर्थव्यवस्था जिस तरह से ठप हुई है, उससे बैंकों का कामकाज काफी प्रभावित हो रहा है। आने वाले दिनों में बैंकिंग व्यवस्था के लिए उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को देखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने बासेल-तीन नियमों के पालन को लेकर बैंकों को कई तरह की राहत दी है।

बैंकों को किसी भी तरह की अस्थिरता की स्थिति में इस्तेमाल होने वाले विशेष फंड (नेट स्टेबल फंडिंग रेश्यो-एनएसएफआर) संबंधी मानकों को इस वर्ष पहली अक्टूबर से लागू करने की छूट दे दी है। अभी तक यह मानक इस वर्ष पहली अप्रैल से लागू होना था। इसी तरह से बैंकों के लिए अलग से कैपिटल कंजर्वेशन बफर (सीसीबी) संबंधी टाइमलाइन को भी इस वर्ष 31 मार्च से बढ़ाकर 30 सितंबर कर दिया गया है। इस छूट का मतलब यह हुआ कि बैंकों को अपने मौजूदा कारोबार से अतिरिक्त धन अलग कर एक विशेष कोष में फिलहाल नहीं रखना होगा।

सीसीबी संबंधी नियम कहता है कि नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) के अलावा बैंकों के पास 2.5 फीसद राशि अलग से संरक्षित होनी चाहिए। बैंक अपनी कुल जमा राशि का 4 फीसद अभी सीआरआर के तौर पर रखते हैं। अगर सीसीबी नियम लागू हो जाता तो उन्हें 2.5 फीसद और राशि अलग रखनी पड़ती। इसी तरह से एनएसएफआर एक ऐसा अनुपात है जिसे बैंकों को अपनी जमा-पूंजी से अलग रखनी है ताकि अगर कोई बड़ा वित्तीय संकट आए तो इसका इस्तेमाल हो सके। जाहिर है कि उक्त दोनो मानकों के पालन संबंधी समय के आगे बढ़ जाने से बैंकों पर दबाव कम होगा।

गौरतलब है कि अंतराष्ट्रीय बासेल-3 मानक को शनिवार को ही एक और वर्ष के लिए टाल दिया गया है। अब यह जनवरी, 2023 से लागू होगा। बासेल समिति की निगरानी संस्था सेंट्रल बैंक गवर्नर्स एंड हेड्स ऑफ सुपरविजन (जीएचओएस) ने कोरोना वायरस के संकट को देखते हुए यह पफैसला किया है। पहले ये नियम जनवरी, 2022 से लागू होने थे।

दुनियाभर के बैंकों की वित्तीय स्थिति मजबूत बनाने और उन्हें तात्कालिक जोखिमों से बचाने के लिए बासेल मानकों की शुरुआत हुई थी। वर्ष 2007-08 की वैश्विक आर्थिक मंदी और बैंकों की बुरी हालत के दौरान बासेल-2 मानकों की खामियां खुलकर सामने आईं। इसे देखते हुए बासेल-3 मानक तैयार किए गए, जिसे पिछले वर्ष ही लागू हो जाना था। लेकिन इसे जनवरी, 2022 के लिए टाल दिया गया था। बासेल मानक भारत में भी वर्ष 2013 से धीरे धीरे लागू किए जा रहे हैं।

सरकारी खरीद शुरू होने पर ही किसान आएंगे मंडी

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

वजह

- सरकारी प्रोत्साहन की घोषणा से आश्वस्त हैं किसान
- मंडियों में फसलों का बाजार मूल्य एमएसपी से नीचे, आवक नहीं

मंडियों में रबी सीजन की फसलों की खरीद-बिक्री के साथ कृषि संबंधी सभी गतिविधियों को सरकार ने लॉकडाउन के प्रतिबंधों से मुक्त कर दिया है। लेकिन मंडियां खुली होने के बावजूद किसान अपनी उपज वहां बेचने नहीं जा रहे हैं। मंडियों में फसलों के मूल्य उनके न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से बहुत नीचे बोले जा रहे हैं। यही वजह है कि देश में एपीएमसी की विभिन्न मंडियों में रबी फसलों की आवक नहीं के बराबर हो रही है।

दरअसल, सरकारी खरीद चालू होने के बाद ही बाजार में भाव ऊपर उठेगा। मंडियों में व्यापारी लॉकडाउन के चलते सरकारी खरीद नहीं होने से किसानों की मजबूरी का फायदा उठाना चाहते हैं। लेकिन सरकार की घोषणा से उनके मंसूबों पर पानी फिर गया है। ज्यादातर राज्य सरकारों ने किसानों को उनकी रबी फसलों की उपज के भंडारण के लिए प्रोत्साहित किया है, जिसके लिए उन्हें अलग-अलग राज्यों में विभिन्न स्कीम के तहत सब्सिडी दी जाएगी। हरियाणा में किसान जितनी देर से गेहूं बेचने निकलेंगे, प्रोत्साहन राशि उसी हिसाब से बढ़ती जाएगी। जबकि उत्तर प्रदेश में बखारी यानी अनाज रखने के लिए एकमुश्त धनराशि देने की योजना है। वैसे तो राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण भंडारण योजना चल रही है, जिसका लाभ किसान उठा सकते हैं। इसीलिए लॉकडाउन की चुनौतियों से किसान निश्चिंत हैं।

यही वजह है कि किसी दबाव में आकर किसान अपनी फसल बेचने को मजबूर नहीं है। तभी तो खुली होने के बावजूद मंडियों में आवक न के बराबर हो रही है। गुजरात व मध्य प्रदेश में ज्यादातर फसलों की कटाई हो चुकी है। लेकिन सरकारी खरीद शुरू न होने से उनकी आवक मंडियों में नहीं हो रही है। खुले बाजार में कीमतें एमएसपी के मुकाबले बहुत नीचे हैं। गेहूं का भाव गुजरात की मंडियों में 1,490 रुपये से 1,850 रुपये प्रति क्विंटल है, जबकि एमएसपी 1,925 रुपये निर्धारित है। इसी तरह मध्य प्रदेश का प्रीमियम गेहूं शरबती जो बाजार में 2,500 से 2,700 रुपये क्विंटल बिकता है, उसका मूल्य 1,850 से 1,980 रुपये प्रति क्विंटल बोला जा रहा है। उत्तर प्रदेश की मंडियों में गेहूं की आवक न के बराबर रही है।

दलहन फसलों में चना की सबसे अधिक खेती मध्य प्रदेश में होती है, जहां की विभिन्न मंडियों में भाव 3,400 रुपये 3,680 रुपये प्रति क्विंटल बोला जा रहा है। जबकि राजस्थान में चना 3,500 रुपये क्विंटल बिक रहा है। इसके मुकाबले सरकार का घोषित एमएसपी 4875 रुपये प्रति क्विंटल है। किसानों को बेसब्री से सरकारी खरीद शुरू होने का इंतजार है। रबी सीजन में तिलहनी फसलों में सरसों प्रमुख है, जिसका 42 फीसद उत्पादन अकेले राजस्थान में होता है।

इस बार सरसों की बंपर फसल हुई है, जो कटकर किसान के घर तक पहुंच चुकी है। लेकिन यह मंडियों में नहीं पहुंची। 27 मार्च को यहां की मंडियों में मात्र 20 टन सरसों बिकने के लिए पहुंची। भाव 3,675 रुपये से लेकर 3,700 रुपये प्रति क्विंटल है। जबकि सरसों का एमएसपी 4,425 रुपये प्रति क्विंटल है। इसी वजह से सरसों का किसान अपनी उपज बेचने को तैयार नहीं है। ज्यादातर राज्य सरकारों ने किसानों को अपनी उपज के भंडारण पर 50 रुपये से 100 रुपये प्रति क्विंटल तक की सब्सिडी देने का एलान किया है। किसान नेता चौधरी पुष्पेंद्र सिंह ने कहा कि सरकार के इस एलान के बाद किसान अपनी उपज बेचने के दबाव में नहीं है। इससे उसे दोहरा फायदा मिल सकेगा।

लॉकडाउन में भी कारोबारी रहेंगे अपडेट

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- कोरोना के दौरान निवेशकों को मिलेगी रियल टाइम जानकारी, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की पहल

एक तरफ सरकार कोरोना संकट से लड़ रही है तो दूसरी तरफ आर्थिक मोर्चे को मजबूत बनाने के लिए निवेशकों को भी रियल टाइम जानकारी उपलब्ध करा रही है, ताकि वे अनुकूल क्षेत्र में निवेश कर सकें। लॉकडाउन के दौरान कारोबार को जारी रखने की संभावनाओं को तलाशने के लिए विशेषज्ञों से संपर्क किया जा रहा है।

निवेशकों को रियल टाइम जानकारी के लिए वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की तरफ से द इन्वेस्ट इंडिया बिजनेस इम्यूनिटी प्लेटफॉर्म की शुरुआत की गई है। मंत्रालय के मुताबिक लॉकडाउन के दौरान कारोबार जारी रखने की जानकारी के लिए अमेरिकी वित्तीय सेवा कंपनियों के साथ विशेष सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन का फोकस लॉकडाउन के कारण कारोबार की निरंतरता सुनिश्चित करने से जुड़े मुद्दों की पहचान करने और समाधान पर है। अमेरिका की लाइफ साइंसेज कंपनियों के साथ भी संपर्क किया जा रहा है ताकि लॉकडाउन के दौरान उनके सामने उत्पन्न हुई समस्याओं और उनके निवारण के तरीकों पर चर्चा की जा सके। 'कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के बीच स्टार्ट-अप के कारोबार में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के प्रयासों पर चर्चा चल रही है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के मुताबिक यह प्लेटफॉर्म एक व्यापक संसाधन के रूप में चौबीसों घंटे काम कर रहा है, जिससे कारोबारियों तथा निवेशकों को भारत में कोविड-19 से निपटने के लिए उठाए जा रहे ठोस कदमों की रियल टाइम नवीनतम जानकारियां मिल रही हैं। मंत्रालय के मुताबिक इस प्लेटफॉर्म पर अब तक 50 से ज्यादा देशों के 1.75 लाख से भी अधिक विजिटर आ चुके हैं। वाणिज्य एवं दद्योग मंत्रालय के मुताबिक बिजनेस इम्यूनिटी प्लेटफॉर्म (बीआइपी) कारोबार से जुड़े मुद्दों को सुलझाने वाला एक सक्रिय प्लेटफॉर्म है, जहां संबंधित सेक्टर के विशेषज्ञों की एक टीम हर प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देती है। एमएसएमई के प्रश्नों का जवाब देने और उनके मुद्दों को सुलझाने के लिए सिडबी के साथ साझेदारी की गई है।

मंत्रालय के मुताबिक यह प्लेटफॉर्म निवेशकों को ई-मेल व वाट्सएप पर प्रश्नों के उत्तर देता एवं मुद्दों को सुलझाता है। मुख्य रूप से लॉजिस्टिक्स, विभिन्न प्रकार की अधिसूचनाएं, सीमा शुल्क से जुड़े मुद्दों, यूनिट को बंद करने और दिए गए विभिन्न स्पष्टीकरणों के बारे में निवेशक सवाल पूछ रहे हैं। बीआइपी ने स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित आवश्यक आपूर्ति या वस्तुओं को खरीदने के लिए 'ज्वाइनिंग द डॉट्स' अभियान शुरू किया है। यह आवश्यक उपकरणों की मांग एवं आपूर्ति में अंतर को पूरा करने के लिए विकल्पों की सुविधा भी प्रदान कर रहा है।

वैश्विक माहौल से तय होगी बाजारों की चाल

- राहत पैकेज पर करीब-करीब प्रतिक्रिया दे चुके घरेलू शेयर बाजार
- पिछले सप्ताह बड़ी-बड़ी बढ़त के बावजूद संसेक्स 100 अंक से अधिक गिरकर बंद

प्रतीकात्मक

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना वायरस के चलते शेयर बाजारों का पिछले कुछ दिनों से जो हाल रहा था, उसमें सरकार और आरबीआइ द्वारा राहत की घोषणाओं के बाद से सुधार दिखा है। लेकिन अब आने वाले दिनों में शेयर बाजारों की चाल बहुत हद तक विदेशी बाजारों के घटनाक्रमों पर निर्भर करेगी।

जानकारों का कहना है कि कोरोना का असर किस देश पर कैसा रहता है और इससे उबरने की दिशा में क्या प्रगति होती है, इस पर शेयर बाजारों की पैनी नजर रहने वाली है। ज्यादातर जानकारों का यही कहना है कि शेयर बाजारों का दारोमदार इस बात पर निर्भर करेगा कि कोरोना वायरस के प्रकोप की धार कुंद करने के लिए दुनियाभर के देशों ने जो फैसले लिए हैं, वे कितने कारगर साबित होते हैं। वैसे, इस सप्ताह गुरुवार को रामनवमी के उपलक्ष्य में घरेलू शेयर बाजार बंद रहेंगे।

इस सप्ताह नए महीने के साथ-साथ वित्त वर्ष की भी शुरुआत हो रही है। लिहाजा, कई आंकड़ों और बदलावों पर भी शेयर बाजारों की नजर रहेगी। इसी सप्ताह गुरुवार को उत्पादन संबंधी आंकड़े आने हैं। ऑटो कंपनियां भी बुधवार को पिछले महीने की बिक्री का आंकड़ा पेश करेंगी।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने पिछले सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों को राहत पैकेज दिया था। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च प्रमुख विनोद नायर का कहना है कि उस राहत पैकेज का शेयर बाजारों पर बहुत सीमित असर दिखेगा। इसकी वजह यह है कि अभी निवेशक मूल रूप से यह जानना चाहेंगे कि कोरोना वायरस असल में कितना आर्थिक नुकसान हुआ है और कितने लोग इससे प्रभावित हुए हैं। हालांकि पिछले सप्ताह शेयर बाजारों में राहत की रैली देखी गई है। लेकिन इस सप्ताह ज्यादातर निवेशक पारंपरिक सोच के साथ चलते हुए थोड़ा इंतजार करते और सिर्फ गुणवत्तापूर्ण स्टॉक्स में खरीदारी करते दिख सकते हैं।

रिलायंस सिक्युरिटीज के सीनियर रिसर्च एनालिस्ट विकास जैन का कहना था कि कोरोना वायरस के चलते दुनियाभर के बाजारों में दिख रही अनिश्चितता के बीच घरेलू शेयर बाजार में भी निवेशक थोड़े सतर्क दिखेंगे। रेलिगेयर ब्रोकिंग सर्विसेज के वाइस प्रेसिडेंट - रिसर्च अजीत मिश्रा का कहना है कि पिछले सप्ताह शेयर बाजारों में जो उछाल दिखा, वह वित्त मंत्रालय और आरबीआइ के राहत पैकेज पर त्वरित प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया था। कुल मिलाकर कहें तो निवेशक सतर्क ही रहने वाले हैं।

पिछले सप्ताह आरबीआइ ने रेपो रेट में 75 आधार अंकों के साथ दशक की सबसे बड़ी कटौती की थी। आइआइएफएल ग्रुप के चेयरमैन निर्मल जैन का कहना था कि तरलता का डोज, नीतिगत ब्याज दरों में कटौती और कर्ज भुगतान पर तीन महीने का स्थगन जैसे फैसले तात्कालिक रूप से संपूर्ण पैकेज कहे जा सकते हैं। अब जैसे ही लॉकडाउन खत्म होता है, सरकार की प्राथमिकता खपत बढ़ाने पर रहनी चाहिए।

सात कंपनियों का पूंजीकरण 1.23 लाख करोड़ रुपये बढ़ा

नई दिल्ली, प्रेट्र : पिछले सप्ताह देश के शेयर बाजारों की सधी वापसी के बीच शीर्ष 10 कंपनियों में से सात के बाजार पूंजीकरण (एमकैप) में 1,23,039.72 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। इसमें सबसे ज्यादा फायदा आइटी दिग्गज इन्फोसिस को हुआ। सिर्फ आइटीसी, भारती एयरटेल और आइसीआइसीआइ बैंक के पूंजीकरण में पिछले सप्ताह गिरावट दर्ज हुई।

पिछले सप्ताह के कारोबार में एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 12,544.69 करोड़ रुपये बढ़ा। इसके चलते सोमवार को एचडीएफसी बैंक 4,96,264.84 करोड़ रुपये बाजार पूंजीकरण के साथ कारोबार की शुरुआत करेगा। आरआइएल के बाजार पूंजीकरण में पिछले सप्ताह 28,716.88 करोड़ रुपये का उछाल आया और वह 6,75,448.95 करोड़ रुपये पर जा पहुंचा। कोटक महिंद्रा बैंक ने 25,741.80 करोड़ रुपये जोड़कर पूंजीकरण को 2,67,353.25 करोड़ रुपये पर पहुंचाया।

एचयूएल का पूंजीकरण पिछले सप्ताह 19,007.13 करोड़ रुपये चढ़कर 4,63,336.65 करोड़ रुपये हो गया। पिछले सप्ताह बाजार पूंजीकरण के लिहाज से शीर्ष 10 कंपनियां टीसीएस, आरआइएल, एचडीएफसी बैंक, एचयूएल, एचडीएफसी, इन्फोसिस, कोटक महिंद्रा बैंक, भारती एयरटेल, आइसीआइसीआइ बैंक और आइटीसी रहीं।

राष्ट्रीय

एसडीएम ने भावनाओं पर लगाया कर्तव्य का अंकुश

जागरण संवाददाता, सीतामढ़ी

- दादी की अंतिम क्रिया में घर नहीं गए सदर एसडीएम कुमार गौरव
- कहा, देश संकट में तो कैसे भूल जाऊं अपना फर्ज

जिसकी गोद में खेलकर कुमार गौरव बड़े हुए, वह शनिवार को अनंत यात्रा पर निकल गईं। अपनी दादी के निधन की सूचना मिलने पर भावनाओं का ज्वार आया, लेकिन कोरोना संकट में देखते हुए सदर एसडीएम की जिम्मेदारी संभाल रहे इस आइएएस अधिकारी ने अपने फर्ज को प्राथमिकता दी। अपनी भावनाओं पर कर्तव्य का अंकुश लगा दिया।

बिहार से सीतामढ़ी में कोरोना से जंग में सदर एसडीएम ने कर्तव्य को महत्व दिया। उनकी दादी का शनिवार को निधन हो गया था। लेकिन, वह अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हुए। गम के बीच कर्तव्य पथ से डिगे नहीं। लिहाजा, उनके हौसले को हर कोई सलाम कर रहा। मुंगेर जिले के खड़गपुर प्रखंड के कोरिया निवासी रेलकर्मी राजेंद्र प्रसाद यादव के पुत्र कुमार गौरव रविवार को भी कर्तव्यपथ पर अग्रसर रहे, प्रशासनिक बैठकों में व्यस्त रहे। 2017 बैच के आइएएस अधिकारी कुमार गौरव ने पिछले साल अक्टूबर में सदर एसडीएम की कमान संभाली थी।

डीपीआरओ परिमल कुमार ने बताया कि जब दादी के निधन की खबर मिली तो वह ड्यूटी निभा रहे थे। खबर सुनने के बाद भी ड्यूटी नहीं छोड़ी। कोलकाता से आए सात मजदूरों की स्क्रीनिंग कराई। उन्हें गांव तक पहुंचाने का इंतजाम कराया। उनके प्रयास से सभी सुप्पी प्रखंड क्षेत्र स्थित अपने गांव लौटे। इसके अलावा जिलेवासियों को आवश्यक वस्तुओं की कमी दूर करने के लिए कई दुकानदारों से मिलकर होम डिलीवरी के लिए राजी किया। जिला प्रशासन की ओर से इस कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी की प्रशंसा की जा रही है।

अरुण गोविल बोले, लोग अब भी मुझे राम कहते हैं

मुंबई, प्रेट्र : ऐसा बहुत कम ही होता है जब किसी अभिनेता द्वारा निभाए गए चरित्र को दर्शक इतनी शिद्दत से आत्मसात कर लेते हैं कि वह उसकी पहचान बन जाती है। ऐसा ही कुछ हुआ अभिनेता अरुण गोविल के साथ। रामानंद सागर के टीवी सीरियल रामायण में निभाई गई भगवान राम की भूमिका अरुण गोविल की पहचान बन गई है। वह आश्चर्य जताते हैं कि आज 33 साल बाद भी लोग उन्हें राम के रूप में ही पहचानते हैं।

अरुण गोविल ने खास बातचीत में कहा, 'मुझे याद है कि मैंने भगवान राम की भूमिका के लिए ऑडिशन दिया था, लेकिन शुरुआत में विफल हो गया। पूरे मेकअप के साथ मेरा फोटोशूट हुआ, लेकिन मैं भगवान राम की तरह नहीं दिख रहा था। इसके बाद मैंने अपने चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश की और यह अदा स्वीकार कर ली गई।' उन्होंने बताया, 'रामायण के बाद मेरा फिल्मी कैरियर लगभग खत्म हो गया था, क्योंकि मेरी छवि बहुत दमदार हो गई थी। मैंने सीरियलों में काम करते हुए स्थापित छवि से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन ऐसा संभव नहीं हो सका। फिर मुझे एहसास हुआ कि शायद भगवान ने मुझे राम की भूमिका के लिए ही बनाया था। आज भी लोग मुझे अरुण गोविल नहीं, राम कहते हैं।'

सीता की भूमिका निभाने वाली दीपिका चिखलिया ने कहा, '15 वर्षों तक तो मेरे पास सांस लेने और सोचने तक का समय नहीं था। इसके बाद पिछले 8-10 साल से ठहराव सा आ गया। पिछले तीन वर्षों में मैंने फिल्मों में काम किया और दो गुजराती प्रोजेक्ट को भी पूरा किया।' उन्होंने कहा कि रामायण के बाद ही उनके करियर की शुरुआत हुई। उल्लेखनीय है कि कोरोना वायरस के खतरे से निपटने के लिए 21 दिवसीय लॉकडाउन के बीच प्रसार भारती ने शनिवार से दूरदर्शन पर मशहूर सीरियल रामायण का फिर से प्रसारित करने का फैसला किया है।

एके-47 और दवा की थैली लेकर एसपी लड़ रहे कोरोना से जंग

योगेंद्र ठाकुर, दंतेवाड़ा

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिले के एक गांव में बीमार की जांच करते पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव। नई दुनिया

जवानों के साथ ग्रामीणों को भी कोरोना वायरस से आगाह कर रहे हैं। उन्हें दवाएं भी दे रहे हैं। जागरूकता के चलते ग्रामीण गांव में नाकाबंदी कर घरों से नहीं निकल रहे हैं। यही कारण है कि दंतेवाड़ा में अब तक पॉजिटिव केस सामने नहीं आया है। सर्चिंग के दौरान जवानों को एहतियात बतरने कहा गया है। सर्दी- जुकाम वाले जवानों को अलग कर जिला मुख्यालय में आइसोलेट किया जा रहा है।

–डॉ अभिषेक पल्लव, एसपी दंतेवाड़ा

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा के पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव खुद पोस्ट ग्रेजुएट डॉक्टर हैं। नक्सल मोर्चे पर वे एक हाथ में एके-47 और दूसरे हाथ में दवाओं का थैला लेकर चलते हैं। इसकी खूब चर्चा होती है रही है। अब कोरोना का संकट आया तो उन्होंने दोहरे मोर्चे पर अपनी जिम्मेदारी थाम ली है। वे खुद सुदूर नक्सल इलाकों में तैनात जवानों के साथ ग्रामीणों से रूबरू हो रहे हैं। जवानों की हौसला अफजाई के साथ ग्रामीणों का उपचार व कोरोना से बचाव के तरीके बता रहे हैं। कोरोना के प्रति जागरूक करने के साथ प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की दवा भी दे रहें हैं।

एसपी गांवों में पहुंच कर ग्रामीणों को नक्सलियों के साथ ही अब कोरोना वायरस से भी सावधान करने में जुटे हैं। उनके गांव में पहुंचने पर बहुत से ग्रामीण सीजनल बीमारियों सर्दी, खांसी, बुखार की शिकायत उनसे करते हैं तो वह नब्ज पर हाथ रखकर थैले से आला निकाल कर ग्रामीणों की जांच करते हैं। फिर दवाएं लिखते हैं।

जवानों को एहतियात बरतने को कहा : रविवार को भी एसपी कटेकल्याण ब्लॉक के जारम कैंप पहुंचे। कैंप का निरीक्षण करने के साथ ही जवानों से रूबरू हुए। जवानों को कोरोना वायरस के संबंध में जानकारी देने के साथ जंगल और गांव किस तरह से सर्चिंग और मोर्चा लेना है, बताया। एसपी ने कहा कि बैरक में रहें या जंगल में, कभी भी भीड़ बनाकर एक साथ न चलें।

2.5 लाख मास्क दिए हैं संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने कोरोना महामारी से जूझ रहे अमेरिका को। यूएन ने यह कदम अपने मुख्यालय न्यूयॉर्क में कोरोना के बेतहाशा मामले सामने आने के बाद उठाया।

ब्रिटेन में फंसे भारतीय छात्रों ने मोदी से की बाहर निकालने की अपील

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटेन में फंसे भारतीय छात्रों ने उन्हें भारत लाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी से विमान की व्यवस्था कराने की अपील की है। करीब 380 भारतीय छात्रों ने भारत सरकार से सामूहिक अपील करने के लिए ही अपने पासपोर्ट की जानकारी भी साझा की है। इन छात्रों में केरल के मरीज इंजीनियरों का एक दल भी शामिल है, जिसे इस सप्ताह अपनी परीक्षाएं देने के बाद भारत लौटना था। भारत ने कोरोना महामारी को फैलने से रोकने के लिए 14 अप्रैल तक विमान सेवाओं पर प्रतिबंध लगा रखा है।

एनवाईके शिप मैनेजमेंट में फस्र्ट इंजीनियर अखिल धर्मराज ने कहा, 'हमारी 23 और 24 मार्च को परीक्षाएं होनी थीं। 23 तारीख को परीक्षा केंद्र में प्रश्न पत्र मिलने के बाद परीक्षाएं रद कर दी गईं। इसी दौरान भारत ने भी यात्रा प्रतिबंध लगा दिया। हम अपार्टमेंट और हॉस्टल में अलग-अलग रह रहे हैं। हमारे पास मास्क, दस्ताने और सैनिटाइजर भी नहीं हैं, जिसके चलते हम सभी को इस जानलेवा वायरस के संपर्क में आने

380 छात्रों ने पासपोर्ट की जानकारी भी साझा की

प्रतीकात्मक

का खतरा बना रहता है। मुझे कोचीन एयरपोर्ट से पता चला है कि हाल में सिडनी से भारतीय नागरिकों को लेकर एक विमान उतरा है। भारतीयों को अन्य देशों से निकाला जा रहा है लेकिन पता नहीं हमें क्यों छोड़ दिया गया।'

जॉनसन ने लोगों से की घर में रहने की अपील : कोरोना वायरस से संक्रमित ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने देश के तीन करोड़ परिवारों को पत्र लिखकर घर में ही रहने की अपील की है। इंस्टाग्राम पर पोस्ट इस पत्र में उन्होंने कहा, 'हमें पता है कि चीजें बेहतर होने से पहले खराब होंगी, लेकिन हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। जितना अधिक हम नियमों का पालन करेंगे उतना ही कम नुकसान होगा और जल्द ही जीवन सामान्य हो जाएगा। मैं जानता हूं कि प्रतिबंधों के चलते आपको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन महामारी को फैलने से रोकने के लिए यह आवश्यक है। संक्रमण का पता चलने के बाद से जॉनसन आइसोलेशन में हैं।

हेरात-जलालाबाद से भारत ने कर्मचारियों को भेजा काबुल

नई दिल्ली, प्रेट्र : अफगानिस्तान में भी कोरोना वायरस का तेजी से प्रसार हो रहा है। इसको देखते हुए भारत ने हेरात और जलालाबाद में अपने वाणिज्य दूतावास से राजनयिकों और कर्मचारियों को काबुल भेज दिया है। अफगानिस्तान की बहुत बड़ी सीमा ईरान से लगती है, जहां कोरोना वायरस ने कहर बरपा रखा है और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग वहां से लौट रहे हैं।

सरकारी सूत्रों ने बताया कि एहतियात के तौर पर इन दोनों वाणिज्य दूतावासों से सभी भारतीय कर्मचारियों को काबुल भेजा गया है। हेरात और जलालाबाद में चिकित्सा सुविधाएं भी बेहतर नहीं हैं।

कोरोना से त्रस्त ईरान से लगती है हेरात की सीमा, बड़ी संख्या में लौट रहे हैं अफगानी

इसको देखते हुए भी भारत ने अपने कर्मचारियों को वहां से हटाने का फैसला किया। अफगानिस्तान सरकार के मुताबिक कोरोना वायरस से वहां 110 लोग संक्रमित हुए हैं। लेकिन स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक वास्तविक संख्या बहुत ज्यादा है, क्योंकि वहां के कई प्रांतों में न तो लैब है और न ही जांच की सुविधा ही मौजूद है। अफगानिस्तानी मीडिया के मुताबिक कोरोना वायरस से संक्रमित होने वालों में दो विदेशी राजनयिक और नाटो के चार अधिकारी भी शामिल हैं। सूत्रों ने बताया कि काबुल में भी भारतीय राजनयिकों और सभी कर्मचारियों को वायरस से बचाव के लिए सभी एहतियाती कदम उठाने को कहा गया है। इसमें ड्यूटी में कटौती भी शामिल है।

गौरतलब है कि हेरात प्रांत की सीमा भी ईरान से लगती है। इसके अलावा ईरान में कोरोना वायरस का प्रकोप फैलने के बाद से बड़ी संख्या में अफगानी वहां से लौट भी रहे हैं। आंकड़ों के मुताबिक ईरान में कोरोना वायरस से अब तक ढाई हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और 35 हजार से ज्यादा संक्रमित हुए हैं।

चीन के महामारी से जुड़े आंकड़े सवालों के घेरे में

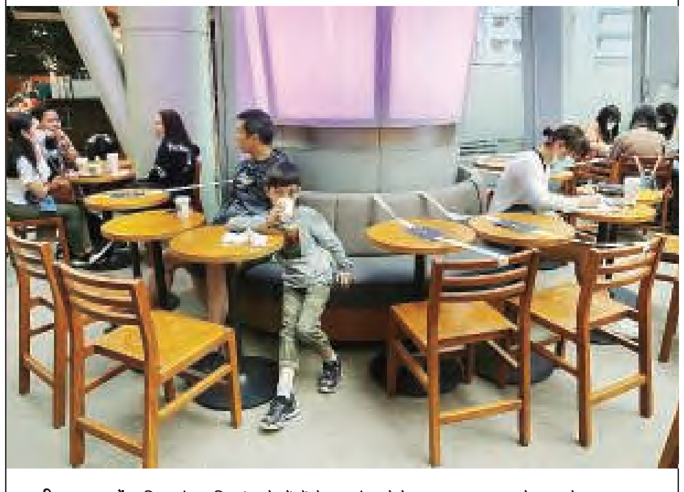
दूरी बनाए रखें : विश्व के अधिकांश देशों में फैल चुके कोरोना वायरस का प्रकोप थमने का नाम नहीं ले रहा है। हालांकि लोग काफी सावधानी व सतर्कता बरत रहे हैं। यह तस्वीर हांगकांग के स्टारबक कॉफी शॉप की है, जहां कोरोना संक्रमण से बचने के लिए शारीरिक दूरी का कड़ाई से पालन किया जा रहा है। यहां सभी टेबल पर टेप लगा दी गई है। एपी

वुहान, एएनआइ : कोरोना महामारी से जुड़े चीन के आंकड़ों पर संदेह गहराता जा रहा है। वुहान के शवदाह गृहों के बाहर अपने प्रियजनों की अस्थियां लेने के लिए लंबी कतारें लगी हैं। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि आखिर हुबेई प्रांत की राजधानी वुहान में इस महामारी से कितने लोगों की मौत हुई?

चीन के एक मीडिया संस्थान कैक्सिन ने एक तस्वीर जारी की है, जिसमें कई ट्रक 2500 अस्थि कलश लेकर पिछले सप्ताह एक शवदाह गृह से निकलते दिख रहे हैं।

एक अन्य तस्वीर में दिखाया गया है कि 3,500 अस्थि कलश शवदाह गृह में रखे हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार शवदाह गृह में काम करने वाले कर्मचारियों ने यह बताने से इन्कार कर दिया कि अभी कितने अस्थि कलश परिजनों को दिए जाने बाकी हैं। कुछ लोगों ने शिकायत की है कि उन्हें अपने प्रियजनों की अस्थियां लेने के लिए कई घंटों तक जानबूझकर इंतजार कराया जा रहा है।

चीन की सरकार के आंकड़ों के अनुसार, वुहान में 2,535 लोगों की कोरोना संक्रमण से मौत हुई है। लेकिन लोगों को इस आंकड़े पर संदेह है। सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने वुहान के शीर्ष अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग की है। इन लोगों का कहना है कि लॉकडाउन के दौरान ऐसे भी कई लोगों की मौत हुई है, जिनमें कोरोना के लक्षण तो थे, लेकिन उनका टेस्ट नहीं किया गया। इस दौरान उचित उपचार की कमी के चलते भी कई लोगों की मौत हो गई क्योंकि डॉक्टर महामारी के चलते उन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे सके। शहर की सिविल अफेयर्स एजेंसी के आंकड़ों के अनुसार 2019 की चौथी तिमाही में वुहान में 56,007 अंतिम संस्कार हुए। यह संख्या 2018 की चौथी तिमाही के मुकाबले 1,583 और 2017 की चौथी तिमाही की तुलना में 2,231 ज्यादा थी। बता दें कि चीन के वुहान शहर में ही कोरोना का मामला सबसे पहले प्रकाश में आया था।

प्रियजनों की अस्थियां लेने के लिए लगी लंबी कतारें

ज्यादातर पर्यटन स्थल खुले

दो महीने के लॉकडाउन के बाद चीन में ज्यादातर पर्यटन स्थलों को फिर खोल दिया गया है। चीनी विचारक कंफ्यूशियस के गृहनगर कुफू को भी आम लोगों के लिए खोल दिया गया है। लेकिन भ्रमण के दौरान पर्यटकों को मास्क पहनना होगा और प्रवेश करते समय उनका तापमान भी लिया जाएगा। वुहान में मेट्रो सेवा भी शुरू कर दी गई है।

संक्रमण के 45 नए मामले

कोरोना संक्रमण से चीन में शनिवार को पांच और लोगों की मौत हो गई। यह सभी मौतें वुहान में हुईं। लेकिन राहत की बात यह है कि पिछले कई दिनों में वुहान में संक्रमण का एक ही मामला सामने आया है। शनिवार को देशभर में संक्रमण के 45 नए मामले दर्ज किए गए। चीन में अब तक 3,300 लोगों की मौत हो चुकी है।

स्पेन और इटली ने मांगी ईयू से मदद

कोरोना का कहर ▶ दुनिया में वायरस से मरने वालों का आंकड़ा पहुंचा 31920

इटली के पीएम बोले-मदद के लिए अंतिम समय तक प्रयास करता रहूंगा

बार्सीलोना, एजेंसियां : कोरोना वायरस महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित स्पेन और इटली ने यूरोपीय यूनियन (ईयू) से मदद मांगी है। रविवार को दुनिया में कोरोना से मरने वालों का आंकड़ा 31,920 पर पहुंच गया है। इनमें से दो-तिहाई मौतें यूरोप में हुई हैं। पिछले चौबीस घंटे में स्पेन में 838 लोगों की जान गई है।

इटली के प्रधानमंत्री ग्यूसेप कोंते ने शनिवार देर शाम कहा कि यूरोप को शेष दुनिया को यह बताना होगा कि वह इस खराब समय का मुकाबला करने में सक्षम है। मैं यूरोपीय यूनियन से मदद के लिए अंतिम समय तक प्रयास करता रहूंगा। स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने भी यूरोपीय यूनियन के 27 देशों से मदद का आह्वान किया है। उन्होंने कहा, 'अपनी स्थापना के बाद से ईयू सबसे कठिन दौर से गुजर रहा है। हम सभी को इस चुनौती के लिए तैयार रहना होगा। बता दें कि स्पेन, इटली, फ्रांस सहित ईयू के छह अन्य देशों ने ईयू से कोरोना बांड जारी करने को कहा है। यह भी एक तरह का कर्ज होगा, जिसे बाजार में बेचकर महामारी से लड़ रहे देश पैसा पा सकेंगे। हालांकि इन देशों के इस विचार से जर्मन और नीदरलैंड जैसे देश सहमत नहीं हैं। उधर, महामारी से निपटने में जरूरी सामानों की कमी भी आड़े आ रही है। मिलान, मैड्रिड और मिशिगन जैसी जगहों पर डॉक्टरों को वेंटीलेटर की कमी से जूझना पड़ रहा है।

बर्फबारी के बीच रविवार को फ्रांस के मेट्ज शहर से एक कोरोना वायरस पीड़ित को मिलिट्री हेलिकॉप्टर से एयरलिफ्ट कर जर्मनी के एस्सेन शहर स्थित यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल पहुंचाया गया। एपी

तीन दिन में अमेरिका में एक हजार से ज्यादा मौतें : अमेरिका में मृतकों की संख्या 2,231 हो गई है। तीन दिन पहले यह आंकड़ा एक हजार से कम था। एक चौथाई मौतें (517) अकेले न्यूयॉर्क में हुई हैं। संक्रमित लोगों की संख्या 1,23,828 हो गई है। डेट्रायट, न्यू आर्लियांस और शिकागो महामारी का नया केंद्र बनकर उभरे रहे हैं। हालत यह है कि अमेरिका के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोग भी सुरक्षित नहीं हैं। ट्रंप ने न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी और कनेक्टिकट के कुछ हिस्सों में दो सप्ताह तक लॉकडाउन की बात पर विचार करने की बात कही है। हालांकि सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन ने न्यूयॉर्क के लोगों से गैर जरूरी कामों से घरों से नहीं निकलने की अपील की है। उधर, ट्रंप के न्यूयॉर्क को लॉकडाउन करने वाले बयान पर वहां के गवर्नर ने नाखुशी जताई है। उन्होंने कहा कि वह इससे सहमत नहीं हैं और ना ही इस पर उनकी कोई राय ली गई है।

ये हालात लंबा चलेंगे : रूहानी : ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने रविवार को कहा कि महामारी से उपजे हालातों में हाल-फिलहाल कोई राहत नहीं मिलेगी। मौजूदा समय में जीवन जीने का जो तरीका है वह लंबा चलेगा।

वायरस से स्पेन की राजकुमारी की मौत

स्पेन की राजकुमारी मारिया टेरेसा का कोरोना वायरस से शुक्रवार को निधन हो गया है। 86 साल की राजकुमारी मारिया स्पेन के राजा फिलिप छठे की चचेरी बहन थीं। उनके छोटे भाई राजकुमार सिक्टस एनरिक डे बोरबोन ने फेसबुक पर राजकुमारी के निधन की सूचना दी। बता दें कि स्पेन के राजा फिलिप छठे के कोरोना नेगेटिव आने के कुछ सप्ताह बाद राजकुमारी टेरेसा के निधन की सूचना आई है। 28 जुलाई 1933 को जन्मीं राजकुमारी मारिया की पढ़ाई फ्रांस में हुई थी और पेरिस के विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की प्रोफेसर बनीं।

कोविड-19 का असर

मिस्र ने अपने समुद्र तटों को बंद कर दिया है।

पोलैंड 10 मई को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव को टालने पर विचार कर रहा है।

रूसी प्रधानमंत्री मिखाइल मिशुस्तिन ने सोमवार से देश की सीमाओं को बंद करने का आदेश दिया है।

वियतनाम ने घरेलू उड़ानों की संख्या में कटौती का फैसला किया है।

ब्रिटेन में 108 वर्षीय महिला हिल्डा चर्चिल की कोरोना से मौत हो गई।

श्रीलंका में शनिवार को कोरोना संक्रमण से पहली मौत हुई।

न्यूजीलैंड में रविवार को कोरोना से पहली मौत रिकॉर्ड की गई।

जर्मनी की चांसलर एंजेला मर्केल ने संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए लोगों से कम से कम बाहर निकलने की अपील की है।

जापान की राजधानी टोक्यो स्थित एक दिव्यांग केंद्र में 28 कोरोना पॉजिटिव मामले सामने आए हैं।

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	10,023	92,472
स्पेन	6,528	78,797
चीन	3,300	81,439
ईरान	2,640	38,309
अमेरिका	2,231	1,23,828
फ्रांस	2,314	37,575
ब्रिटेन	1,235	19,522

स्वीडन में लॉकडाउन का असर नहीं

स्टॉकहोम, एपी : स्टॉकहोम की सड़कें शांत हैं, लेकिन सुनसान नहीं। स्वीडन की राजधानी के केंद्र में अब भी लोग कैफे में बैठते हैं। विक्रेता अब भी फूल बेचते हैं। किशोर पार्कों में समूह में बातचीत करते हैं। कुछ अब भी एक-दूसरे को गले लगाते हैं और हाथ मिलाते हैं। लंबे समय बाद स्कैंडिनेवियाई सर्दियों में कोरोना वायरस महामारी के बावजूद स्वीडन के लोग घरों में नहीं रह रहे हैं, जबकि दुनिया के कई हिस्सों में नागरिक जगह-जगह शरण ले रहे हैं। कुछ अवसरों को छोड़कर उन्हें दुकानें भी खुली नहीं मिल रही हैं।

स्वीडिश अधिकारियों ने जनता को सलाह दी है कि यदि संभव हो तो वे सामाजिक दूरी बनाए रखें और घर से काम करें। एहतियात के तौर पर 70 साल से अधिक उम्र के लागों को सेल्फ आइसोलेशन का सुझाव दिया गया है। फिर भी दुनिया में कहीं और लगाए गए लॉकडाउन की तुलना में यहां की सरकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ज्यादा अनुमति देती है। स्वीडन में बार पर खड़े होने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, लेकिन रेस्टोरेंट के ग्राहकों को भोजन जारी रखने के बजाय टेबल पर खाना परोसा जा सकता है।

उड़ान भरते विमान में लगी आग, आठ की मौत

मनीला, एपी : फिलीपींस की राजधानी मनीला के हवाई अड्डे से जापान के लिए रवाना हो रहे एक विमान में उड़ान भरने के दौरान अचानक आग लग गई, जिससे इस विमान में सवार सभी आठ लोगों की मौत हो गई है।

मनीला एयरपोर्ट के जनरल मैनेजर एड मोनरीयल ने रविवार को बताया कि हादसे के शिकार हुए इस विमान में छह चालक दल के सदस्य थे और दो यात्री सवार थे। यह विमान एक चिकित्सा अभियान पर जापान की राजधानी टोक्यो से एक मरीज को लेने जा रहा था। उन्होंने कहा कि रनवे से उड़ान भरते वक्त हुए हादसे में कोई भी जीवित नहीं बचा है। उन्होंने कहा कि विमान में दो लोग विदेशी नागरिक थे। एक अमेरिकी और एक कनाडाई था। शेष फिलीपींस के ही नागरिक थे। हादसा होने पर आग बुझाने के लिए अग्निशमन दल और बचाव दल के लोग तत्काल घटनास्थल पर पहुंच गए। फिलीपींस के नागरिक उड्डयन प्राधिकरण ने बताया कि हादसे का शिकार हुआ विमान अगस्ता डब्लूडब्लू24 है।

अभी और कठिन समय के लिए तैयार रहें : जॉनसन

बोरिस जॉनसन। फाइल

लंदन, प्रेट्र : कोरोना संक्रमण की पुष्टि के बाद आइसोलेशन में रह रहे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने अपने देश के नागरिकों को पत्र लिखकर घर में ही रहने और शारीरिक दूरी के नियम का पालन करने की अपील की है। साथ ही उन्होंने लोगों से अभी और कठिन समय के लिए तैयार रहने की भी बात कही है।

करीब तीन करोड़ परिवारों को भेजे गए पत्र में जॉनसन कहा है कि यह कड़े उपायों को लागू करने में भी परहेज नहीं करेंगे। इन परिवारों को पत्र के साथ एक पत्रक भी भेजा गया है, जिसमें दिशा-निर्देशों का उल्लेख है। उन्होंने पत्र में लिखा, 'हम जानते हैं कि स्थितियां खराब होती जा रही हैं, लेकिन हम उचित उपाय कर रहे हैं। हम नियमों का जितना पालन करेंगे, उतनी ही मौतें कम होंगी और सामान्य हालात को ओर लौटना सहज होगा।'

कोरोना के ठीक हुए मरीज का खून गंभीर रूप से संक्रमित रोगी पर चढ़ाया गया

ह्यूस्टन, प्रेट्र : अमेरिका के डॉक्टर कोरोना वायरस के संक्रमण का इलाज करने के लिए एक नए तरीके पर काम कर रहे हैं। ह्यूस्टन मेथडिस्ट हॉस्पिटल के डॉक्टरों ने कोरोना संक्रमण से ठीक हुए एक मरीज का खून इस बीमारी से गंभीर रूप से पीड़ित एक रोगी को चढ़ाया है। ऐसा प्रयोग करने वाला यह अमेरिका का पहला अस्पताल बन गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, घातक कोरोना से दो हफ्ते से अधिक समय तक लड़कर स्वस्थ्य हो रहे एक व्यक्ति ने ब्लड प्लाज्मा कोनवालेसेंट सीरम थेरेपी के लिए दान दिया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, माना जा रहा है कि इलाज का यह तरीका साल 1918 के स्पैनिश फ्लू महामारी के समय का है। मेथडिस्ट्स रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिक डॉ. एरिक सलाजार ने अपने बयान में कहा कि कोनवालेसेंट सीरम थेरेपी कोरोना के इलाज का एक कारगर तरीका हो सकता है। हालांकि, अभी चल रहे नैदानिक परीक्षणों में थोड़ा समय लग सकता है लेकिन उनके पास इतना वक्त नहीं है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि इलाज के इस तरीके को इस हफ्ते के अंत में तेजी से इस्तेमाल किया गया। मेथडिस्ट्स रिसर्च इंस्टीट्यूट ने 250 मरीजों से ब्लड प्लाज्मा लिया है जो वायरस से पीड़ित हुए थे। अस्पताल के अध्यक्ष एवं सीईओ मार्क बूम ने कहा कि इस बीमारी के बारे में जानने के लिए बहुत कुछ है। यदि इस थेरेपी से संक्रमण से जूझ रहे लोगों को बचाने में मदद मिलती है तो हमारे द्वारा हमारे ब्लड बैंक और हमारे शैक्षणिक चिकित्सा के पूर्ण संसाधनों को प्रयोग में लेना एक सार्थक कदम होगा।

वायरस से संक्रमित कनाडाई पीएम की पत्नी हुईं ठीक

टोरंटो, एपी : कोरोना वायरस से संक्रमित कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की पत्नी सोफी ग्रेगोर अब पूरी तरह स्वस्थ हो गई हैं। गत 12 मार्च को चिकित्सकीय जांच में उन्हें कोरोना पॉजिटिव पाया गया था। पीएम ट्रूडो और उनके तीन बच्चों का टेस्ट निगेटिव रहा था। एहतियात के तौर पर पीएम के परिवार के सभी सदस्य घर में ही अलग-अलग रह रहे हैं। पत्नी के स्वस्थ होने पर खुशी जताते हुए ट्रूडो ने लोगों की दुआओं पर अपना आभार जताया। उन्होंने कहा कि वह घर से ही सारे काम निपटा रहे हैं। इस तरह वह देश की जनता के सामने मिसाल पेश करना चाहते हैं कि घर से काम पूरा कर पाना संभव है। कनाडा में कोरोना के अब तक पांच हजार से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। इनमें 61 की मौत हो चुकी है, जबकि 445 मरीज ठीक भी हुए हैं।

इजरायल में गठबंधन सरकार का बनना लगभग तय

बेनी गेंट्ज (बाएं), बेंजामिन नेतन्याहू। फाइल

यरुशलम, एएफपी : इजरायल में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और एक समय उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी रहे बेनी गेंट्ज ने आपातकालीन सरकार के गठन में महत्वपूर्ण प्रगति होने की घोषणा की है। दोनों नेताओं ने रविवार को इस सिलसिले में विस्तृत वार्ता की। इस मिली-जुली सरकार का गठन कोरोना वायरस के जारी प्रकोप को देखते हुए किया जा रहा है। महज 87 लाख की आबादी वाले इजरायल में कोरोना से पीड़ित लोगों की संख्या तीन हजार के पार चली गई है।

इजरायल में साल भर में तीन चुनाव होने के बाद किसी भी गठबंधन को बहुमत नहीं मिला। बीते हफ्ते अरब पार्टियों ने गेंट्ज की ब्लू एंड व्हाइट पार्टी के नेतृत्व वाले गठबंधन को अपना समर्थन देने की घोषणा की थी। इससे 120 सदस्यों वाली संसद नीसेट में गेंट्ज के समर्थक सदस्यों की संख्या 62 हो गई थी। राष्ट्रपति ने भी गेंट्ज को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित कर लिया था। लेकिन इसी बीच देश में कोरोना वायरस का प्रभाव बढ़ गया और विपक्षी एकता में भी फूट पड़ गई। इसके बाद नेतन्याहू ने अपने सेना प्रमुख रहे गेंट्ज की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया। इसका नतीजा यह हुआ कि बीते गुरुवार को संसद के स्पीकर के चुनाव में गेंट्ज को अप्रत्याशित रूप से नेतन्याहू की लिकुड पार्टी का समर्थन मिला और वह निर्विरोध स्पीकर बन गए। इसके बाद दोनों नेताओं के बीच गठबंधन सार्वजनिक हो गया। इसमें नेतन्याहू को इजरायल का प्रधानमंत्री बने रहना था। दोनों पार्टियों की प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया गया है कि शनिवार-रविवार की पूरी रात चली दोनों नेताओं की वार्ता में सरकार के गठन पर सहमति बन गई है। एक समय गेंट्ज की समर्थक रहीं तेलेम पार्टी और येश अतीद पार्टी ने उन पर नेतन्याहू से लड़े बगैर ही उनके सामने समर्पण करने की बात कही है।

दिखाई ताकत

230 किलोमीटर की दूरी तक कर सकती हैं मार, दक्षिण कोरिया ने परीक्षण को पूरी तरह अनुचित बताया

उ. कोरिया ने किया बैलिस्टिक मिसाइलों का परीक्षण

सियोल, एपी : एक तरफ पूरी दुनिया कोरोना महामारी से लड़ रही है, वहीं उत्तर कोरिया ने रविवार को दो संदिग्ध बैलिस्टिक मिसाइलों का समुद्र में परीक्षण किया। परीक्षण पर एतराज जताते हुए दक्षिण कोरिया ने इसे पूर्णतया अनुचित बताया है।

दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ ने कहा, 'रविवार सुबह उत्तर कोरिया के पूर्वी तटीय शहर वोनसान से निकली मिसाइलें कोरियाई प्रायद्वीप और जापान के बीच समुद्र में गिरती देखी गईं। इनकी अधिकतम ऊंचाई 30 किलोमीटर थी और समुद्र में गिरने से पहले इन मिसाइलों ने लगभग 230 किलोमीटर की दूरी तय की। दक्षिण कोरिया और अमेरिका के खुफिया अधिकारी इस परीक्षण पर नजर रख रहे हैं। दक्षिण कोरिया की सेना ने इसे अनुचित बताने के साथ ही उत्तर कोरिया से महामारी के इस दौर में परीक्षण रोकने का आग्रह किया है।

कुछ दिनों पहले भी उत्तर कोरिया ने कुछ मिसाइलों का परीक्षण किया था। इसे अमेरिका के साथ रुकी हुई वार्ता को फिर से शुरू करने के दबाव के तौर पर देखा जा रहा था। पिछले सप्ताह उत्तर कोरिया ने जानकारी दी थी कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने किम जोंग उन को एक पत्र लिखकर दोनों देशों के बीच अच्छे संबंधों को बनाए रखने और महामारी के प्रकोप से लड़ने में सहयोग की पेशकश की थी। उत्तर कोरिया यह दावा करता रहा है कि उसके देश में कोरोना का एक भी मामला सामने नहीं आया है। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि उत्तर कोरिया दुनिया को सच नहीं बता रहा।

उत्तर कोरिया ने पूर्वी शहर वोनसान से कम दूरी की दो मिसाइलें जापानी सागर में दागीं। दक्षिण कोरिया के सियोल में रविवार को टीवी पर प्रसारण देखती युवती। एएफपी

वेनेजुएला के पूर्व जनरल समेत कई अधिकारियों ने किया समर्पण

बोगोटा, एएफपी : अमेरिका द्वारा नशीले पदार्थों की तस्करी और आतंकवाद के मामलों में आरोपित वेनेजुएला की सेना के पूर्व जनरल और कुछ अन्य अधिकारियों ने आत्मसमर्पण कर दिया है। पूर्व जनरल और अधिकारियों ने अमेरिकी अधिकारियों के समक्ष कोलंबिया में समर्पण किया। इन सभी को इसी सप्ताह अमेरिका ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के साथ नशीले पदार्थों के जरिये आतंक फैलाने के मामले में आरोपी बनाया है।

कोलंबिया के अभियोजक ने बताया है कि पूर्व जनरल क्लीवर अकाला ने अमेरिकी अधिकारियों के समक्ष समर्पण किया। वह उन 14 अधिकारियों और पूर्व अधिकारियों में शामिल हैं जिन्हें अमेरिका ने आरोपी बनाया है।

अमेरिका ने मादुरो की गिरफ्तारी के विषय में महत्वपूर्ण सूचना देने के लिए डेढ़ करोड़ डॉलर (110 करोड़ रुपये) का इनाम भी रखा है। अकाला की गिरफ्तारी पर भी अमेरिका ने एक करोड़ डॉलर (करीब 75 करोड़ रुपये) का इनाम घोषित कर रखा था। वह दो साल से कोलंबिया के उत्तरी भाग में स्थित बैरेंकिला शहर में रह रहे थे। उन्हें खास विमान से न्यूयॉर्क भेजा गया है, जहां उन पर मुकदमा चलाया जाएगा। कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते कोलंबिया में तालाबंदी चल रही है। राष्ट्रपति इवान डंक ने अकाला को ले जाने वाले विमान को उड़ान भरने की विशेष अनुमति दी थी। अकाला ने कहा है कि वह खुद पर लगे आरोपों का पूरी सच्चाई के साथ सामना करेंगे। कोलंबिया स्थित अमेरिकी दूतावास ने इस प्रकरण पर कुछ भी बोलने से इन्कार कर दिया है।

अमेरिका ने मादुरो के साथ इन्हें किया था नशीले पदार्थ के जरिये आतंक फैलाने में आरोपित

अगर आप किसी भी तरह से जिंदगियां बचाना चाहते हैं तो आप सभी अपने घर में ही रहें।

— जो रूट, इंग्लैंड की टेस्ट टीम के कप्तान

क्रिकेट से 30 लाख रुपये कमाना चाहते थे धौनी : वसीम जाफर

नई दिल्ली, प्रेट्र : अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से लगभग आठ महीने तक दूर रहने के बावजूद महेंद्र सिंह धौनी दुनियाभर के सबसे लोकप्रिय क्रिकेटरों में से एक हैं। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान धौनी हालांकि एक समय क्रिकेट से 30 लाख रुपये कमाकर रांची में सेट होना चाहते थे। यह जानकारी पूर्व भारतीय क्रिकेटर वसीम जाफर ने सोशल मीडिया पर दी है। धौनी ने अपनी कप्तानी में 2007 टी-20 विश्व कप और 2011 वनडे विश्व कप दिलाए हैं।

एक नजर में

मुक्केबाजों को दिया जाएगा ऑनलाइन प्रशिक्षण

नई दिल्ली: कोरोना वायरस के कारण देश में लगे लॉकडाउन से ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके भारतीय मुक्केबाजों की ट्रेनिंग बाधित हुई जिससे अब उन्हें सोमवार से कोचों द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस ट्रेनिंग में उनके मानसिक स्वास्थ्य के अलावा पोषण संबंधित चीजों पर सलाह दी जाएगी। नौ भारतीय मुक्केबाज एमसी मेरी कॉम, सिमरनजीत कौर, लवलीना बोरगोहेन, पूजा रानी, अमित पंघल, मनीष कौशिक, विकास कृष्ण, आशीष कुमार और सतीश कुमार ने टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर लिया जिन्हें कोरोना के चलते 2021 तक स्थगित कर दिया गया। (प्रेट्र)

जल्द ही मुश्किल दौर से बाहर निकलेंगे : छेत्री

नई दिल्ली: भारतीय कप्तान सुनील छेत्री ने रविवार को एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) के कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई के अभियान में हिस्सा लिया और उन्होंने लोगों से इस चुनौतीपूर्ण समय से निपटने के लिए वह सब कुछ करने का अनुरोध किया जो वे कर सकते हैं और हम जल्द ही इस दौर से बाहर निकल जाएंगे। छेत्री ने कहा कि इस चुनौतीपूर्ण समय में हर कोई जूझ रहा है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप विश्व स्वास्थ्य संगठन और आपकी स्थानीय सरकार द्वारा दी गई सलाह का पालन करें। अपना योगदान करने के लिए हमारी जिम्मेदारी है कि घर पर रहें। (प्रेट्र)

आइसीसी ने जोगिंदर शर्मा की प्रशंसा की

नई दिल्ली: आइसीसी ने कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में योगदान देने के लिए भारत के क्रिकेटर से पुलिस अधिकारी बने जोगिंदर शर्मा की प्रशंसा की। पाकिस्तान के खिलाफ 2007 विश्व टी-20 फाइनल के अंतिम ओवर में जीत दिलाने वाले जोगिंदर हरियाणा पुलिस में डीएसपी हैं। वह इस कोरोना से बचने के लिए लोगों को घर में रहने को कह रहे हैं और लॉकडाउन का पालन कराने में लगे हैं। आइसीसी ने ट्वीट किया, 'क्रिकेट करियर के बाद पुलिसकर्मी के तौर पर भारत के जोगिंदर उनमें शामिल हैं जो वैश्विक स्वास्थ्य संकट में अपना योगदान दे रहे हैं।' 36 साल के इस खिलाड़ी ने 2004 से 2007 के बीच चार वनडे और इतने ही टी-20 खेले थे। (प्रेट्र)

कोरोना ने किया क्रिकेट को बीमार

ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने छह महीने के लिए सील की अपनी सीमाएं, मुश्किल में भारत का ऑस्ट्रेलिया दौरा

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने कोरोना वायरस महामारी के चलते अगले छह महीनों तक अपनी सीमा बंद रखने का फैसला किया है। ऐसे में भारतीय टीम का ऑस्ट्रेलियाई दौरा इससे प्रभावित हो सकता है। अक्टूबर-नवंबर में टी-20 विश्व कप से पहले भारतीय टीम को टी-20 त्रिकोणीय सीरीज भी खेलनी है। वहीं, विश्व कप के बाद विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अंतर्गत टेस्ट सीरीज भी खेली जानी है। हालांकि अगर स्थिति सामान्य होती हैं तो ऑस्ट्रेलियाई सरकार इस प्रतिबंध को कम या हटा भी सकता है। सौरव गांगुली की अगुआई वाली बीसीसीआइ को इस महामारी के चलते वैकल्पिक योजना बनानी पड़ सकती है।

बीसीसीआइ के सामने चुनौती: बीसीसीआइ को अभी हालांकि आइपीएल के 13वें सत्र के आयोजन पर भी अंतिम फैसला करना है और अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर भी चिंता का विषय है क्योंकि इसमें श्रीलंका (वनडे और टी-20), जिंबाब्वे दौरा, एशिया कप (टी-20) और इंग्लैंड के खिलाफ सफेद गेंद की सीरीज शामिल है। यात्रा संबंधित छह महीने के प्रतिबंध का मतलब है कि आगामी दिनों में होने वाले टूर्नामेंट के लिए किसी भी टीम को ऑस्ट्रेलिया में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी जिसमें विश्व टी-20 और भारतीय टीम का दौरा शामिल है।

अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी: इसकी जानकारी रखने वाले बीसीसीआइ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम नहीं बताने की शर्त पर कहा कि इस समय कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। यह संभवतः छह महीने की यात्रा पाबंदी है। अगर हालात काबू में आ जाते हैं तो इसे कम किया जा सकता है, लेकिन जिन्हें एफटीपी कैलेंडर का अंदाजा है, उन्होंने स्वीकार किया कि ऐसे हालात में व्यावहारिक समस्या टी-20 त्रिकोणीय सीरीज में हो सकती है जो अक्टूबर की शुरुआत में शुरू होगी जिसमें ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड भी शामिल हैं।

वीजा-टिकट बनवाने में आएगी समस्या: बीसीसीआइ के एक अन्य सूत्र ने कहा कि अगर अंतरराष्ट्रीय यात्रा पाबंदी छह महीने तक जारी रहती है तो वीजा और टिकट बनवाना, सब काफी चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। सिर्फ ऑस्ट्रेलिया ही नहीं, इंग्लैंड को भी सितंबर में सफेद गेंद की सीरीज के लिए भारत का दौरा करना है। ब्रिटेन में चीजें सामान्य होंगी तभी खिलाड़ियों को यात्रा की अनुमति दी जाएगी। ये बड़े सवाल हैं। यदि विश्व टी-20 को आगे बढ़ाया जाता है तो फिर ऑस्ट्रेलिया और भारत की टेस्ट सीरीज भी आगे बढ़ जाएगी, जो विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का हिस्सा है। सूत्र ने कहा कि इस वक्त आप कुछ भी फैसला नहीं ले सकते हैं।

बीसीसीआइ ने कहा, पुजारा परिवार की तरह घर में ही रहें

नई दिल्ली: भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने कोरोना वायरस खतरे के बीच लोगों से घरों में ही रहने की अपील की है और इसके लिए उसने भारतीय भरोसेमंद बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा का उदाहरण दिया है। बीसीसीआइ ने ट्विटर पर पुजारा का एक फोटो पोस्ट किया है, जिसमें उसने लिखा है कि पुजारा परिवार की तरह आप भी अपने-अपने घरों में ही रहें। पुजारा ने इससे पहले कहा था कि लॉकडाउन के दौरान उनका आधा समय तो बेटी की देखभाल में ही गुजर जाता है।

हनुमा विहारी ● फाइल फोटो, प्रेट्र

ऑस्ट्रेलिया सीरीज की तैयारी पर नजर : विहारी

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोविड-19 महामारी के कारण घर पर रहने को मजबूर भारतीय क्रिकेटर हनुमा विहारी ने कहा कि वह इस समय का इस्तेमाल साल के अंत में होने वाले ऑस्ट्रेलियाई दौरे की तैयारी के लिए कर रहे हैं। विहारी पिछले न्यूजीलैंड दौरे पर भारतीय टीम का हिस्सा थे। उन्होंने कहा कि मैं इस समय का इस्तेमाल अपनी फिटनेस के अलावा काउंटी क्रिकेट और 2020 के अंत में होने वाले ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए कौशल निखारने में कर रहा हूं। हालांकि अभी खेलों के शुरू होने को लेकर काफी अनिश्चितता है लेकिन मध्य क्रम के बल्लेबाज ने कहा कि वह उम्मीद लगाए हैं। उन्होंने कहा कि मानसिक रूप से मैं खुद को सकारात्मक और व्यस्त रखने की भरसक कोशिश कर रहा हूं। मेरे लिए चुनौती होगी क्योंकि अगले तीन-चार महीने कोई क्रिकेट नहीं होगा। मैंने इंग्लिश काउंटी चैंपियनशिप में एक टीम के साथ करार किया है जिसमें मेरा अनुबंध अगस्त के अंत से शुरू होगा। मैं उम्मीद लगाए हूं। हालांकि इस ब्रेक के दौरान वह अपनी शादी की पहली सालगिरह पत्नी के साथ मना पाएंगे जो व्यस्त क्रिकेट कैलेंडर की वजह से नहीं हो पाता। उन्होंने कहा कि इस ब्रेक की एक अच्छी चीज यह है कि मैं 19 मई को अपनी शादी की पहली सालगिरह पत्नी के साथ मना पाऊंगा।

23 जुलाई 2021 से शुरू हो सकते हैं टोक्यो ओलंपिक गेम्स

टोक्यो, एपी: टोक्यो ओलंपिक के आयोजनकर्ता 23 जुलाई 2021 से ओलंपिक कराने की तैयारी कर रहे हैं। आयोजन समिति के अध्यक्ष योशिरो मोरी ने कहा है कि ओलंपिक में ज्यादा बदलाव होने की संभावना नहीं है। गेम्स गर्मियों में हो सकते हैं। हम जून से लेकर सितंबर के बीच में विचार कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आइओसी) के अध्यक्ष थॉमस बाक ने मंगलवार को ही कहा था कि 2021 में यह गेम्स गर्मियों में हो सकते हैं। स्थगित हुए 2020 गेम्स 24 जुलाई से नौ अगस्त तक होने थे। मोरी ने कहा कि 2021 ओलंपिक की तिथियों पर फैसला इस सप्ताह ही हो सकता है। कोई भी अंतिम फैसला स्थानीय आयोजनकर्ता और आइओसी सहित स्पांसर, खेल फेडरेशन, ब्रॉडकास्टर के बीच बातचीत के बाद लिया जाएगा। दुनिया भर के एथलीट इस समय मुश्किल हैं। कुछ खिलाड़ियों को कोरोना की वजह से अपनी ट्रेनिंग रोकनी पड़ी, वहीं जो ट्रेनिंग कर सकते हैं उन्हें अंदाजा नहीं है कि कैसे सही समय पर फिटनेस पाई जा सके।

टोक्यो होटल्स पर पड़ा ओलंपिक स्थगित का असर: ओलंपिक स्थगित होने का बुरा असर टोक्यो के होटल और टूरिज्म इंडस्ट्री पर पड़ा है। कई ऑपरेटर्स की बुकिंग को भी नुकसान पहुंचा है, जो सोच रहे थे कि ओलंपिक से थोड़ा उन्हें राहत मिलेगी। टोक्यो होटल एंड रयोकांस एसोसिएशन के महासचिव शिगेमी सुडो ने कहा कि यह हमारे लिए बेहद ही बड़ा झटका है। पहले ही सदस्य होटल कम कमाई से परेशान थे क्योंकि कोरोना वायरस की वजह से टूरिज्म पूरी तरह से खत्म हो गया था। कई कमरों की बुकिंग रद हो चुकी है। ऐसे में हमारे लिए खाली कमरों को भरना मुश्किल साबित होगा, क्योंकि मौजूदा स्थिति में ग्राहक मिलना मुमकिन नहीं है।

आइओए ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया

नई दिल्ली : भारतीय ओलंपिक संघ (आइओए) ने रविवार को कोविड-19 महामारी से निपटने में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और मौजूदा परिस्थितियों में देशवासियों को घर में रहने पर जोर दिया। आइओए के महासचिव राजीव मेहता ने कहा, 'पिछले कुछ दिनों में हमें सुझाव मिले कि आइओए को भी कोरोना वायरस महामारी के कारण उत्पन्न हुए वैश्विक संकट के समय में मानवता के प्रति योगदान करना चाहिए। हम आश्वस्त करते हैं कि आइओए आगे आएगा और सरकार, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनीसेफ और संबंधित संस्थाओं द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार काम करेगा।'

कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ देगा एक करोड़ रुपये

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) ने रविवार को कहा कि वह कोविड-19 महामारी के खिलाफ देश की लड़ाई के लिए 50-50 लाख रुपये केंद्र सरकार और राज्य सरकार को दान में देगा। केएससीए के प्रवक्ता ने कहा, 'केएससीए बीसीसीआइ के जरिये प्रधानमंत्री के नागरिक सहायता और आपात स्थिति राहत कोष में 50 लाख रुपये और मुख्यमंत्री कर्नाटक सरकार राज्य राहत कोष में 50 लाख रुपये का योगदान करेगा।'

रहाणे ने भी 10 लाख देने का फैसला किया: भारतीय टेस्ट उप कप्तान अजिंक्य रहाणे ने महाराष्ट्र मुख्यमंत्री राहत कोष में 10 लाख रुपये का दान करने का फैसला किया है। रहाणे ने ट्वीट किया, 'इस मुश्किल समय में यह मेरी छोटी सी मदद है। आप सब घर में सुरक्षित रहें।'

इन्होंने भी दिया दान

- भारत की 16 वर्षीय क्रिकेटर ऋचा ने एक लाख रुपये दिए।
- बंगाल क्रिकेट संघ (कैब) ने कहा कि 66 कैब मैच पर्यवेक्षकों ने 1.5 लाख रुपये जबकि 82 स्कोरर ने अपने एक दिन का वेतन दिया जो मिलाकर 77420 रुपये है।
- एशियाई पैरा खेलों में दो बार के चैंपियन शरद कुमार ने प्रधानमंत्री राहत कोष में एक लाख रुपये दान में दिए।

स्मिथ की कप्तानी पर लगा प्रतिबंध समाप्त

सिडनी, एएफपी: पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान स्टीव स्मिथ अब अपनी राष्ट्रीय टीम की कप्तानी करने के लिए स्वतंत्र हैं क्योंकि उनकी कप्तानी पर लगा दो साल का प्रतिबंध रविवार को समाप्त हो गया।

स्मिथ की कप्तानी पर लगा यह प्रतिबंध ऐसे समय में समाप्त हुआ है जब कोरोना वायरस के कारण ना तो ऑस्ट्रेलिया में और ना ही पूरी दुनिया में कहीं भी क्रिकेट खेला जा रहा है। स्मिथ ने अपना पिछला मैच सिडनी के खाली क्रिकेट ग्राउंड पर न्यूजीलैंड के खिलाफ खेला था। तीन मैचों की यह सीरीज बाद में कोरोना वायरस के कारण रद कर दी गई थी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने 2018 में गेंद से छेड़छाड़ करने के मामले में स्मिथ और उनकी कप्तानी पर दो साल के लिए प्रतिबंध लगा दिया था।

निशानेबाज चिंकी की निगाहें ओलंपिक पदक पर

कभी एक कमरे के मकान में रहने वाली भारतीय निशानेबाज चिंकी यादव ने सोचा नहीं था पिस्टल शूटर बनेंगी। मध्य प्रदेश के भोपाल की निशानेबाज ने देश के लिए 25 मीटर पिस्टल वर्ग में ओलंपिक कोटा भी हासिल किया। हालांकि कोरोना के कारण ओलंपिक 2021 के लिए स्थगित हो गए, लेकिन चिंकी की निगाहें ओलंपिक पदक पर है। ओलंपिक की तैयारियों को लेकर **चिंकी यादव** से **कपीश दुबे** ने खास बातचीत की :

साक्षात्कार

● आपका सफर मुश्किलों भरा रहा है। कैसा लगता है जब पीछे मुड़कर देखती हैं?

-संघर्ष से मिली सफलता ज्यादा मीठी होती है। हम एक कमरे के मकान में रहते थे। हालांकि अब भी मकान बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन हालात सुधर चुके हैं। जब निशानेबाजी शुरू की थी तो इतने पैसे नहीं होते थे कि बंदूक की गोलियां खरीद सकूं। तब पिस्टल खरीदने की तो सोच भी नहीं सकती थी। अब मेरी खुद की पिस्टल है। अब प्रायोजक मिले हैं और देश के लिए ज्यादा से ज्यादा पदक जीतना चाहती हूं।

● आपने ओलंपिक कोटा हासिल किया, लेकिन क्या टीम में भी चुने जाने की उम्मीद है?

-मेरा ध्यान अपनी मेहनत पर होता है। मैंने 2019 एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप में जब देश के लिए ओलंपिक कोटा हासिल किया था तब भी अपने श्रेष्ठ प्रदर्शन का प्रयास कर रही थी। मैं चयन के बारे में नहीं सोचती हूं। ओलंपिक आगे बढ़ गए हैं तो अब टीम की चयन प्रक्रिया अगले साल होगी। इससे मुझे खुद को बेहतर बनाने का ज्यादा समय मिलेगा।

● कोरोना वायरस के डर से कई खिलाड़ी टोक्यो जाने में डर रहे थे। अब खेल स्थगित होने से क्या आपको भी राहत मिली?

-कोरोना का डर तो था। इस महामारी से दुनिया संघर्ष कर रही है। ओलंपिक अभी होते तो सभी के दिमाग में कोरोना का डर बना रहता।

चिंकी की अंतरराष्ट्रीय सफलताएं

स्वर्ण : व्यक्तिगत और टीम वर्ग में 13वीं एशियाई चैंपियनशिप (कुवैत, 2015)

स्वर्ण : अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी चैंपियनशिप (जर्मनी, 2015)

स्वर्ण (टीम) : आइएसएसएफ जूनियर विश्व कप (अजरबैजान, 2016)

रजत (टीम) : 25वीं मीटिंग ऑफ शूटिंग होप्स (चेक गणराज्य, 2015)

रजत (टीम) : 26वीं मीटिंग ऑफ शूटिंग होप्स (चेक गणराज्य, 2016)

कांस्य (टीम) : आइएसएसएफ जूनियर कप (जर्मनी, 2015)

कांस्य (टीम) : आइएसएसएफ जूनियर कप (जर्मनी, 2016)

कांस्य (टीम) : जूनियर विश्व चैंपियनशिप (जर्मनी, 2017)

लक्ष्मण की 281 रन की पारी मेरी पसंदीदा : चैपल

मेलबर्न : ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान इयान चैपल ने उम्दा स्पिन के सामने अपनी दो पसंदीदा पारियां चुनी हैं। इनमें से एक 2001 में कोलकाता में वीवीएस लक्ष्मण (281) की पारी शामिल है। ईडन गार्डेंस पर वीवीएस लक्ष्मण और राहुल द्रविड़ की पारियां तो आपको याद ही होंगी। इस जोड़ी ने ऑस्ट्रेलिया से जीत छीन ली थी। इस पारी में लक्ष्मण और द्रविड़ (180) ने रन बनाए थे। भारतीय टीम फॉलोऑन कर रही थी लेकिन उसके बावजूद उसने स्टीव वॉ की कंगारू टीम का विजय रथ रोका था।

चैपल ने कहा कि कोविड-19 महामारी के चलते किसी तरह का क्रिकेट नहीं हो रहा है। ऐसे में मैं खेल के उस हिस्से पर विचार कर सकता हूं जो मुझे काफी पसंद है, उम्दा स्पिन गेंदबाजी के खिलाफ बल्लेबाज द्वारा अपने कदमों का इस्तेमाल करना। दो पारियां जो मेरे दिमाग में आती हैं, एक भारत के वीवीएस लक्ष्मण की और दूसरी ऑस्ट्रेलिया के डग वॉल्टर्स की। लक्ष्मण और द्रविड़ ने 376 रनों की साझेदारी की भारतीय क्रिकेट की दशा बदलने वाली जीत दिलाई। चैपल लक्ष्मण की कलाइयों के मुरीद हो गए थे। उन्होंने कहा कि जिस तरह उन्होंने शेन वॉर्न के सामने बल्लेबाजी की वह कमाल था। लक्ष्मण की शानदार 281 रन की पारी को मैं स्पिन गेंदबाजी के खिलाफ खेली गई सर्वश्रेष्ठ पारी कहूंगा। सीरीज से बाद मैंने शेन वॉर्न से पूछा था कि उन्हें क्या लगता है, उन्होंने कैसी गेंदबाजी की। वॉर्न ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि मैंने इतनी खराब गेंदबाजी की। मैंने कहा कि बिलकुल तुमने नहीं की। मैंने वॉर्न से कहा कि अगर लक्ष्मण तीन कदम आगे निकलकर तुम्हें स्पिन के खिलाफ ऑन ड्राइव लगाए और अगली गेंद तुम ऊंची और थोड़ी छोटी फेंको और वह पीछे जाकर तुम्हारे खिलाफ कट कर दे तो यह खराब गेंदबाजी नहीं है, यह लाजवाब फुटवर्क है।

ऑस्ट्रेलिया के वॉल्टर्स को याद करते हुए चैपल ने कहा कि वॉल्टर्स ने एक सत्र में तीन बार शतक लगाया। इसका कोई पूरा रिकॉर्ड तो नहीं है लेकिन मुझे लगता है कि सिर्फ सर डॉन ब्रैडमैन ने इससे ज्यादा बार ऐसा किया है। चैपल ने कहा कि मैंने जितने खिलाड़ियों को देखा है उनमें वॉल्टर्स ऑफ स्पिन गेंदबाजी के खिलाफ सबसे शानदार बल्लेबाज थे। वह शानदार स्पिन गेंदबाजी के सामने सिर्फ टिके ही नहीं रहे बल्कि कई बार उन पर 21 भी साबित हुए।

काउंटी पूरी नहीं होती तो रद हो : कुक

लंदन : इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलिस्टेयर कुक ने कहा कि अगर कोरोना वायरस के कारण इंग्लिश काउंटी चैंपियनशिप का पूर्ण सत्र नहीं खेला जा सकता तो क्रिकेट प्रमुखों को इसको रद ही कर देना चाहिए। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने इस महामारी के चलते सभी घरेलू टूर्नामेंट को कम से कम 28 मई तक स्थगित कर दिया है।

काउंटी चैंपियनशिप को 12 अप्रैल से शुरू होना था और ईसीबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कहा था कि खेल की वित्तीय रूप से सबसे अहम प्रतियोगिताओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

कहा, किसी भी तरह का क्रिकेट खेलना है तो छह मैच की काउंटी नहीं होनी चाहिए

इससे टी-20 ब्लास्ट और 'द हंड्रेड' के शुरुआती सत्र के कार्यक्रम में बने रहने की संभावना है। पिछले सत्र में एसेक्स के साथ डिवीजन वन खिताब जीतने वाले कुक का मानना है कि संक्षिप्त सत्र से इसकी अहमियत कम हो जाएगी। उन्होंने कहा कि अगर हमें किसी भी तरह का क्रिकेट खेलना है तो उम्मीद करता हूं कि छह मैच की काउंटी चैंपियनशिप कराने की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए क्योंकि ऐसा कराने का कोई मतलब नहीं है।

एलिस्टेयर कुक। फाइल फोटो, एएफपी

कोलकाता में सेना के अस्पताल का डॉक्टर कोरोना से संक्रमित

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

बंगाल में वायरस से संक्रमित मरीजों की संख्या हुई 19

कोलकाता में सेना के कमांड अस्पताल में तैनात एक डॉक्टर के कोरोना से संक्रमित होने की रविवार को पुष्टि हुई। इसी के साथ बंगाल में कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़कर 19 हो गई है। राज्य में यह पहला मामला है जब कोई डॉक्टर कोरोना से संक्रमित मिला है, वह भी सेना अस्पताल के। उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि कोरोना से संक्रमित उक्त डॉक्टर ने 17 से 21 मार्च के बीच कमांड अस्पताल में काम भी किए हैं। यहां एनथियोलॉजिस्ट विभाग के एचओडी उक्त डॉक्टर हाल में दिल्ली से लौटे थे। शुरुआत में वायरल निमोनिया होने के संदेह में उनका इलाज शुरू किया गया। फिर उनके नमूने को परीक्षण के लिए भेजा गया था। रविवार को उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव मिली है।

हर मुमकिन कदम उठा रहा पूर्वी सेना कमान : कोरोना वायरस के संकट से निपटने व इससे बचाव के लिए पूर्वी सेना कमान भी हर मुमकिन कदम उठा रहा है। इसके लिए कोलकाता के फोर्ट विलियम स्थित पूर्वी कमान मुख्यालय में विशेष तैयारी किए जाने के साथ सभी यूनिटों में भी विशेष सतर्कता बरती जा रही है। कोरोना से बचने के लिए जवानों व उनके परिवारों को भी लगातार बताया जा रहा है। फोर्ट विलियम मुख्यालय सहित पूर्वी कमान के अंतर्गत सभी आर्मी स्टेशनों व यूनिटों के पूरे एरिया को विशेष वाहनों से लगातार सैनिटाइजेशन व संक्रामक रोगों से मुक्त करने के लिए रसायनों का छिड़काव का काम जारी है। कोलकाता में रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि फोर्ट विलियम मुख्यालय सहित अन्य कैंपों को पहले ही पूरी तरह सील कर दिया गया है। यहां बाहर से जो भी वाहन आदि आ रहे हैं उसे पूरी तरह सैनिटाइज किया जाता है। साथ ही जवानों व अधिकारी भी हाथ आदि धोते हैं। खाना खाने से लेकर काम करने के दौरान फिजिकल डिस्टेंटिंग (शारीरिक दूरी) का पूरा पालन किया जा रहा है।

कार्डिएक अरेस्ट से हुई थी हावड़ा में युवक की मौत

हावड़ा जिले में लॉकडाउन के दौरान बुधवार, 25 मार्च को दूध खरीदने गए एक शख्स की पुलिस की पिटाई से मौत की बात झूठी निकली है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार उक्त युवक की मौत पुलिस की पिटाई से नहीं, बल्कि क्रोनिक डायरिया और कार्डिएक अरेस्ट से हुई है।

इंदौर में अस्पताल से भागे तीन मरीज, दो कोरोना पॉजिटिव

नईदुनिया, इंदौर

मध्य प्रदेश के इंदौर में स्वास्थ्य विभाग और चिकित्सा शिक्षा विभाग की बड़ी लापरवाही सामने आई है। 24 घंटे में एमआरटीबी अस्पताल से तीन मरीज भाग चुके हैं। इनमें दो कोरोना पॉजिटिव हैं, जबकि एक में बीमारी की पुष्टि नहीं हुई। तीनों मरीजों में से एक (कोरोना पॉजिटिव) वापस आ गया, बाकी दो का पता नहीं चला है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रवीण जडिया ने बताया कि दो मरीज अस्पताल से भाग गए थे। इनमें से एक पॉजिटिव और एक संदिग्ध है। वहीं, कोरोना संक्रमितों की बढ़ती संख्या को देखते हुए इंदौर को अब टोटल लॉकडाउन कर दिया गया है। दिन में सुबह 8 से दोपहर 1 बजे तक सब्जी और किराना सामान लेने की छूट भी खत्म कर दी गई है। अब केवल दवा दुकानें ही खुली रह पाएंगी। कलेक्टर मनीष सिंह ने कहा कि आठ-दस दिन नहीं संभले तो शहर के हालात काबू से बाहर हो जाएंगे। कलेक्टर ने कहा कि घरों में ज्यादा से ज्यादा आलू-प्याज रखें। हरी सब्जियों के लिए भटककर परेशान न हों, हरी सब्जियों के जरिए घर में वायरस आ सकता है।

शहडोल जिले के धनपुरी निवासी 35 वर्षीय महिला की जबलपुर में शनिवार को मौत हो गई। रविवार को आई जांच में महिला की जांच रिपोर्ट नेगेटिव आई है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च इन ट्राइबल हेल्थ, जबलपुर की रिपोर्ट में पता चला कि महिला की मौत इन्फ्लूएंजा-ए से हुई है। इंदौर की कुछ बस्तियों में कोरोना के संक्रमित केस मिले हैं। उनकी ट्रैवल हिस्ट्री भी नहीं मिल रही है। ऐसे में अस्पताल भी संक्रमण की लिंक पता नहीं कर पा रहा है। जिन इलाकों में केस सामने आए हैं, वहां कई लोग उमराह की यात्रा से लौटे हैं।

ईरान में फंसे 275 भारतीयों को जोधपुर लाया गया

जागरण संवाददाता, जयपुर

ईरान में फंसे 275 भारतीय नागरिकों को रविवार सुबह स्पाइस जेट के दो विमानों से जोधपुर लाया गया। यहां चिकित्सकों ने इन सभी की स्क्रीनिंग की। इन्हें जोधपुर के सैन्य क्षेत्रों में सेना द्वारा तैयार किए गए वेलनेस सेंटर में 14 दिन तक रखा जाएगा। चार दिन पूर्व ईरान से 277 भारतीय नागरिकों को भी जोधपुर लाया गया था। इस तरह अब शहर में सेना के वेलनेस सेंटर में भारतीय नागरिकों की संख्या बढ़कर 552 हो गई है।

जैसलमेर में 484 भारतीय नागरिकों को पहले से ही रखा जा रहा है। सेना के अधिकारियों का कहना है कि यहां आने वाले भारतीय नागरिकों में से अभी तक कोई भी कोरोना पॉजिटिव नहीं है। इसके बावजूद एहतियात के तौर पर सभी की नियमित जांच की जाएगी। इन सभी को 14 दिन यहां क्वारंटाइन में रखा जाएगा। ईरान कोरोना से सबसे अधिक प्रभावित देशों में से एक है। धीरे-धीरे वहां काम करने वाले करीब छह हजार भारतीय नागरिकों को वापस लाया जा रहा है।

कोरोना वायरस से जूझ रहे ईरान से एयरलिफ्ट कर स्वदेश लाए गए नागरिकों को भारतीय सेना के क्वारंटाइन सेंटर में भेजने से पहले जोधपुर हवाई अड्डे पर थर्मल स्क्रीनिंग की गई। प्रेट्र

कर्नाटक पुलिस ने एंबुलेंस को घुसने से रोका, 70 वर्षीय महिला की मौत

कासरगोड, प्रेट्र : कोरोना को रोकने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन के बीच केरल निवासी एक परिवार ने कर्नाटक पुलिस पर अमानवीयता का आरोप लगाया है। आरोप है कि 70 वर्षीय बीमार महिला को इलाज के लिए मेंगलुरु ले जा रही एंबुलेंस को राज्य की सीमा पर रोक दिया गया। अगले दिन उसकी मौत हो गई।

महिला कर्नाटक की ही रहने वाली थी और अपने बेटे के साथ केरल के कासरगोड में रह रही थी। जब उसकी हालत गंभीर हुई तो परिजन एंबुलेंस से शनिवार को उसे मेंगलुरु स्थित अस्पताल ले जाने लगे। आरोप है कि कर्नाटक पुलिस ने सीमा पर ही लॉकडाउन का हवाला देते हुए एंबुलेंस को रोक दिया। इससे महिला को प्राथमिक चिकित्सा केंद्र ले जाना पड़ा, जहां से प्रारंभिक इलाज के बाद घर भेज दिया गया। रविवार की सुबह महिला की मौत हो गई। इस संबंध में कर्नाटक पुलिस के किसी भी अधिकारी ने कोई टिप्पणी नहीं की है। दो दिनों पहले भी गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति को इलाज के लिए मेंगलुरु नहीं ले जाने दिया गया था और उसकी मौत हो गई थी। बिहारवासी एक महिला का एंबुलेंस में ही प्रसव हो गया था।

12 किलोमीटर रास्ता साफ कर लिया गया है गौरीकुंड से केदारनाथ तक। इन दोनों के बीच दूरी 16 किलोमीटर है। उत्तराखंड में प्रशासन ने साफ मौसम में केदारनाथ पैदल मार्ग से बर्फ हटाने का काम तेज कर दिया है।

संकट में पड़ा जीवन तो खिलने लगे मुरझाए रिश्ते

जागरण विशेष

भगवंत सिंह, चंदौसी

- घर में रहते हुए रिश्तेदारों से बात कर जान रहे हालचाल
- वर्षों से चुप रहे पड़ोसियों में भी शुरू हो गई बातचीत

कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी जरूर बढ़ रही है लेकिन, दिलों की दूरियां घटती जा रही हैं। बंदिशों से मुरझाए रिश्ते फिर से खिलने लगे हैं। बरसों से जिनसे बात नहीं हुई, उन पुराने दोस्तों, भाइयों और रिश्तेदारों की कॉल आ रही है। नाराज रिश्तेदारों को कोरोना के खतरे ने फिर से जोड़ दिया। वर्षों से चुप रहे पड़ोसियों में भी बातचीत शुरू हो गई।

उत्तर प्रदेश के संभल स्थित चंदौसी नगर के कागजी मोहल्ला निवासी दीपक अरोरा का दीपावली पर बच्चों को लेकर पड़ोसी महेश कुमार से विवाद हो गया था। बात गाली-गलौज तक पहुंच गई थी। महेश बताते हैं कि तब से लेकर अब तक बातचीत कर दूरियों को कम करने का समय ही नहीं मिला। दीपावली के बाद एक बार बात हुई थी। लेकिन अब लगातार बात हो रही है। एक मीटर की दूरी बनाकर उनसे मुलाकात भी हुई है। उन्होंने बताया कि अब प्रत्येक दिन बात हो रही है। किसी भी सामान की जरूरत पड़ने पर हम एक-दूसरे को मदद भी कर रहे हैं।

कुढफतेहगढ़ क्षेत्र में रहने वाले पड़ोसी राम सिंह का जनवरी 2019 में गांव के ही कुंवरपाल से बाइक की टक्कर लगने के बाद विवाद हो गया था। मारपीट तक हो गई थी। पिछले पांच दिनों में बातचीत होनी लगी है।

राम सिंह बताते हैं कि हमने सोचा कि अब पता नहीं क्या होगा। इससे अच्छा है कि हम जीते-जीते किसी से दुश्मनी न रखें, इसलिए कुंवरपाल के पास जाकर बात की। कुंवरपाल का कहना है कि अब बातचीत शुरू हो गई है। अब मन में कोई मैल नहीं है। नगर के मुकेश, भसीन, महेश कुमार, इमरान, संजू अरोरा, गुरविंद्र सिंह, यूनुस आदि का कहना है कि रिश्तेदारों का एक वर्ष या छह माह में फोन आता था। किसी बात पर नाराजगी चल रही थी। उनसे बातचीत की पहल हुई तो रिश्तों की दरारों को भूलकर अब सहयोग के लिए भी हाथ आगे बढ़ रहे हैं।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

उत्तर प्रदेश संभल जिले के चंदौसी के कागजी मुहल्ला में अपने परिवार के साथ बैठकर मोबाइल पर बात करते दीपक अरोरा। जागरण

लॉकडाउन के बाद पिता के पास आएगी विवाहित बेटी

नगर के ही एक व्यक्ति की बेटी ने अपनी मर्जी से तीन साल पहले एक युवक से विवाह कर लिया था। इससे नाराज होकर पिता बेटी से बात नहीं करते थे। 20 मार्च को पिता ने अपनी बेटी को फोन कर हाल जाना। तीन साल बाद पहली बार फोन पर बातचीत हुई तो दोनों अपने गम को बांटने लगे। बेटी के बिना पिता ने कैसा महसूस किया और बेटी को पिता की कब कब याद आई, इसमें करीब चालीस मिनट बीत गए। इसके बाद दामाद से भी बात की। घर आने के लिए आमंत्रण दिया। बेटी अपने पिता से मिलने के लिए लॉकडाउन खत्म होने का इंतजार कर रही है।

बेटे की तेरहवीं पर भोज नहीं मास्क बांटे

जागरण संवाददाता, कुल्लू : पर्यावरणविद् एवं हिमालयन नीति अभियान के संयोजक गुमान सिंह और उनकी समाजसेविका पत्नी हरा देवी ने समाज के सामने मिसाल पेश की है। बंजार के दंपती ने बेटे की तेरहवीं पर भोज नहीं दिया बल्कि मास्क बांटकर लोगों को कोरोना को हराने के लिए जागरूक किया। दंपती ने रविवार को बंजार व साथ लगते इलाकों में करीब दो हजार मास्क बांटे।

रविवार को इनके बेटे रॉबिन की तेरहवीं थी, लेकिन यह दंपती पूरे बाजार में जरूरतमंदों को मास्क बांट रहा था। गुमान सिंह ने बताया कि कोरोना वायरस के खिलाफ पूरा देश लड़ रहा है। इसलिए उन्होंने यह निर्णय लिया कि बेटे की तेरहवीं पर वह जरूरतमंदों की सहायता करेंगे। 13 दिन पूर्व बेटे के आकस्मिक निधन के कारण पूरा परिवार शोक में डूबा हुआ था। इसके बावजूद उन्होंने समाज सेवा करने का रास्ता चुना। ऐसे में रविवार को उन्होंने करीब दो हजार मास्क बांटे। इसमें उनकी संस्था के लोगों व सहारा संस्था के सदस्यों ने भी सहयोग किया। ये मास्क स्थानीय महिलाओं द्वारा तैयार किए गए थे। मास्क बनाने के लिए संस्थाओं की महिलाओं को कहा गया था।

तेंदूपत्ता को मास्क बना कर रहे कोरोना का सामना

बस्तर संभाग के अबूझमाड़ जंगल के गांव में तेंदूपत्ता का मास्क लगाए आदिवासी युवक। नईदुनिया

अनिल मिश्रा, जगदलपुर

क्या कहते हैं डॉक्टर, कितना कारगर है यह मास्क, किस तरह एकजुट हो कोरोना से लड़ रहे आदिवासी, अबूझमाड़ के जंगल से एक रिपोर्ट

- निकाला अनोखा उपाय, बस्तर के इस जंगल से आई तस्वीर हो रही वायरल

कोरोना वायरस से पूरी दुनिया हलकान है। भारत में इसके मामले मिलने के बाद छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में तो मेडिकल दुकानों से मास्क गायब ही हो गए हैं। जहां मिल रहे हैं वहां भी दोगुने चौगुने दाम वसूलने की शिकायत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 दिन का लॉक डाउन घोषित किया हुआ है। प्रशासन सख्त है। ऐसे में अबूझमाड़ के जंगलों में रहने वाले आदिवासियों की समझदारी भी दिख रही है।

संसाधन हैं नहीं तो आदिवासियों ने तेंदूपत्ता को ही मास्क बना लिया है। आकाबेड़ा इलाके से अनोखी तस्वीर आई है जो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल भी हो रही है। इस तस्वीर में संरक्षित अबूझमाड़िया जनजाति के पुरुष व महिलाएं तेंदूपत्ता से बने मास्क पहने दिखाई दे रहे हैं। इस तस्वीर के वायरल होने के बाद अन्य दूरस्थ गांवों के आदिवासी भी तेंदूपत्ता का मास्क के रूप में प्रयोग करने लगे हैं।

अबूझमाड़िया जनजाति के लोग आज भी आदिम युग में जी रहे हैं। इनमें से अधिकांश निरक्षर हैं, मगर उनमें कोरोना वायरस को लेकर जो जागरूकता दिख रही वह पढ़े-लिखे शहरी तबके के लिए प्रेरणादायी है।

विशेषज्ञों का मानना है कि खांसी या छींक के साथ जो महीन बूंदें बाहर आती हैं उनके माध्यम से कोरोना वायरस दूसरे को संक्रमित करता है। डॉक्टर मास्क पहनने की सलाह इसीलिए दे रहे हैं कि अगर किसी को कोरोना का संक्रमण है तो वह दूसरे तक न पहुंचने पाए।

माड़ के लोग बाहर निकलने की मनाही और घर में रहने के नियमों का भी बड़ी मुस्तैदी से पालन कर रहे हैं। उन्हें मालूम है कि सरकार का लॉक डाउन उनकी भलाई के लिए है। वे खुद एक दूसरे को रोज इस बारे में जागरूक कर रहे हैं। उन्हें पता है कि अगर उनके बीच कोरोना का संक्रमण फैला तो वह घातक होगा। ऐसे इलाके में जहां नमक के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता हो वहां स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सभी समझ सकते हैं। तब अबूझमाड़ियों की यह सजगता और जागरूकता काबिले तारीफ है।

चिकित्सक की राय

जगदलपुर के डॉक्टर श्रेयांस वर्धन जैन (एमडी मेडिसिन) ने कहा कि पत्तों का मास्क छींकने, खांसने से होने वाले संक्रमण को रोक तो सकता है पर इसका खतरा भी है। मास्क में बहुत सूक्ष्म छिद्र होते हैं जिससे हवा पास होती है। पत्तों के बीच से हवा पास नहीं होगी तो कार्बन मुंह के पास जमा होता रहेगा। इसे बार-बार साफ करना पड़ेगा। माड़िया रोज पुराना मास्क जलाकर नया मास्क बना रहे यह ठीक है। कम से कम संक्रमण फैलाने से तो बच रहे हैं। सरकार को उनके लिए उचित मास्क की व्यवस्था करनी चाहिए।

गोंडी, हल्बी और छत्तीसगढ़िया में कोरोना के गानों की बहार

आदिवासियों को कारोना से जागरूक करने के लिए गीत में बताया जा रहा है कि बंदूक और उग्रवाद से भी गहरा है कोरोना का है कहर। कई लोकगायकों ने गोंडी, हल्बी, सरगुजिया और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में कोरोना को लेकर गीत बनाए हैं। गीतों को सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है। इसके साथ ही कोरोना के लक्षण से लेकर बचाव की जानकारी को लेकर क्षेत्रीय भाषा में तैयार वीडियो को भी जनता के बीच भेजा जा रहा है।

बॉटलिंग प्लांट्स को सैनिटाइजर बनाने की अनुमति

कोरोना का असर ▸ सिर्फ एक आवेदन पर 24 घंटे के भीतर इथेनॉल का लाइसेंस दे रहा है उत्पाद विभाग

जागरण संवाददाता, रांची

झारखंड में शराब बनाने वाले सभी बॉटलिंग प्लांट और एक मात्र अंकुर बायोकेम डिस्टिलरी प्लांट को उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग ने सैनिटाइजर बनाने की अनुमति दे दी है। इन ईकाइयों के पास सैनिटाइजर बनाने के सभी उपकरण होने के कारण यह स्वीकृति मिली है। इससे इतर अगर किसी जिले के सिविल सर्जन किसी संस्था के माध्यम से सैनिटाइजर बनाना चाहें तो उन्हें डीसी के माध्यम से उत्पाद विभाग से हाथोंहाथ स्वीकृति मिल जाएगी। इस प्रक्रिया के बाद किसी भी बॉटलिंग प्लांट या डिस्टिलरी प्लांट से 1000 लीटर तक इथेनॉल उन्हें मिल जाएगा। उत्पाद विभाग से मिली जानकारी के अनुसार राज्य में 14 ईकाइयों से हजारों लीटर सैनिटाइजर बनाए जा रहे हैं। इतने अधिक सैनिटाइजर बन जाएंगे कि जेलों में सैनिटाइजर बनाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। अकेले अंकुर बायोकेम डिस्टिलरी प्लांट के पास यह क्षमता है कि वह एक दिन में 20 हजार लीटर सैनिटाइजर बना सकता है।

क्या है एमएंडटीपी एक्ट : शराब बनाने में इथाइल अल्कोहल यानी इथेनॉल का इस्तेमाल होता है। इथेनॉल के इस्तेमाल के लिए दो तरह का लाइसेंस लेना होता है। एक ड्रग एक्ट में ड्रग लाइसेंस व दूसरा मेडिसीन एंड ट्रोलिंग प्रीप्रेशन एक्ट यानी एमएंडटीपी एक्ट। एमएंडटीपी एक्ट के तहत ही उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग लाइसेंस देता है, जिसे एल-वन लाइसेंस कहते हैं। इस लाइसेंस को लेने वाला इथाइल अल्होकल लाकर शराब अथवा दवा बना सकता है। यह लाइसेंस अभी उसे ही मिला है, जिसके पास स्टोरेज की क्षमता है। अब कागजी प्रक्रिया को आसान कर दिया गया है।

अब वायरस से बचाएगा प्राकृतिक सैनिटाइजर

शारदा आनंद गौतम, पालमपुर

- आइएचबीटी पालमपुर ने रिकॉर्ड समय में बाजार में उतारा सैनिटाइजर
- रोजाना 150 से 300 लीटर उत्पादन, मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष को भेजा

कोरोना से अब प्राकृतिक सैनिटाइजर लोगों को बचाएगा। हिमाचल प्रदेश के पालमपुर स्थित हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आइएचबीटी) की तकनीकी सहयोग से एबी साइंटिफिक सॉल्यूशंस फर्म ने इसे रिकॉर्ड समय में बाजार में उतारा है। फर्म रोजाना 150 से 300 लीटर उत्पादन कर हिमाचल और अन्य राज्यों में भेज रही है।

शनिवार को संस्थान प्रबंधन की तरफ से विशेष सचिव राजस्व एवं आपदा प्रबंधन डीसी राणा ने इसे मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर और विधानसभा अध्यक्ष विपिन परमार को भी भेजा। इस सैनिटाइजर को पालमपुर अस्पताल, एसडीएम व डीएसपी पालमपुर के कार्यालयों में भी मुहैया करवा दिया है।

100 एमएल की कीमत 50 रुपये : 100 एमएल की कीमत 50 रुपये है। यह 100 एमएल, 500 एमएल और पांच लीटर की पैकिंग में बाजार में उपलब्ध है।

कांगड़ा चाय व लैमन ग्रास के तेल से बना उत्पाद : एल्कोहल के साथ इसमें कांगड़ा चाय का घटक, प्राकृतिक सुगंधित तेल, लैमन ग्रास तेल को मिलाया जाता है। यह उत्पाद पैराबेंस, ट्राइक्लोसन, फथलेट्स और सिंथेटिक सुगंध से मुक्त है।

संस्थान ने पालमपुर के एक स्थानीय फर्म को तकनीक हस्तांतरित की थी। अब इसका उत्पादन कर इसे अन्य राज्यों को भी भेजा जा रहा है।
-डॉ. संजय कुमार, निदेशक, आइएचबीटी पालमपुर

आइएचबीटी के विशेषज्ञों की देखरेख में इसे तैयार किया है। बाजार में बहुत मांग है। 16 मार्च को संस्थान के साथ तकनीक को लेकर समझौता हुआ था।
-अनूप सूद, एबी सांइटिफिक सॉल्यूशंस पालमपुर

आइएचबीटी और एबी साइंटिफिक सॉल्यूशंस ने तैयार किया सैनिटाइजर। जागरण

जरूरी सामान की आपूर्ति के लिए रेलवे ने बहाल की पार्सल वैन सेवा

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना वायरस के कारण देशभर में लागू लॉकडाउन को देखते हुए रेलवे ने बाजारों तक आवश्यक सामान की निर्बाध आपूर्ति के लिए पार्सल वैन सेवा को बहाल करने का फैसला किया है। इससे दूध, मछली, सब्जी, अनाज व दवा आदि रोजमर्रा की चीजों की आपूर्ति बेहतर हो सकेगी। साथ ही यह फैसला ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए वरदान साबित होगा। ये कंपनियां अपने सामान को भेज और मंगा सकेंगी।

अधिकारियों ने रविवार को बताया कि आठ विशेष पार्सल ट्रेनों का संचालन शुरू हो गया है और 20 अन्य का संचालन शीघ्र शुरू किया जाएगा। इसके लिए नई दिल्ली-गुवाहाटी, नई दिल्ली-मुंबई, नई दिल्ली-कल्याण, नई दिल्ली-हावड़ा, चंडीगढ़-जयपुर और मोगा-छंगसरी मार्गों को चिह्नित किया गया है। उन्होंने कहा कि माल उतारने-चढ़ाने के काम से जुड़े मजदूर लॉकडाउन की वजह से अपने गांव लौट गए हैं। इससे स्थानीय बाजारों में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में कमी हो गई है। इसी वजह से पार्सल वैन सेवा को बहाल करना जरूरी है।

नक्सलियों के गढ़ में पुलिस भर रही भूखे ग्रामीणों का पेट

राज्य ब्यूरो, रांची

- झारखंड में संवेदनशील पिकेट व थानों में शाम पांच बजे तक चल रही सामुदायिक रसोई

कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए पूरे देश में जारी लॉकडाउन के बीच पुलिस कड़ी चुनौती झेल रही है। चुनौतियों से निपटते हुए झारखंड पुलिस पूरे राज्य के थाना, ओपी, पिकेट में शुरू सामुदायिक रसोई से आम लोगों को राहत पहुंचाने का भी काम कर रही है। शहर से लेकर गांव तक पुलिस ने इसे अभियान के रूप में लिया है। घोर नक्सल प्रभावित क्षेत्र में पुलिस लोगों को भोजन-पानी देकर अपना बना रही है। पुलिस के जवान यहां भोजन की थाल लेकर भूखे ग्रामीणों के बीच घूम रहे हैं और उन्हें खाला खिला रहे हैं।

राज्य में घोर नक्सल प्रभावित इलाकों में करीब 70 पुलिस पिकेट व थाने हैं, जहां सामुदायिक रसोई शुरू कर दी गई है। कुछ जगहों पर सुरक्षा के ख्याल से थाना-ओपी व पिकेट से कुछ दूरी पर सामुदायिक रसोई की व्यवस्था की गई है। कोई भी व्यक्ति, कोई भी परिवार भूखा न रहे, इसका ख्याल रखा जा रहा है। गांव-गांव में यह संदेश पहुंच गया है कि राज्य सरकार की पहल पर पुलिस सुबह 11 बजे से शाम पांच बजे तक मुफ्त में भोजन करा रही है। जिन्हें भोजन करना है, वे वहां जाकर भोजन कर सकते हैं। जहां ग्रामीण पहुंचने में असमर्थ हैं, वहां तक जवान अपनी गाड़ी से भोजन लेकर पहुंच रहे हैं।

लॉकडाउन के दौरान कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे। इसी के तहत राज्य के सभी थाना-ओपी, पिकेट में सामुदायिक रसोई शुरू की गई है। नक्सल प्रभावित क्षेत्र में भी यह व्यवस्था पूरी संजीदगी व संवेदनशीलता से चल रही है। नक्सलियों के क्षेत्र में एहतियात भी बरती जा रही है, थाना, ओपी, पिकेट से कुछ दूरी पर सामुदायिक रसोई चल रही है।
-साकेत कुमार सिंह, आइजी (अभियान), झारखंड

त्राहिमाम के बीच भी पाक रच रहा आतंकी साजिशें

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- सुरक्षाबल चौकस, दे रहे हर हरकत का करारा जवाब
- नया संगठन खड़ा करने की फिराक में लश्कर, आतंकियों को कुछ सूझ नहीं रहा

कोरोना के संक्रमण से बचाव के लिए कश्मीर समेत पूरी दुनिया में सामान्य गतिविधियां ठप हैं पर पाकिस्तान अभी भी आतंकी साजिशें रचने में लगा है। सुरक्षा बलों की मुहिम और कोरोना के खतरे से खौफ में आए आतंकी संगठनों पर लगातार दबाव बढ़ा रहा है। पर उन्हें चिंता है कि बाहर निकले तो सुरक्षाबल कभी भी उनका शिकार कर सकते हैं। इसके साथ ही कोरोना का भूत भी उन्हें डरा रहा है। इस कारण वह उपस्थिति दिखाने के लिए छिटपुट वारदात के अलावा सिमटे हुए हैं। इसी बीच पाकिस्तानी एजेंसियों के दबाव में लश्कर नया संगठन खड़ा करने की फिराक में है। इन तमाम स्थितियों के प्रति सुरक्षाबल चौकस हैं और आतंकियों को उनके बिल से खोजकर या तो ढेर कर रहे हैं या फिर उन्हें हिरासत में लिया जा रहा है।

कश्मीर घाटी में पहली जनवरी के बाद से 27 मार्च तक लगभग 28 आतंकी मारे जा चुके हैं। इस दौरान चार सुरक्षाकर्मी शहीद हुए हैं। इससे खिसियाए आतंकियों ने छह नागरिकों को निशाना बनाया। पहली फरवरी के बाद से 21 आतंकी मारे गए हैं। बीते 87 दिनों में वादी में सुरक्षाबलों ने करीब एक दर्जन आतंकी व दो दर्जन उनके ओवरग्राउंड वर्कर भी पकड़े गए हैं।

उधर नियंत्रण रेखा के पार से उन्हें लगातार वारदात बढ़ाने के लिए उकसाया जा रहा है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते दबाव के बीच लश्कर ने एक नया संगठन 'रजिस्टेंस फोर्स जेके' तैयार कर वारदात को अंजाम देने का फरमान सुनाया। पर उसकी साजिशें सुरक्षाबलों की मुस्तैदी के आगे विफल हो गई और इससे जुड़ा मॉड्यूल ध्वस्त कर छह आतंकियों को दबोच लिया। साथ ही हथियारों के एक बड़े जखीरे को भी बरामद किया है।

ऐसी तमाम साजिशों को विफल बनाने के लिए सुरक्षाबलों की मुहिम जारी है। दक्षिण कश्मीर के साथ उत्तरी कश्मीर और श्रीनगर के विभिन्न हिस्सों में आतंकियों के संभावित ठिकानों पर औचक छापेमारी की जा रही है।

कश्मीर में आतंकरोधी अभियानों में उल्लेखनीय भूमिका निभा चुके एसएसपी इम्तियाज मीर ने कहा कि आतंकियों और उनके आकाओं का मकसद यहां हालात बिगाड़ना और लोगों में दहशत पैदा करना होता है। उन्हें लोगों की परेशानियों से कोई मतलब नहीं। उन्हें जिस तरह से उनके आका कहेंगे, वह उसी स्तर पर साजिशें रचते हैं। जनवरी से आतंकी गतिविधियों और घुसपैठ की कोशिशें बढ़ जाती हैं। इसी स्तर पर हमारे अभियान भी तेज रहते हैं।

आइजीपी कश्मीर विजय कुमार के अनुसार आतंकी चूंकि दबाव में हैं। ऐसे में अब अपनी उपस्थिति का अहसास दिलाने के लिए निर्दोष लोगों को निशाना बना रहे हैं। कुलगाम में निर्दोष की हत्या यही साबित करती है। हम आतंकियों के सफाए में जुटे हैं। जल्द उनके ओवरग्राउंड नेटवर्क को पूरी तरह समाप्त कर देंगे। हमने अपने अभियानों को किसी भी तरह से स्थगित नहीं किया है। साथ ही नए लड़कों को आतंकी संगठनों में शामिल होने से बचाया है।

कोरोना संकट के बीच श्रीनगर में रविवार को मास्क और दस्ताने पहने मुश्तैदी से खड़ा जवान। एएनआइ

पहल

बदरीनाथ के लिए हक-हकूकधारी उपलब्ध करा रहे खाद्यान्न

शीतकालीन गद्दीस्थल नृसिंह मंदिर में भोग के लिए खाद्यान्न की आपूर्ति बनी चुनौती, देव पुजाई समिति आई आगे

जागरण संवाददाता, गोपेश्वर

लॉकडाउन के चलते श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के देवस्थानम बोर्ड के अधीन होने की प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हो पाई है। ऐसे में भगवान बदरीनाथ के शीतकालीन गद्दीस्थल नृसिंह मंदिर (जोशीमठ) में भगवान के भोग के लिए खाद्यान्न आपूर्ति करना चुनौती बन गया है। इस परेशानी को देखते हुए हक-हकूकधारियों की देव पुजाई समिति ने खाद्यान्न उपलब्ध कराया है। इससे फिलहाल भोग प्रसाद तैयार कर भगवान का भोग लगाया जा रहा है।

बदरीनाथ धाम के कपाट बंद होने पर भगवान नारायण की पूजा-अर्चना पांडुकेश्वर के योग-ध्यान बदरी मंदिर और जोशीमठ स्थित नृसिंह मंदिर में संपन्न होती है। परंपरा के अनुसार यहां नियमित पूजा-अर्चना के साथ ही भगवान नारायण, माता लक्ष्मी और भगवान नरसिंह को भोग लगाया जाता है। मंदिर में प्रतिदिन करीब 35 किलो चावल और डेढ़ किलो दाल से खिचड़ी व मीठे चावल का भोग तैयार होता है। यही भोग यहां रह रहे साधु-संतों और कर्मचारियों को प्रसाद के रूप में वितरित जाता है। भोग तैयार करने वाले हक-हकूकधारियों को दस्तूर (मेहनताना) के रूप में अनाज दिया जाता है।

अब देवस्थानम बोर्ड के अस्तित्व में आने के बाद इन मंदिरों की व्यवस्था बोर्ड को सौंप दी गई है। लेकिन, बोर्ड की ओर से अभी भोग प्रसाद के लिए खाद्यान्न की खरीद नहीं की गई है। ऐसे में बीते तीन दिन से भगवान बदरी विशाल, भगवान नृसिंह व नव दुर्गा का भोग स्थानीय लोगों की देव पुजाई समिति की ओर से दिया जा रहा है। समिति ने देव भोग के लिए खाद्यान्न व्यवस्था सुचारु रखने का जिम्मा लिया है।

मंदिर के हक-हकूकधारी व भोग तैयार करने वाले बड़वा कांति प्रसाद डिमरी का कहना है कि भगवान के भोग के लिए फिलहाल देव पुजाई समिति पर्याप्त खाद्यान्न उपलब्ध करा रही है। बदरीनाथ धाम के धर्माधिकारी भुवन चंद्र उनियाल का कहना है कि मंदिर की प्रशासनिक व्यवस्थाओं में हुए फेरबदल के बाद देवस्थानम बोर्ड को सक्रिय करने की प्रक्रिया चल रही है। भगवान के भोग के लिए हो रही खाद्यान्न की कमी के बारे में मंदिर भंडार समिति की ओर से उन्हें जानकारी दी गई थी। फिलहाल देव पुजाई समिति की ओर बीते तीन दिनों से खाद्यान्न की आपूर्ति की जा रही है। इस संबंध में प्रशासन से भी वार्ता की गई है।

बदरीनाथ मंदिर में हर दिन लगभग 35 किलो चावल से भोग तैयार होता है। फाइल

पाक सेना ने पुंछ में की गोलाबारी, कोई नुकसान नहीं

जागरण संवाददाता, पुंछ

पाकिस्तानी सेना ने रविवार को जम्मू संभाग के पुंछ जिले के शाहपुर किरनी सेक्टर में गोलाबारी की। गोलाबारी से किसी प्रकार का नुकसान नहीं हुआ है। पाक सेना ने दोपहर बाद करीब 3:30 बजे अग्रिम चौकियों पर पहले हल्के हथियारों से गोलाबारी की। थोड़ी देर बाद रिहायशी इलाकों को निशाना बनाते हुए मोर्टार दागने शुरू कर दिए। भारतीय सेना ने भी मुंहतोड़ जवाब दिया।

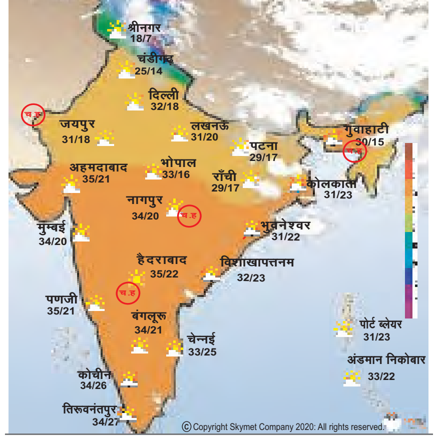

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में आंशिक बादलों के साथ मौसम शुष्क रहेगा। दिन के तापमान में वृद्धि होगी। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में एक-दो स्थानों पर गरज के साथ वर्षा होगी। दिन के तापमान में वर्षा में कमी के कारण वृद्धि होगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	35/21/आंबा	अहमदाबाद	39/16/व
कोलकाता	33/21/आंबा	बड़ौदा	38/16/सा
चेन्नई	34/26/व	नागपुर	35/20/व
हैदराबाद	35/23/आंबा	इन्दौर	34/17/व
बंगलूरू	34/22/आंबा	रांची	30/16/व
त्रिवेन्द्रम	34/26/आंबा	पटना	32/17/व
गुवाहाटी	34/21/आंबा	जमशेदपुर	32/17/व
गंगटोक	15/08/आंबा	पुणे	35/18/व

सत्यजीत रे को मानद ऑस्कर से नवाजा गया

आज ही 1992 को बेहतरीन फिल्म निर्देशकों में शुमार सत्यजीत रे को ऑस्कर लाइफ टाइम अचीवमेंट मानद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रे को कई बड़े पुरस्कार मिले, जिनमें भारत रत्न भी शामिल हैं। उनकी प्रमुख फिल्मों में पाथेर पांचाली, अपूर संसार प्रमुख हैं।

अमेरिका ने रूस से अलास्का को खरीदा

आज ही के दिन 1867 में अमेरिका ने रूस से अलास्का को खरीदा। इसके लिए अमेरिका ने रूस को 72 लाख डॉलर चुकाए थे। इसके बाद 15 .18 लाख वर्ग किमी क्षेत्र अमेरिका के क्षेत्रफल में जुड़ गया। औपचारिक हस्तांतरण 18 अक्टूबर 1867 को हुआ।

जीवन के बाद विंसेंट वान गॉग को मिला सम्मान

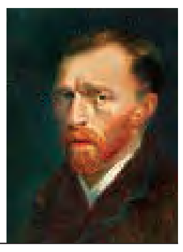

आज ही 1853 में महान चित्रकार विंसेंट वान गॉग का जन्म नीदरलैंड के गांव जुर्डेट में हुआ। शुरू में कुछ जगह नौकरी की। बेल्जियम के बोरीनाज में खान मजदूरों के लिए मिशनरी का काम किया। यहीं चित्रकार की राह तैयार हुई। उनकी कलाकृति सनफ्लॉवर विश्व की सबसे प्रसिद्ध और महंगी कलाकृतियों में शुमार है। 2100 से ज्यादा कलाकृतियां बनाईं। जिनमें से करीब साढ़े आठ सौ तैल चित्र हैं। आधुनिक कला के संस्थापकों में से एक माना जाता है। 29 जुलाई 1890 को खुद को गोली मार कर आत्महत्या कर ली। दुनिया ने उनकी प्रतिभा को मृत्यु के बाद समझा।

कोरोना का वायरस समय के साथ बदल सकता है प्रकृति

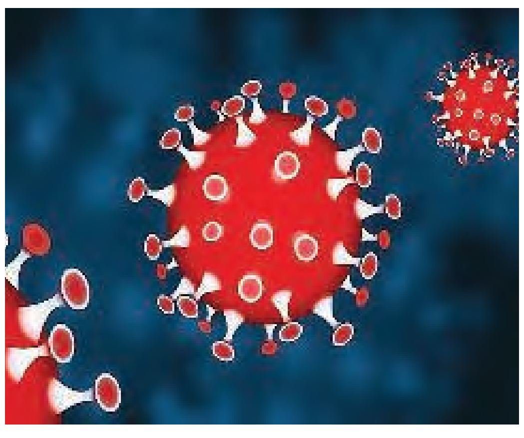

कोरोना वायरस के रोगियों की संख्या देश में जिस गति से बढ़ रही है, वह बाकी देशों की अपेक्षा नियंत्रित कही जा सकती है। रविवार दोपहर तक देश में कोरोना ग्रसित रोगियों की कुल संख्या 975 के पार पहुंच गई। अभी तक के नए आंकड़ों में 86 रोगी बीमारी से ठीक हुए हैं। वहीं, दूसरी ओर डब्ल्यूएचओ समेत अन्य विशेषज्ञ ठीक हो रहे लोगों में दोबारा संक्रमण होने से इंकार भी नहीं कर रहे हैं। हालांकि डब्ल्यूएचओ ने कोविड-19 के संक्रमित हुए अधिकतर लोगों के दोबारा इसकी चपेट में आने पर ठीक होने की संभावना और इसका असर कम रहने की आशंका जताई है।

शरीर करता है संरक्षण

कोविड-19 को लेकर चीन के बीजिंग स्थित चाइना-जापान मैत्री अस्पताल के निमोनिया रोकथाम व उपचार विभाग के निदेशक ली किन्गयुआन ने चीन में कोविड पॉजिटिव कई केस में पाया कि कई संक्रमित व्यक्तियों के शरीर ने इससे लड़ने के लिए एंटीबॉडी विकसित की। लेकिन, इस बात की पुष्टि नहीं है कि यह संरक्षण कितने समय तक व्यक्ति के शरीर में रहता है। कुछ विशेष परिस्थितियों में जैसे बीमार व्यक्ति व अन्य कारणों में यह क्षणिक प्रभावी रही।

पुन: संक्रमित होने का खतरा

अमेरिका स्थित रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीडीसी) का अब तक का अध्ययन बताता है कि कोविड-19 के प्रति इंसानी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को लेकर कोई एक मत नहीं है। एमईआरएस-कोव संक्रमण वाले रोगियों के केस में पाया गया था कि एक बार रोगियों के रोग मुक्त होने के बाद जल्द उनके बीमार पड़ने की आशंका नहीं थी, लेकिन कोविड-19 के केस में इस तरह की प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी या नहीं, यह स्पष्ट नहीं।

खुद ही बदल सकता है प्रकृति

ह्यूस्टन में टेक्सास यूर्निवर्सिटी के पीडियाट्रिक (बाल रोग) मेडिकल स्कूल में सहायक प्रोफेसर डॉ. पीटर जंग का मानना है जैसे ही फ्लू के संक्रमण से व्यक्ति में दिखने वाले लक्षण और वायरस की प्रकृति में बदलाव हुआ वैसे ही कोविड-19 का वायरस भी खुद में बदलाव ला सकता है। ऐसे में वायरस की बदलती प्रकृति शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करते हुए उसे अतिसंवेदनशील बना सकती है, जिससे बीमार होने का खतरा बढ़ सकता है।

पुराने कोरोना से बदला हुआ स्वरूप

पेन ग्लोबल मेडिसिन के चिकित्सा निदेशक स्टीफन ग्लुकमैन के अनुसार एक बार रोग होने के बाद अधिकतर व्यक्तियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। लेकिन, कोरोना के मामले में अभी तक स्पष्ट न होने से स्थिति उलट है। कोरोना वायरस नया नहीं है। लंबे समय से कई प्रजातियों के आसपास कोरोना रहे हैं। इसलिए कोरोना वायरस की प्रकृति और उससे बचने के जो उपाय हैं वह सब पर्याप्त होने के बाद भी संपूर्ण नहीं है। लेकिन, इस बार कोरोना के बदलते स्वरूप से उसकी प्रकृति को लेकर कोई एकमत नहीं है।

(स्रोत : इंडिपेंडेंट)

इधर-उधर की

कोरोना से लड़ने का हौसला दे रहा सिंगिंग मैन

लंदन, एजेंसी : कोरोना से लड़ने के लिए बहुत से लोग अलग-अलग तरीकों के जरिये हौसला दे रहे हैं। वे अपने साथ दूसरे लोगों में भी उम्मीद जगा रहे हैं। ऐसे ही एक शख्स हैं ब्रिटेन के बर्मिंघम में रहने वाले आर्थर कुक। कुक को वहां के लोगों ने सिंगिंग मैन का खिताब दिया है। उनकी उम्र 92 साल है और इस उम्र में भी उनका हौसला बुलंद है। कोरोना के कारण लगाए गए प्रतिबंधों के कारण वे घर में हैं और ऐसे में अपने दिन गाने गाकर बिता रहे हैं। कुक की बेटी कैरोल एन स्मिथ ने अपने पिता को गाते देखा और उनका वीडियो बना लिया। उनका यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है और जमकर तारीफ बटोर रहा है। फेसबुक पर पोस्ट इस वीडियो को देखने के बाद लोग नाउम्मीदी के इस दौर में उन्हें उम्मीद जगाने वाला शख्स बता रहे हैं। कई लोगों ने उन्हें प्रेरणास्रोत बताया है। साथ ही लिखा है कि जब वे इस उम्र में इस महामारी का मुकाबला करने के लिए तैयार हैं तो हम क्यों नहीं।

अंगूठे की मदद से पता चलेगी मरीज की पूरी जानकारी

तलाशी राह ▶ एमएचआरडी के सहयोग से एचबीटीयू ने बनाई डिवाइस

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के जरिये होगी बीमारी की जांच, मिलेगी दवा और इलाज

शशांक शेखर भारद्वाज, कानपुर

प्राथमिक, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सरकारी व निजी अस्पतालों में मरीजों की जानकारी के लिए मशक्कत नहीं करनी होगी। बस अंगूठा लगाते या आधार नंबर बताते ही चंद सेकंड में बीमारी, जांच, दवा और इलाज की पूरी जानकारी मिल जाएगी। यह संभव होगा हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी (एचबीटीयू) की नई डिवाइस से। इसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) के सहयोग से तैयार किया जा रहा है।

एचबीटीयू को यह प्रोजेक्ट भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) कानपुर की ओर से मिला है। इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के प्रो. कृष्ण राज के नेतृत्व में छात्र इस पर काम कर रहे हैं। डिवाइस तैयार हो चुकी है। अब इसमें सॉफ्टवेयर अपलोड किए जा रहे हैं। प्रो. कृष्ण राज के मुताबिक, यह डिवाइस आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) पर काम करेगी। इसका सारा डाटा इंटरनेट पर अपलोड होगा। इसकी सहायता से रोगियों की डिटेल लिखने की जरूरत नहीं होगी। केवल कैम स्कैनर का इस्तेमाल किया जाएगा। इसी के माध्यम से रोगी का पर्चा, जांच रिपोर्ट, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड की रिपोर्ट स्कैन की जाएगी। एक बार मरीज का डाटा अपलोड होने के बाद कहीं से भी इसे देखा जा सकेगा। इसके लिए मरीज को सिर्फ अंगूठा लगाने, आधार नंबर बताने या फिर पर्चा स्कैन कराने की जरूरत होगी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से सात लाख रुपये का प्रोजेक्ट है। इसकी आधी राशि संस्थान को मिल गई है। शोध को पेटेंट भी कराया जाएगा। बाजार में इसकी अनुमानित कीमत 3500 से 4000 रुपये होगी।

> डिवाइस की बदौलत अंगूठे के निशान और आधार नंबर से रोगियों के इलाज की पूरी डिटेल सामने आ जाएगी। ऐसे में फाइल खोने पर भी पूरा रिकॉर्ड सुरक्षित रहेगा।
> **- प्रो. कृष्ण राज, एचओडी, इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग, एचबीटीयू**

आंकड़े जुटाने में आएगी काम : डिवाइस की सहायता से यह पता भी लगाया जा सकेगा कि किस मोहल्ले में कौन-सी बीमारी से पीड़ित अधिक लोग हैं। डिवाइस का आकार टीवी के सेट टॉप बॉक्स के बराबर है। इसमें अंगूठा लगाने के लिए स्क्रीन भी लगी रहेगी। डिवाइस में चेहरा पहचानने वाला सॉफ्टवेयर अपलोड किए जाने की भी योजना है। इसके लिए एक बार रोगी की फोटो अपलोड करनी होगी। दोबारा दिखाने के लिए मरीज को अपना चेहरा स्कैन करना करना होगा।

अंडमान के आदिवासियों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं मानवविज्ञानी

कोलकाता, प्रेट्र : कोविड-19 के छह मामलों का पता चलने के बाद प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं। इन द्वीपों पर रहने वाले विलुप्त हो रहे पांच आदिवासी समूहों को लेकर भय पैदा हो गया है। न्यून इम्यूनिटी होने के कारण डर है कि यदि ये कोरोना की चपेट में आ गए तो उनका अस्तित्व मिट जाएगा।

एक साथ इन आदिवासियों की कुल संख्या 1000 से भी कम है। ये बाहरी दुनिया से अलग-थलग हैं और इनका इम्यूनिटी स्तर अत्यंत न्यून है। मानवविज्ञानियों को द्वीप समूह में महामारी फैलने पर इनके उन्मूलन का डर है। अंडमान एवं निकोबार 572 द्वीपों का समूह है। बंगाल की खाड़ी और अंडमान सागर स्थित इन द्वीपों में से केवल 37 पर ही लोग निवास करते हैं। कोरोना वायरस से संक्रमण के सभी छह मामले पोर्ट ब्लेयर क्षेत्र में पाए गए हैं। केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन ने इन आदिवासियों को कोरोना से संरक्षित रखने के लिए सतर्कता के सभी कदम उठाने का आश्वासन दिया है। लेकिन मानवविज्ञानियों को इस बात की आशंका है कि बाहरी दुनिया से संपर्क में आने से ये संक्रमित हो सकते हैं।

सोशल मीडिया पर ना दें ध्यान, दवाएं लेते रहें

शोध अनुसंधान

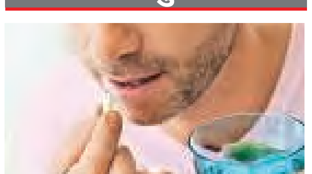

विशेषज्ञों ने कोरोना वायरस महामारी के बीच सोशल मीडिया पर चल रही खबरों से मरीजों को बचने की सलाह दी है। साथ ही दिल और किडनी के मरीजों को अपनी दवाएं लेते रहने को कहा है। सोशल मीडिया पर इस तरह की खबरें चल रही हैं कि ब्लडप्रेशर के जो मरीज एआरबी दवा का सेवन करते हैं उन्हें इस वायरस से गंभीर खतरा है। बता दें कि हाई ब्लड प्रेशर और किडनी संबंधी बीमारियों में इस दवा को लेने की सलाह दी जाती है। लेकिन हाइपरटेंशन जर्नल में प्रकाशित एक लेख में शोधकर्ताओं ने कहा है कि इस संबंध में उन्हें कोई साक्ष्य नहीं मिला है। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ मियामी के मरे एपस्टीन ने कहा, सभी ज्ञात आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एआरबी से किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं है। कुछ खबरों में कहा गया था कि जो मरीज एआरबी का सेवन कर रहे हैं उन्हें कोविड-19 होने का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए डॉक्टर की सलाह के आधार पर इसे बंद कर देना चाहिए।

अनियमित नींद बढ़ाती है हृदय रोग का खतरा

शोधकर्ताओं का कहना है कि अनियमित नींद से हृदय रोग का खतरा बढ़ सकता है। नेचर जर्नल में प्रकाशित शोध में वैज्ञानिकों ने अच्छी सेहत के लिए कम से कम सात घंटे की नींद की सिफारिश की है। उनका कहना है कि पर्याप्त नींद नहीं मिलने के कारण कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इनमें डायबिटीज, स्ट्रोक और हृदय रोग शामिल हैं। शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में सोने के नियमित समय में 30 मिनट की देरी का रेस्टिंग हार्ट रेट (आरएचआर) से संबंध पाया। नॉट्रे डेम यूनिवर्सिटी में कार्यरत भारतवंशी शोधकर्ता नीतेश चावला ने कहा, हम पहले से ही जानते हैं कि आरएचआर बढ़ने का मतलब हृदय की सेहत को खतरा है। - आइएएनएस

स्क्रीन शॉट

नन्हे यश ने कहा–कोरोना से अमिताभ बचा सकते हैं

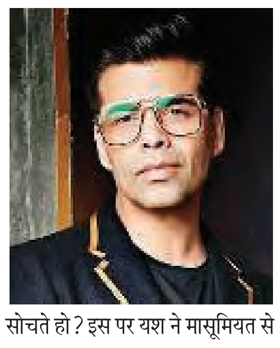

होम क्वारंटाइन कर रहे करण जौहर ने अपने इंस्टाग्राम पर बताया है कि वह कौन है, जो कोरोना वायरस को दूर कर सकता है। दरअसल, करण ने अपने बेटे यश का एक वीडियो साझा किया है, जिसमें यश ने बताया है कि कोरोना को कौन दूर कर सकता है। वीडियो में करण ने जब यश से पूछा कि कोरोना वायरस बहुत बुरा है और इसे कैसे दूर रखा जाए, आप क्या सोचते हो? इस पर यश ने मासूमियत से जवाब देते हुए कहा अमिताभ बच्चन। इस पर करण ने पूछा कि क्या वह उन्हें कॉल पर विनती करके इसे दूर करने के लिए कह सकते है? इस पर यश ने पहले तो मना किया, फिर इस शर्त पर हां कहा कि कॉल करना, लेकिन अमिताभ बच्चन मेरे कमरे में नही आएंगे। यह सुनकर करण काफी अचंभित हो गए। अमिताभ ने खबर लिखे जाने तक इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी, लेकिन उनके बेटे अभिषेक ने जवाब देते हुए लिखा कि यह बहुत क्यूट है। आलिया भट्ट और अनुष्का शर्मा ने इस पर दिल की इमोजी बनाई है।

अथिया शेट्टी, डायना पेंटी, ताहिरा कश्यप, वाणी कपूर, अंगद बेदी ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। निर्देशक सिद्धार्थ मल्होत्रा ने लिखा, 'अमिताभ बच्चन के प्रशंसक यश की बातों से इत्तेफाक रखेंगे कि यह जादू अमिताभ बच्चन ही हमारे लिए कर सकते हैं। काश यह सच हो जाए।'

बचपन में मां घर में खेलने नहीं देती थीं : टाइगर श्रॉफ

रविवार को टाइगर श्रॉफ ने सोशल मीडिया पर व्यायाम करते हुए अपना वीडियो साझा किया। इस वीडियो में वह शर्टलेस होकर विभिन्न तरीके के व्यायाम कर रहे हैं और अपने घर में ही फुटबॉल खेलने का मजा ले रहे हैं। इस वीडियो के साथ उन्होंने लिखा, 'जब हम बच्चे थे तो मां हमें घर में नहीं खेलने देती थीं। सोचिए, अब मां के पास कोई विकल्प ही नहीं है। मुझे टैग करके आप भी बताइए कि आप खुद को सुरक्षित और मजबूत बनाए रखने के लिए क्या-क्या कर रहे हैं?' टाइगर के इस वीडियो पर सुजैन खान, पुनीत मल्होत्रा और कोरियोग्राफर बॉस्को मार्टिस समेत कई लोगों ने टिप्पणी की। निर्देशक पुनीत मल्होत्रा ने खिलखिलाते हुए इमोजी के साथ लिखा, 'बस अब कोई वर्कआउट वीडियो नहीं डाल सकता।' हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'बागी 3' में टाइगर के एक्शन की काफी तारीफ हुई। उनकी डेब्यू फिल्म 'हीरोपंती' के सीक्वल बनने की भी घोषणा हो चुकी है।

अनन्या पांडे बोलीं, एक्टर न बनतीं तो डॉक्टर होती

फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2' से अभिनय में कदम रखने वाली अनन्या पांडे अगर एक्टर न बनतीं तो डॉक्टर होतीं। यह बात उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने प्रशंसकों के सवालों का जवाब देते हुए बताई। दरअसल, शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर दस लाख फॉलोवर्स पूरे होने पर उन्होंने अपने प्रशंसकों से सवाल पूछने के लिए कहा था। इसके बाद प्रशंसकों ने अभिनेता चंकी पांडे की बेटी अनन्या से सवालों की झड़ी लगा दी। अगर वह एक्टर न होतीं तो क्या होतीं? एक यूजर के पूछे इस सवाल पर अनन्या ने बताया कि उनके दादा और दादी दोनों डॉक्टर थे और उन्हें भी जीव विज्ञान में दिलचस्पी थी। इसलिए वह डॉक्टर बन सकती थीं। एक अन्य यूजर ने अनन्या से पूछा कि क्वारंटाइन पीरियड खत्म होने के बाद वह क्या करेंगी? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि इसके बाद वह तुरंत काम पर वापस लौटेंगी। बॉलीवुड के पसंदीदा अभिनेता और अभिनेत्री के सवाल पर उन्होंने रणवीर सिंह और करीना का नाम लिखा। इसीतरह अनन्या ने अलग-अलग यूजर्स के कई सवालों के जवाब दिए।

टि्वंकल के ड्राइवर बने अक्षय

हिंदी सिनेमा की ज्यादातर हस्तियों ने अपने घर में काम करने वाले लोगों को छुट्टी पर भेज दिया है। ऐसे में वे अपने घर का काम स्वयं कर रहे हैं। रविवार की सुबह अक्षय कुमार की पत्नी टि्वंकल खन्ना ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया, जिसमें वह मुंबई की सुनसान सड़कों को दिखाती हैं। इसके बाद वह वीडियो में कहती हैं कि पूरी सड़क सूनी है। मेरे पास मेरा चांदनी चौक का ड्राइवर (अक्षय कुमार) है। हम अस्पताल से घर लौट रहे हैं। नहीं, मुझे कोरोना वायरस का संक्रमण नहीं हुआ है, मेरे जैसे लोग और भी कई कारणों से अस्पताल जाते हैं। मेरे पैर के पंजे में चोट है। आप लोगों को भी रविवार की शुभकामनाएं।' इस वीडियो में अक्षय गाड़ी चलाते दिख रहे हैं। संक्रमण से बचने के लिए उन्होंने चेहरे पर मास्क भी लगाया हुआ है।

सुनील ग्रोवर ने अपने किरदारों को पहनाया मास्क

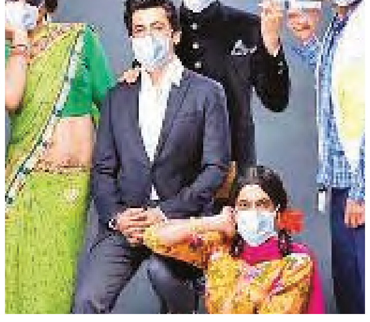

कॉमेडियन और अभिनेता सुनील ग्रोवर ने बेहद ही अलग अंदाज में सुरक्षित रहने का संदेश दे रहे हैं। सुनील एक तस्वीर साझा की है, जिसमें वह अपने निभाए किरदारों को मास्क पहनाकर एक ही फ्रेम में ले आए हैं। तस्वीर में उनके प्रसिद्ध किरदरा गुत्थी, रिंकू भाभी, डॉक्टर गुलाटी और उनके द्वारा निभाया गया अमिताभ बच्चन वाले किरदार नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर पर उनके फैंस प्रतिक्रिया देते हुए उनसे यह पूछते नजर आए कि वह कपिल शर्मा के साथ वापसी कब करेंगे।

जिंदगी से लेता हूं सीख : केके मेनन

सात सवाल

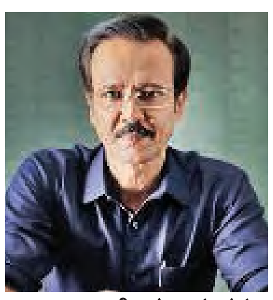

इस साल अभिनेता केके मेनन फिल्म इंडस्ट्री में अपने करियर के 25 साल पूरे कर रहे हैं। 'सरकार', 'ब्लैक फ्राइडे', 'हैदर', 'कारपोरेट', 'एबीसीडी', 'द गाजी अटैक' जैसी दर्जनों फिल्मों में यादगार किरदार निभाने वाले मेनन इन दिनों हॉट स्टार स्पेशल्स पर रिलीज वेब शो 'स्पेशल ऑप्स' में रॉ अधिकारी हिम्मत सिंह की भूमिका में सराहना बटोर रहे हैं। उनसे बातचीत:

- **इस वक्त समय का सदुपयोग कैसे कर रहे हैं ?**

- मैं अनावश्यक अपना समय बर्बाद नहीं करता। लॉकडाउन होने से मुझ पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। मैं वैसे भी काम के बाद अपना समय परिवार के साथ ही बिताता हूं। मैं खाली समय का सदुपयोग किताबें पढ़ने, टीवी, सिनेमा या वेब शो देखने में व्यतीत करता हूं। हमें फिलहाल घर में रहना चाहिए। यही संक्रमण से बचाव का तरीका है। यह वक्त भी गुजर जाएगा।

- **आप 'द गाजी अटैक' में नौसेना अधिकारी, 'रहस्य' में सीबीआइ ऑफिसर जैसे किरदार निभा चुके हैं। अब रॉ अधिकारी बने हैं। इस दुनिया को कितना समझ पाए हैं?**

- मैं हमेशा कहता हूं कि मैं किरदार को नहीं, इंसान को जीता हूं। रोल सीमित होते हैं। वह सीबीआइ, रॉ, वकील या पुलिस में कार्यरत होगा। मेरी दिलचस्पी उस इंसान की कहानी में होती है।

- **'बेबी' के बाद 'स्पेशल ऑप्स' के लिए नीरज पांडे के साथ जुड़ने की क्या कहानी रही?**

- वेब शो के निर्देशक नीरज पांडे और शिवम नायक से मैं पिछले 17 वर्षों से परिचित हूं। उन्हें टीवी के दौर से जानता हूं। तब उस पर उम्दा कार्यक्रम आया करते थे। आपस में हमारी बातचीत होती रहती थी। उन्होंने जब कहा कि करना है तो दोराय जैसी कोई बात नहीं थी। 'स्पेशल ऑप्स' की स्क्रिप्ट का पहला पन्ना पढ़ने के बाद उसके आठों एपिसोड्स को मैं एकसाथ पढ़ गया, वह इतना रोचक था।

- **तकनीक के कितने जानकार हैं?**

- दिमागी तौर पर बहुत तेज हूं, लेकिन तकनीक के स्तर पर ज्यादा जानकार नहीं हूं। अगर मेरी किसी चीज में दिलचस्पी है तो उसकी गहराई में जा सकता हूं। मेरी दिलचस्पी पढ़ने और चीजों को ऑब्जर्व करने में ज्यादा है। 'स्पेशल ऑप्स' में नई तकनीक का प्रयोग हुआ। वह सब एक्टिंग का हिस्सा था।

- **क्या कभी किसी किरदार की कोई खास बात अपने जीवन में अपनानी चाही?**

- मैं जिंदगी से सीख लेता हूं। अपने मूल्यों और संस्कारों से लेता हूं। सिनेमा एक कला है। उसका अपना दायरा है। उसमें से आपको जो लगता है कि आपकी जिंदगी और बेहतरी के लिए आवश्यक है, उसे लेना चाहिए। किरदार को निभाते समय मेरी कोशिश होती है कि उसमें मैं कहीं से भी नजर न आऊं। उसके लिए आपको प्रयास करना पड़ता है। अपने ईगो को खत्म करके काम करना पड़ता है।

- **आप इंडस्ट्री में 25 साल का सफर पूरा कर रहे हैं। आपको पहला ब्रेक कैसे मिला था?**

- मैं नौ साल की उम्र से थियेटर करता आ रहा हूं। वह अलग समानांतर जिंदगी थी। उसके बाद मैंने अपनी शिक्षा पूरी की। कुछ समय एडवरटाइजिंग में भी काम किया। फिर लगा कि बिना प्रयास आपके अंदर खास क्राफ्ट है। यानी आपका स्वधर्म वही है। मैंने सब कुछ छोड़कर थियेटर करना शुरू किया। सबसे पहले नसीरुद्दीन शाह के थियेटर ग्रुप मॉटली के साथ काम किया था। उनके साथ 'जूलियस सीजर' नाटक किया था। उसके बाद मकरंद देशपांडे के साथ थियेटर किया। अगर आपमें प्रतिभा है, तो राहें बनती जाती हैं।

- **करियर की शुरुआत में आपकी फिल्म चली नहीं थी। खुद को कैसे प्रोत्साहित किया था?**

- जाहिर तौर पर उस समय निराशा काफी हुई थी। उस समय बड़ी सीख मिली कि ज्यादा फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। उसके बाद से मैं जब तक काम करता हूं, जुनूनी रहता हूं।

स्मिता श्रीवास्तव

मनोज मुंतशिर ने लिखी प्रार्थना– मालिक संभाल लेना

देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के वक्त जब पूरा देश भविष्य के बारे में सोच रहा था, उस समय 'कबीर सिंह', 'केसरी' जैसी हिट फिल्मों के गीतकार मनोज मुंतशिर ने प्रार्थना की रचना की थी। उन्होंने बताया, 'जिस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा की थी, उस समय मैं और कंपोजर रोचक कोहली एकसाथ थे। यह सुनकर थोड़ी घबराहट हुई। उस समय मेरे मुंह से निकला- मालिक संभाल लेना। उसी समय रोचक ने गिटार उठाया और म्यूजिक कंपोज करना शुरू कर दिया। हमने एक प्रार्थना बनाई। यह किसी फिल्म या कॉमर्शियल उपयोग के लिए नहीं है। यह मानवता को ध्यान में रखकर लिखी गई है। लॉकडाउन के चलते उसे हम शूट नहीं कर सकते। उस गाने को मैं अपने यूट्यूब चैनल पर दो-तीन दिन में रिलीज करूंगा। उस गाने के बोल हैं- मालिक संभाल लेना। वह दुआ के तौर पर है। यह मैंने दिल से लिखा है।'

बता दें कि मनोज मुंतशिर ने सिर्फ गीत लिखे हैं बल्कि उन्होंने फिल्म बाहुबली के लिए संवाद भी लिखे हैं।

मैं सदा 'कमसुखन' स्वभाव का रहा हूं : बिग बी

इन दिनों जब लोग कोरोना पीड़ितों की मदद के लिए सामने आकर दान कर रहे हैं, अमिताभ बच्चन ने रविवार को अपनी एक पुरानी तस्वीर साझा करते हुए एक कविता साझा की है। इस कविता के बोल हैं, 'एक ने दिया और कह दिया कि दिया, दूसरे ने दिया और कहा नहीं, कि दिया। दूसरी श्रेणी में ही रहने दो मुझे ए प्रियजन, जिसे मिला वो क्या जाने किसने दिया, जानें बस उसका करुण क्रंदन। इन हालात में और क्या कहा जाए, जो जाने मुझे, जाने, मैं तो सदा स्वभाव से ही रहा हूं कमसुखन।' इसके जरिए उनका इशारा शायद दान देने को लेकर उठ रहे सवालों की तरफ था।

हाथों में बंदूक लिए नजर आईं तापसी पन्नू

तापसी पन्नू ने सोशल मीडिया पर अपने बचपन की तस्वीर साझा की है। लाल रंग का स्वेटर पहने तापसी ने हाथों में खिलौने वाली बंदूक थाम रखी है। उनके गालों पर लाल रंग लगा हुआ है। इस तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा कि याद नहीं आ रहा है कि यह तस्वीर कब की है, लेकिन बचपन से ही मैं कुछ कर दिखाना चाहती थी।